मुमुक्षु

लेखक

ऐलक श्री सिद्धांतसागर महाराज

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

सम्पादकद्वय

ब्र. सुदेशचंद 'कोठिया खुरई

ब्र. जिनेश मलैया

प्रधान सम्पादक – संस्कार सागर मासिक पत्रिका, इन्दौर

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : **श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर**

सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)

फोन :- 0731- 2571851, 4003506,

मोबाईल : 8989505108, 7879965740, 8717924109

- **मुमुक्षु**
- लेखक – **ऐलकश्री सिद्धांत सागर महाराज**
- सम्पादक – ब्र. सुदेशचंद 'कोठिया' खुरई (कार्यकारी सम्पादक – संस्कार सागर, ख़ुरई)

  ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान सम्पादक – संस्कार सागर, इन्दौर)
- प्रथम आवृति – 1100
- संस्करण : 2016

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के प्रिय शिष्य

ऐलकश्री सिद्धांतसागरजी महाराज के २५ वें (रजत) दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में

प्रकाशक : **श्री दिगंबर जैन युवक संघ**

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर

सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)

फोन :- 2571851, मो.: 8989505108,

प्राप्ति स्थान

1) **श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर**
विद्यासागर नगर, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास
ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.) 0731-2571851, मो.: 8989505108, 7879965740, 8717924109

2) **ब्र. जयकुमार 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य**
पं. मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट-स्ट
पुष्प भवन – टीकमगढ़ (म.प्र.) फोन : 07683-243138

3) **अरिहंत साहित्य सदन**
4, रेनबो विहार, मेरठ रोड़, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
फोन : 0131-2433257

4) **गजेन्द्र ग्रंथमाला**
2578, धर्मपुरा, दिल्ली-6,
मोबाईल : 098100-35356

5) **अमर ग्रंथमाला**
श्री दि. जैन उदासीन आश्रम, एम.जी. रोड़, इन्दौर
फोन : 094254-78846

न्यौछावर राशि : 25/-

मुद्रक : **मोदी प्रिन्टर्स,** 76-बी पोलोग्राउण्ड इस्टेट, पत्रिका प्रेस के पीछे, इंदौर
(मो. 98260-16543)

✻सर्वाधिकार सुरक्षित प्रकाशकाधीन

सम्पादकीय

कथा साहित्य ने समाज पर सदैव अपना गहरा प्रभाव डाला है। जैन दर्शन में प्रथमानुयोग विपुल कथा साहित्य से भरा हुआ है। कथा या कहानी के माध्यम से जहाँ समाज में संस्कार निर्माण का कार्य किया जा सकता है। वहीं दूर करने के लिए यह विधा उपयोगी सिद्ध होती है। ऐलक सिद्धांतसागर जी ने लगभग 200 से अधिक कहानियाँ लिखकर निर्विकार कथा साहित्य का आरम्भ किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह समाज में व्याप्त अन्ध विश्वास, व्यसन और नकारात्मक सोच को दूर करने में अपनी अहम भूमिका निर्वाहित करेगा। कहानियों की भाषा शैली सरल और सुबोध है। तथा प्राञ्जल शैली में लिखी गई कहानियाँ पाठक का बाँधें रखने में बहुत सक्षम है। एक बार कोई भी पाठक कहानियों को पढ़ना शुरु करता है तो जब तक कहानी पूर्ण नहीं होती तब तक वह बैचेन रहता है और उसकी जिज्ञासा इस बात की बनी रहती है कि आगे कहानी में क्या होने वाला है।

समाज को दर्पण की तरह मार्गदर्शन देने में ये कहानियाँ पर्याप्त सिद्ध होगी। इन कहानियों के माध्यम से पाप की प्रवृत्ति रुकेगी औ समाज का उद्देश्य दिशामय बनेगा। उच्च उद्देश्य से सृजित यह कहानी संग्रह दिगम्बर जैन युवक संघ के प्रकाशन से प्रकाशित कर हम गौरवान्वित कर रहे हैं । आशा है पाठक इसका पूर्ण लाभ उठायेंगे।

✻ब्र. सुदेश जैन 'खुरई'
(संपादक : संस्कार सागर, इंदौर)

प्रकाशकीय

छोटे-छोटे अबोध बच्चों को सुसंस्कारित करने वाली छोटी-छोटी पर सरल सी कहानियों की कमी सर्वत्र अनुभव की जाती रही है। **प.पू. 105 ऐलक सिद्धांतसागरजी महाराज** ने इस कमी को एक सीमा तक पूर्ण करने के लिए अपनी सद्भावनापूर्ण कलम चलाई है। प्रस्तुत **'कहानी'** संग्रह उन्हीं की लेखनी से उद्भूत छोटी-छोटी पर अत्यंत प्रभावशाली कहानियों का संग्रह है।

सत्-साहित्य प्रकाशन केंद्र श्री दिगंबर जैन युवक संघ, श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर, ए.बी. रोड, इंदौर द्वारा संचालित है जो अपनी लेखन-सम्पादन-प्रकाशन साधना में निरंतर अग्रसर है जिसका गुरुतर कार्यभार हिन्दी के ख्यात विद्वान, साहित्यकार **ब्र. पं. सुदेशजी कोठिया** (पूर्व प्राचार्य, खुरई) निरंतर कुशलतापूर्वक वहन कर रहे हैं।

इस **'सत् साहित्य प्रकाशन केंद्र'** द्वारा अभी तक धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक क्षेत्र की शताधिक पुस्तकों का प्रकाशन-पुनर्प्रकाशन-सम्पादन-लेखन करके समाज के सामने न्यूनतम मूल्य पर प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत **''कहानी संग्रह''** समाज के विभिन्न क्षेत्रों से लगातार आ रही माँग को देखते हुए प्रकाशित किया गया है। हमें आशा एवं विश्वास है कि यह संग्रह बच्चों में सहज ही सुसंस्कार जागृत कर आने वाले समय के लिए श्रेष्ठ, सुयोग्य, सुसंस्कारित श्रावकों की भूमिका के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

❊बा.ब्र. जिनेश मलैया
(प्रधान सम्पादक : संस्कार सागर, इंदौर)

अनुक्रमणिका

- तस्मीना 6
- पंडित जी ! पानी 10
- राख : पिता की 14
- मुमुक्षु 18
- विमल संकल्प 22
- अडिग पूजा 26
- विजय की हार 30
- घासलेट 34
- चेलम्मा 38
- बकरी की गवाही 42
- हत्यारा समधि 46
- पीलिया 50
- गाड़ी छूट गई 54
- तबाही 62
- दौ चौपाई 57
- कहाँ खो गई ममता 61

तस्मीना

बालमोर की चौड़ी सड़के और मोहल्लों नदी का किनारा इस नगर की सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती थी। खरगोन नगर पश्चिमी निमाड़ का सुन्दर नगर था। इस नगर में आदिवासी बहुल होने के बाद भी सभी धर्म और जातियों के लोग आपस में सामंजस्य बैठाकर रहते थे। शनि मंदिर के पास नेहरू चौक नगर का प्रमुख और प्रसिद्ध सार्वजनिक स्थान माना जाता था। यहीं पर अनीस नाम का एक बोहरा मुसलमान रहता है। उन्हीं के सामने एक कमलचंद्र नाम का परिवार भी रहता था। जैन और मुसलमानों के बावजूद भी समांजस्य अच्छा था। एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होते थे। अनीस भाई पूरे मोहल्ले में सेवा भावी माने जाते थे। उनका बड़ा हुआ धंधा तथा व्यस्त होने के बाद भी कभी बाढ़ आ जाये या अधिक ठंड पड़ जाये तो अनीस बस स्टैण्ड पर रुके हुये यात्रियों के लिये भोजन बांटना और गरीब लोगों के लिये जरुरतों की पूर्ति के लिए समान देता था। अनीस को यह कार्य करने में बहुत आनंद आता था।

अनीस गरीब लड़कियों की शादी कराने में भी भरपूर सहायता देता है वह कहता था कि मालिक अपने को देता है उसमें अकेले का हक नहीं है गरीबों की मदद करना सबसे बड़ी इबादत है। वह शादी विवाह कराते समय कौम का भी फर्क नहीं करता था। सबको बराबर मदद देता था। अनीस की एक ही लड़की थी उसका नाम तस्मीना था। वह कमल के घर खूब आती जाती थी। कमल के बेटे संदीप के प्रति उसे बहुत आकर्षण था।

सुबह-सुबह पूरे मोहल्ले में और बालमोर के शहर में एक ही चर्चा चल रही थी अनीस की लड़की और कमल का लड़का भाग गये हैं। पान की दुकानों पर चौराहों पर लोग कह रहे थे वो लड़की इतनी सीधी थी उसकी नजर कभी ऊपर नहीं उठती थी। कोई यह नहीं कह सकता था कि यह लड़की भी ऐसा कर सकेगी। जैन मंदिर

मैं भी तस्मीना के बारे में महिलायें चर्चा कर रही थी। वे कह रही थी कि वो लड़की रोज मंदिर आती थी। कभी हमने संदीप से मिलते देखा नहीं और न ही दोनों को बात करते हुये देखा। वह तस्मीना एक ही बात कहती मुझे जैन धर्म बहुत अच्छा लगता है। जैन धर्म में खान-पान बड़ा साफ सुथरा है किसी भी प्राणी को अनावश्यक तो ठीक आवश्यकता पढ़ने पर भी मारा सताया नहीं जा सकता है। रहम और रहमत दोनों ही चीजें जैन धर्म में खूब मानी जाती है मालिक ने मुझे जैन क्यों नहीं बनाया। इसका मुझे अफसोस है। कभी-कभी बैठी-बैठी जैन शास्त्रों को पढ़ती रहती थी और कहती थी जिस दिन में जैन बन जाऊँगी । उस दिन के बाद कभी उस घर में पैर नहीं रखूंगी। जैन समाज मुझे अपनायेगा या नहीं इसका मुझे हमेशा संदेह रहता है। तस्मीना लड़की तो बहुत अच्छी थी और वह जैन बनने के लिये तड़पती थी अगर वह भागती नहीं तो उसके घर के लोग जाति के लोग कैसे जैन बनने देते पर अगर पकड़ी गई तो उसके घर के लोग दुर्दशा कर देंगे। तो उसे कौन बचायेगा ?

तस्मीना और सन्दीप दोनों भागने के बाद बालमोर में एक बवाल खड़ा हो गया। मस्जिदों के अन्दर चर्चाएं होने लगी की एक खुदा की बन्दी काफिर के साथ भाग जाये ये तो पूरी कौम की तौहीन है। अपनी क्रूरता का परिचय देते हुए नौजवान कह रहे थे न तो रिपोर्ट करो और न थाने जाने की जरूरत है बस इन्हें पकड़ कर दोनों का सर कलम कर दिया जाये। अपनी तालीबानी हरकतों का परिचय देने का प्रयास करने वाले तस्मीना के समाज के जवान लोग सन्दीप के घर पर आवा-जाही करने लगे। जिसे गांव के लोगों और पुलिस ने बड़ी दुर्घटना का संकेत मानते हुये एतिहात के तौर पर पूरी-पूरी सतर्कता बरती। जहाँ मुस्लिम समाज के लौग लामबन्द हो रहे थे वहीं हिन्दू संगठन के लोग भी लामबन्द होने लगे। पूरे नगर में दंगे के हालात बनने लगे। तब पुलिस के बड़े अफसरों ने शांति समिति की बैठक ली और नगर और नगर के समझदार लोगों को बुलाया। थाने में गहमा-गहमी चल रही थी की उसी समय नगर के प्रसिद्ध समझदार लोग कहने लगे की समस्या सुलझाना है या उलझाना है। कानून को अपना काम करने दिया जाय। कानून को हाथ में न लेकर नगर के अमन-चैन को बिगाड़ने वाले लोगों के साथ शक्ति बरती जाय। दोनों को पकड़ने के बाद कानून की जो प्रक्रिया है। उसे पूरा करने में कोई अड़ंगा न लगाया जाये। गलती की सजा देने का काम कानून का है और वे करें।

शांति समिति की बैठक के बाद अफवाहों का जो बाजार गरम हो रहा था वह अपने-आप ठंडा हो गया। सब अपने-अपने घर चले गये और प्याले में उठे तूफान की तरह कुछ दिनों बात आई-गई हो गई। नगर का वातावरण अचानक ही बदल गया। सब लोग अपनी उसी दिनचर्या में आ गये जो पहले चल रही थी। कई महीने गुजरने के बाद पुलिस ने दोनों को पकड़ लिया। पकड़ने के बाद सन्दीप और तस्मीना को कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिला न्यायाधीश ने पूछताछ की तो तस्मीना ने बड़े साफ-सुथरे ढंग से कह दिया। हम अपनी रजामंदी से भागे थे और हम सन्दीपर के साथ ही रहना चाहते हैं । साथ ही न्यायालय से अपनी सुरक्षा भी चाहते हैं। मजिस्ट्रेट ने सुरक्षा की पूर्ण-रुपेण व्यवस्था देते हुये कोर्ट मैरिज की अनुमति दे दी और कुछ

दिन बाद संदीप की शादी तस्मीना से हो गई। तस्मीना के सामने कई समस्याएं थी। अब उसे सन्दीप के घर में प्रवेश मिलेगा या नहीं यह बहुत बड़ी समस्या थी। कुछ वर्ष इधर उधर बिताने के बाद वातावरण सामान्य हुआ और सन्दीप की माँ विद्या ने सन्दीप को घर आने को कह दिया पर सन्दीप ने अकेले नहीं आने की शर्त रखी और कहा साथ में तस्मीना भी आयेगी। आखिरकार सन्दीप और तस्मीना को उनके माता-पिता ने अनुमति दे दी। तब तस्मीना ने सास विद्यावति से कहा -मम्मी मैं जिस दिन भागी थी उसी दिन मैंने तय कर लिया था कि मैं कभी भी उस देरी पर पैर नहीं रखूँगी जहाँ से मैं भागी थी। मुझे छुटकारा और नई जिंदगी भी मिली। जिस घर में मुझे करुणामयी, दयामय धर्म दिखने को न मिले उस घर में मैं नहीं जा सकती हूँ। अहिंसा से मुझे इतना लगाव हो गया था कि मैंने अपनी जिंदगी का फैसला यही किया था की जो भी अहिंसा में अपना पूरा विश्वास रखेगा उसी के साथ अपनी जिंदगी बिताऊँगी। जो अहिंसा परअपने यकीन को पूरी तरह रखता हो उसी के साथ रहूँगी। मेरा विश्वास और सपना बस शाकाहार में ही है।

विद्यावती की आँखों में आँसू छलक गये वह मन ही मन सोचने लगी कि मैं जिससे घृणा करती थी और यह सोच बैठी ती कि मैं इसको कभी अपने घर में पैर नहीं रखने दूँगी। उसके विचार सुनकर दंग रह गई परन्तु एकदम किसी को अपनाना भी अच्छा नहीं होता है। थोड़ी परीक्षा तो करनी ही पड़ेगी और थोड़ा मर्यादा बोध भी कराना पड़ेगा। इसको सोचने के लिये मजबूर भी होना पड़ेगा। परन्तु सच्ची अहिंसा की भावना की इतनीपरीक्षा न ली जाये की परेशान होकर वह अहिंसा का पथ ही छोड़ दे। हाँ यह भी जरुरी है कि कुम्हार की तरह घड़ा गढ़ना मेरी जबावदारी है। किसी को भी मात्र सबक सिखलाने से नहीं बदला जा सकता है अपितु प्यार देकर जरुर बदला जा सकता है। प्रेम और सहानुभूति जीवन की वह कोशिश है जिसके माध्यम से संस्कारों का सचमुच में निर्माण हो सकता है। भय के आधार पर संस्कारों का निर्माण कभी नहीं हो सकता है। मैं इस चीज से बहुत बचूँगी की कभी अपशब्दों का प्रयोग न हो एवं कितनी भी बड़ी से बड़ी गलतियां कर दे उन्हें हिदायत के साथ माफ कर दूंगी। मैं एक अच्छी सास बनने की कोशिश करूँगी। कभी भी किसी के सामने उसे नहीं डाँटूगी। सद्‌भावना के आगे सब झुक जाते हैं। भावनाओं का दबाव में खूब समझती हूँ। पवित्र भावना, पवित्रता को ही पैदा करती है और अपवित्र भावना, पवित्रता के नाटक करने से पवित्रता नहीं ला पाती है।

यह सब जब विद्यावती सोच रही थी की तस्मीना की दृष्टि विद्यावती की आँखों पर गई। आँखों पर सजलता देखकर तस्मीना बहुत भावुक हो गई। वह फबक-फबक कर रोने लगी। विद्यावती के पैरों में सिर रखकर रोने लगी। अपने आँसुओं से सास के पैर धोने लगी। दोनों हाथों से विद्यावती ने थामा और कहा - यह क्या हो गया। ऐसा क्या हो गया तू फफक-फफक कर रो रही है। यह घर आँसू बहाने के लिये नहीं है अपितु मुस्कानों और खुशियों की फिजा बढ़ाने वाला होगा। इस घर की चारों दिवारों की खिड़कियां हमेशा खुला रहा करेगी और अबोहवा के लिये पूरा छत होगा। तुम किसी पिंजड़े की चिड़िया नहीं हो बस मर्यादा की हल्की रेखा तुम्हारी नजर में रहे।

तस्मीना का नाम बदल गया और तस्मीना ने परिवार को बखूबी समझा। रोज मंदिर जाना और व्रत उपवास करना। साधुओं की संगति में बैठकर जैन धर्म के मर्म को समझा साथ ही विद्यावती के साथ क्रमबद्ध स्वाध्याय करके जैन दर्शन के हृदय को समझ लिया। मीना के नाम पर नगर में अपनी पहचान बनाई तथा तत्व-ज्ञान-प्राप्त करके अपने आचरण की पवित्रता से सचमुच में एक ऐसी पहचान पैदा की जिससे लोग कहने लगे की यदि किसी को जीवन बदलना हो तो तस्मीना की तरह अपनी जिंदगी को बदले।

तस्मीना ने संदीप से भी कुछ वायदे किये थे और संदीप ने भी तस्मीना से वायदा किया था। सन्दीप को अपने अपमान की बदला लेने की हमेशा छटपटाहट रहती थी। छोटी-छोटी बातों में सन्दीप हमेशा किसी से भी उलझ जाता था और अपनी उग्रता का प्रदर्शन करता था। खर्चों को लेकर सन्दीप को सदैव उसकी माँ समझाइश देती रहती थी। सन्दीप अपनी माँ को कन्जूस समझता था और वह कहता की मेरी माँ मेरे विकास पर बेड़िया बांधना चाहती है। वह चाहती है कि मैं सादगी से रहूँ पर समय के साथ तो चलना ही पड़ेगा। अपने उग्र स्वभाव के कारण एक दिन सन्दीप अपनी माँ से उलझ गया। तू तड़ाक पर उतर आया तब तस्मीना ने अपनी बात कहते हुये कहा कि मुझे यह बेअदब बर्ताव कभी भी बर्दाश्त नहीं होगा। आप जो कुछ बोल रहे हैं उस पर सोचिये। माँ कि भावनाओं को समझने की कोशिश करिये। यदि आप ऐसा व्यवहार करते हैं तो आप माँ को तो दुखी करेंगे ही पर उससे ज्यादा मुझे दुःखी करेंगे। आपने एक वायदा किया था की तस्मीना मैं तेरे आँसू कभी बहने नहीं दूँगा। आप अपना वादा पूरा करिये और मेरे आँसू बहने से रोकिये।

सन्दीप सकते में आ गया और विद्यावती बहुत भावुक हो गई। कितना सुंदर सोच जिसके बारे में मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी। हर पत्नी अपने पति का पक्ष लेती है लेकिन तस्मीना समन्वय करने के साथ-साथ अपने पति को सीख देने का वादा भी रखती है। पर ऊपर से उसने यही बात कही -मीना तुम हमारे माँ और बेटे के बीच में मत आओ। हम लोगों की कोई खास बात नहीं है। सिर्फ समझ का अंतर है। जिस दिन इसको यह समझ में आ जायेगा की बचत कैसे की जा सकती है और अपव्यय को कैसे रोका जा सकता है। उस दिन यह बहस खत्म हो जायेगी। अभी मैं इसे भले ही कंजूस नजर आ रही हूँ पर कुछ दिन बाद यह समझेगा कि माँ की सोच कितनी सही है। तस्मीना ने मीना बनकर सन्दीप को भी कई बुराइयों से बचाकर एक अच्छा इंसान बना दिया और परिवार सुख-समृद्धि और शांति से हमेशा हरा-भरा रहा। उसकी सूझ-बूझ को सबने खूब सराहा।

❍❍❍❍❍

पंडितजी ! पानी

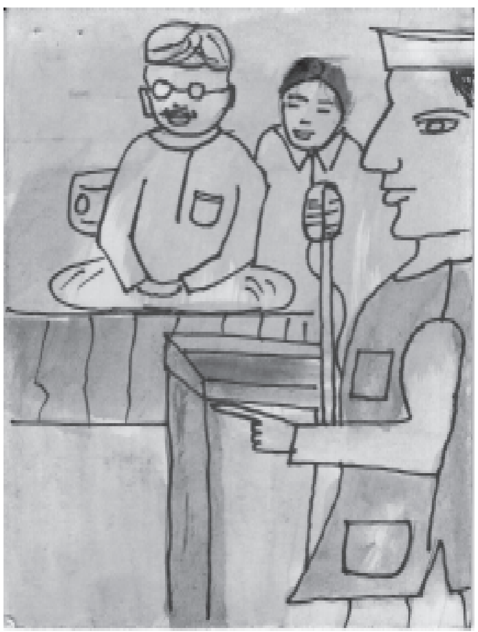

मन्द मन्द पवन बह रही थी, चारों ओर मधुर बैन्डों की ध्वनि गूँज रही थी। बहुत बड़ा पंडाल लगा हुआ था। गम्भीर नदी के तट पर बने विशाल जिनालयों के शिखरों पर लगी पताकायें ऐसे नाच रही थी जैसे कि मानों ऋतुराज के स्वागत में आतुर होकर भावुक हो गई हों। बड़े मैदान के चारों तरफ भले ही रेत का साम्राज्य था परन्तु बसन्त के प्रभाव से अछूता नहीं था। सुगन्धित पवन फूलों की रंगीली पंक्तियां और कोयल की मीठी सी कूक बसन्त ऋतु के प्रभाव को सूचित कर रही थी। शांतिवीर नगर का दृश्य बड़ा ही मनभावन लग रहा था। भजनों की चलने वाली कैसेटों से वातावरण धर्ममय बना हुआथा। पंच कल्याणक उत्सव ब्रह्मचारी बाबा सूरजमलजी के निर्देशन में चल रहा था। जनसैलाब पंच कल्याणक का साक्षी बनने के लिये हर रोज उमड़ रहा था। मुनिगणों का समूह अपनी चर्या के माध्यम से दिगम्बर साधु की विशिष्टताओं को प्रकट कर रहा था। जहाँ देखों वहीं संत-साधुओं को घेरे हुये श्रावकों का समूह तत्व-चर्चा में निमग्न था। एक समूह में महिलाओं का प्रतिनिधित्व देखा जा रहा था। उनके बीच पाटे पर बैठी तीन आर्यिकाएं थी जो नख से शिख तक श्वेत साड़ी में शोभायमान हो रही थी। उनके एक तरफ पिच्छी जो मयूर पंख की थी और दूसरी तरफ कमण्डल रखा था वे महिलाओं को उलझे-सुलझे प्रश्नों का समाधान बहुत ही शांत होकर तर्कपूर्ण दे रही थी। एक माताजी बता रही थी की जल-गालन विधि करते समय कपड़े के हाथ नहीं लगाना चाहिए अपितु कपड़े का तिकोना बनाकर पात्र में भीतर डालते हुये फिर पानी छानने वाले वस्त्र को फैला देना चाहिये।

अनछने पानी की एक बून्द में 36450 त्रस कायिक जीव होते हैं जिस श्रोत से पानी निकाला जाय, बिलछानी उसी श्रोत में डाली जाय। बिलछानी भी ऊपर से न छोड़ी जाय अपितु कड़े वाली बाल्टी से ही कुएं के भीतर बिल्कुल नीचे से डाली जाय। यह सब चर्चा जब चल रही थी तभी लोगों की दौड़ मुख्य द्वार की तरफ लग गई। मंच से भी घोषणा हो गई। गोहाटी के दानवीर सेठ चान्दमल पाण्डया मुख्य द्वार पर आने वाले हैं । सभी लोगों से निवेदन है कि उनके स्वागत के लिये पांडाल के मुख्य द्वार पर पहुँचे। चान्दमल पाण्डया उस समय के धनी-मानी श्रेष्ठी थे। उस समय भी आसाम में वायु-यान की सेवायें उनके द्वारा ही संचालित होती थी।

लगभग 65 साल की आयु वाले चान्दमलजी के सिर पर राजस्थानी पगड़ी धोती और कुर्ता तथा मोटे फ्रेम का चश्मा जो सुनहरे रंग का था तथा एक चमचमाती कार के फाटक खोलकर उनके ड्राइवर ने उन्हें बाहर निकाला। पुष्प मालाओं से गरम जोशी के साथ उनका स्वागत सम्मान किया गया। जुलूस के रूप में शान्तिवीर नगर उन्हें लाया गया। जिनालयों के दर्शन बहुत ही भक्ति भाव से चान्दमलजी पाण्डया ने किये एवं संत-साधुओं के दर्शन वन्दन करने के बाद वे परम पूज्य आचार्य धर्म सागरजी के पास धर्मचर्चा हेतु बैठ गये। तीर्थरक्षा के ज्वलन्त मुद्दों पर चर्चा चल पड़ी। इसी तारतम्य में पाण्डयाजी ने कहा - आचार्य श्री क्या श्वेताम्बर-दिगम्बर एक नहीं हो सकते ? तब आचार्यश्री ने संक्षिप्त में उत्तर देते हुये कहा - सेठजी ऐसा है कि हम कपड़े पहन नहीं सकते हैं और वे कपड़े उतार नहीं सकते हैं तब कैसे दोनों एक हो जायें यह बात आप ही सोंचे। अन्य कई मुद्दों पर गहन चर्चाएं हुई। विद्वानों के बीच और श्रेष्ठ चांदमलजी पाण्डया के अनेक विचार विमर्श के बाद शांतिवीर नगर में होने वाले शास्त्री परिषद के सम्मेलन के सभापति श्री चान्दमल पाण्डया अपने भाषण की पूरी तैयारी से आये थे।

घड़ी के तीन बजते ही शास्त्री परिषद का अधिवेशन आचार्य धर्मसागरजी के सान्निध्य में एवं श्रेष्ठी चांदमलजी पाण्डया के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ। चांदमल पाण्डया जब मंच पर आ रहे थे और सभी लोग जोर-जोर से जयकारा लगा रहे थे तभी अचानक चांदमलजी पाण्डया ने पीछे मुड़ कर देखा उन्हें क़ोई नजर नहीं आया तो सफेद टोपी लगाये और धोती कुर्तापहने एक पंडितजी उन्हें उचित प्रतीत हुये। उन्होंने बड़े रौब के साथ कहा - अरे मुझे बड़े जोर से प्यास लगी है, मेरा नौकर तो कहीं नजर आ ही नहीं रहा है। चलो अच्छा पंडितजी एक काम करो, तुम मुझे एक ग्लास पानी ला कर दो। सेठ जी की इस रौबदार बात को सुनकर पंडित जी ने क्या समझा, क्या नहीं समझा यह बात तो दूर थी किन्तु सबसे ज्यादा वहाँ बैठे शास्त्री परिषद के महामंत्री पंडित बाबूलाल जमादार को चुभ गई और उन्होंने उस समय तो कुछ नहीं बोला - सिर्फ सेठ की तरफ अपनी अंसतोष की दृष्टि डाली। पंडितजी ने अपना बड़ा मन मसोस कर पानी लाने की कोशिश की परन्तु वे बड़े असमंजस में फँस गये एक ओर तो सेठजी की आज्ञा और दूसरी ओर जमादारजी की असंतोषमयी

दृष्टि और चेहरे पर स्वाभिमान का गहरापन क्या करूँ? क्या न करूँ ? यही दुविधा में वे ठिठक कर रह गये। बहुत सारे विद्वान पंडित बाबूलाल जमादार के लाल हुये चेहरे को देख रहे थे तो कभी वे सेठजी की रौबदार मुद्रा को देखकर कुछ बोलना चाह कर भी मौन धारण कर रहे थे। जैसे-तैसे बात टल गई या यूं कहें मंच की ओर आगे बढ़ गई। सभी लोग धीरे-धीरे रेंगते-रेंगते मंच तक पहुँच गये और मंच पर सेठजी को पानी की व्यवस्था भी करा दी गई पर पंडित बाबूलाल जमादार के दिल और दिमाग में एक ही बात चुभती रही पंडितजी ! पानी।

वे मंच पर बैठे-बैठे सोचने लगे क्या धनाढ्यों के द्वारा सरस्वती पुत्रों के साथ ऐसा ही व्यवहार होगा यही लक्ष्मी पुत्रों के द्वारा विद्वानों को दास समझा जायेगा या फिर उनके साथ नौकरों जैसा व्यवहार किया जायेगा तो जिनवाणी के सच कहने का साहस विद्वान कैसे जुटायेगा ? इसकी चर्चा शास्त्रि परिषद में कैसे की जाये, क्योंकि शास्त्रि परिषद के आने वाले प्रस्तावों की सूची पहले से ही निश्चित की गई है। यदि अलग से प्रस्ताव लाया जायेगा तो सभापति स्वयं सेठजी है। वे इस पर रोक लगा सकते हैं। परन्तु बेधड़क शेर जैसे दहाड़ने वाले बाबू जमादारजी ने सारी शंकाये-कुशंकाये एक तरफ अलग रख दी और यह तय कर लिया कि दूसरे के कंधों पर रखकर बन्दूक चलाने वाले बहादुर नहीं होते हैं। जो खुद के कंधों पर खुद की बंदूक रखकर चलाते हैं वे ही बहादुर होतेहैं। मुझे तो स्वागत भाषण करना ही है तो क्यों न स्वागत भाषण में ही यह विषय लाया जाये। थोड़ी ही देर बाद मंच का संचालन करने वाले ज्ञानचन्द खन्दुका ने मंगलाचरण हेतु जयपुर कोकिला -काला के लिये आमंत्रित कर दिया और कोकिला-काला के मंगलाचरण से श्रोताओं में स्तब्धता छा गई। मंगलाचरण की ध्वनि और मधुर तान में सभी खो गये। अगर कोई खोया नहीं था तो वे थे मात्र पंडित बाबूलाल जमादार।

शास्त्रि परिषद का अधिवेशन मिनट दर मिनट ऊँचाइयों को छूता जा रहा था। स्वागत-सत्कार की औपचारिकताऐं पूरी होने के बाद स्वागत भाषण का क्रम शुरु हो गया था। संचालक महोदय ने कहा हमारे देश के मूर्धन्य विद्वान गज केसरी वाचस्पति एवं जिनवाणी के प्रभावक विद्वान श्री बाबूलालजी जमादार अब अपना स्वागत भाषण देने की अनुकम्पा करेंगे।

उपस्थित पूज्यपाद आचार्यश्री के चरणों में कोटी नमोस्तु एवं साधुगणों के पावन चरण कमलों में मेरा सविनय नमोस्तु। आर्यिका माताजी के पाद कमलों में सादर वन्दामी। श्रीमन्त सेठ चांदमलजी पाण्डया के सम्मान में सादर जय जिनेन्द्र। उपस्थित शास्त्रि परिषद के परम सम्मानीय सरस्वती पुत्रों के लिये कोटी-कोटी अभिवादन उपस्थित साधर्मी जनों के लिये यथायोग्य अभिनन्दन। आज का समय सर्वाधिक संकट और विपत्तिमय नजर आ रहा है। एक और एकान्तवादियों द्वारा श्रमण संस्कृति के मूल अभिप्रायों से भटकाकर

जिनेन्द्र वाणी की उपेक्षा की जा रही है तथा धन-बल के आधार पर कई विद्वानों को प्रलोभन देकर एकान्तवाद के प्रचार में लाया जा रहा है। एक तथाकथित साधक षड़यंत्रपूर्वक सपनों क़ो आधार बनाकर अपने आप को तीर्थंकर घोषित करने की पूर्ण कोशिश में लगा हुआ है। मुझे इस बात का दुःख नहीं है की कोई तीर्थंकर घोषित हो जायेगा तो क्या होगा ?अपितु धन और संसाधनों के दम पर यदि तीर्थंकर सिद्ध करने में व्यक्ति सफल हो जाता है तो धनाढ्यों को अपने चंगुल में फँसा कर कोई भी साधक अपने आप को तीर्थंकर घोषित कर देगा तथा जिनेन्द्र देव की वाणी का अपलाप करके साधकों को भ्रमित ही करेगा। प्रकारान्तर से यह श्रद्धा की चोरी ही होगी। वह दिन भी दूर नहीं जब लोग भविष्य तीर्थंकर के रूप में खुद की मूर्ति और खुद का मन्दिर बनवाकर तथाकथित तीर्थंकर के रूप में खुद की ही पूजा करवाने लगेंगे। इससे तीर्थंकर का पद मजाक बन जायेगा। ऐसी मान्यताओं के चलते दिगम्बर धर्म के लिये एक सबसे बड़ी चुनौती होगी। दूसरी ओर आज हमारे सामने एक और चुनौती तथा मजबूरी है कि लक्ष्मी पुत्र विद्वानों स़े सभी प्रकार की सेवा लेना चाहते हैं चाहे उनके योग्य हो अथवा अयोग्य। अपने थोड़े से वेतन में उनसे पूजन, मंदिर की सफाई, चन्दा इकट्ठा करना तथा पाठशाला चलाना और यहाँ तक की छोटे-बड़े अपने घर के भी काम सेठिया लोग करा लिया करते हैं। इसका प्रमाण मुझे आज की घटना से मिला। हमारे आज के अधिवेशन के सभापतिजी ने ही एक विद्वान से बड़ी रौबदार भाषा में कहा - मुझे प्यास लगी है पंडितजी पानी। जब एक विद्वान से पानी पीने के लिये मंगवाया जायेगा तो वह विद्वान क्या अपने स्वाभिमान की रक्षा कर पायेगा ? क्या वह अपने आप को एक चपरासी, अर्दली से कुछ अधिक बड़ा मान पायेगा ? ऐसी स्थिति में जिनवाणी का सेवक क्या निर्भीकता से सत्य का उद्घाटन कर पायेगा या फिर सेठियों की चापलूसी करके अपने उदर पोषण की जुगाड़ में ल़गकर किसी भी पन्थ या एकान्तवादियों के हाथ का खिलौना नहीं बन जायेगा। आवश्यकता बहुत गम्भीरता से चिन्तन करने की है। आखिर आज तक किसी विद्वान ने अपने बेटे को पंडित क्यों नहीं बनाया ? इन सब बातों का उत्तर यही होगा की विद्वान की आजीविका की समस्या और उसके स्वाभिमान पर लगने वाली चोट को देखकर कोई भी पंडित अपने बेटे को पंडित नहीं बनाना चाहता है। जिस धर्म संस्कृति में उपदेशक विद्वानों का आभाव हो जाता है वह धर्म और संस्कृति कभी भी लुप्त हो सकती है।

जमादारजी के जोशीले स्वागत भाषण के बाद सारी जनता में सन्नाटा खींच गया। चान्दमलजी पाण्डया को समझने में देर नहीं लगी और उन्होंने खड़े होकर अपने भाषण में ही अपनी गलती का उल्लेख स्वयं ही कर दिया तथा समस्त विद्वानों से हाथ जोड़ कर क्षमा माँग ली तथा कहा की मेरी जैसी गलती अब कोई भी लक्ष्मी पुत्र नहीं करेगा ऐसी आशा तथा विश्वास में करता हूँ। पंडित बाबूलालजी जमादार ने जो मुझे सचेत किया उस पर मुझे थोड़ा भी अफसोस नहीं है। मैं चाहूँगा भविष्य में भी इस तरह के होने वाले हादसे पर विद्वान अपनी मर्यादा बनाकर रखेंगे। चान्दमलजी के भाषण के बाद सभी विद्वानों ने जमादारजी की खूब सराहना की तथा उनके लिये सबने एक सजग स्वाभिमानी विद्वान बनाने की चाहत रखने वाला जागरूक पहरेदार कहा।

राख : पिता की

मोहन अपने गाँव का बुद्धिजीवी युवक माना जाता था। आज के दिन मोहन को अपने पिता की मृत्यु का दुःख तो था ही परन्तु उससे ज्यादा दुःख उसके भाई संजय के द्वारा उसे पिता के अंतिम संस्कार से वंचित रखना था। मोहन के पिता गंभीरमल सोनी का नाम पूरे बीनागंज में चलता था। मोहन को बड़े दुलार के साथ गंभीरमल ने पाला था। अपनी जिंदगी की गाढ़ी कमाई मोहन और संजय के बीच अपने जीते जी बराबर चार-हिस्सों में बाँट दी थी। मोहन श्मशानघाट गया और अपने पिता की चिता के सामने खड़ा हो गया। वह सोचने लगा मैं अपने पिता गंभीरमल का सबसे बड़ा बेटा, मुखाग्नि देने का हक तो मेरा था पर समाज के लोग और रिश्तेदारों ने संजय की जिद के आगे घुटने टेक दिये। मेरे पिता ने मुझे जितना दिया वह कम नहीं था। पिताजी और माँ की संपत्ति पर मेरा भी तो अधिकार था। मैंने यदि इस संपत्ति की बँटवारें की बात रखी तो संजय ने यह कहा की - मैंने ही पिता की सेवा की है इसलिये पिताजी ने भी संजय की बात को नकारा नहीं और न ही यह कहा की मात्र सेवा करने से मेरी संपत्ति का एकाधिकार अकेला संजय नहीं बन सकता है न तो मेरे पास संपत्ति की कमी है और न संजय के पास पर दुनिया की विडम्बना तो देखो संपत्ति के पीछे सारे रिश्ते बिगड़ जाते हैं। आज मैं अपने पिता को मुखाग्नि देने से वंचित कर दिया गया। मेरे साथ यह अन्याय.. जिसको मैं कैसे सहन करूँ ? मैं भी कुछ ऐसा करके दिखाऊँगा जिसे सब याद रखेंगे। मेरी हालात जो संजय ने बनाई है वह उसकी व्यवहार कुशलता का परिणाम है।

यह बात सच है मेरे अक्खड़ व्यवहार के कारण सब लोग मुझसे चिढ़ते हैं। मैं किसी को सलामी नहीं ठोंकता है। मैं किसी के पैर नहीं छूता हूँ इसलिये मेरे रिश्तेदार और गांव वाले मुझसे चिढ़ते हैं। मेरे भाई

संजय का दोहरा चरित्र सबको अच्छा लगता है। उसका छल-कपट सबको रिझा लेता। उसका मीठा बोलना, उसकी समझदारी का प्रतीक बन जाता है इसलिये लोग उसे सामाजिक और मुझे असामाजिक कहते हैं। मैं किसी से डरता नहीं हूँ किसी की जायदाद नहीं हड़पता, गरीबों को सताता नहीं हूँ। शत-प्रतिशत साफ-सुथरा काम करता हूँ जिसका लेता हूँ उसका समय पर चुकाता हूँ। फिर भी मुझे मेरे रिश्तेदार, सगे-संबंधी हासिये पर डाले हुये हैं। वे कहते हैं - तुमसे बात करना पसन्द नहीं करते क्योंकि तुम्हारे पास अपशब्दों का भंडार है। तुम्हारी भाषा में कड़वाहट है। तुम किसी से प्रेम से बोलना नहीं जानते हों। मैंने जब अपने मामा से कहा की मुखाग्नि तो मैं ही दूंगा, क्योंकि मैं बड़ा बेटा हूँ तो उन्होंने कहा - तुम्हारे पिता की वसीयत में लिखा गया है कि मेरी शवयात्रा में मोहन सम्मलित नहीं होगा और न ही मोहन मुझे मुखाग्नि देगा। मैंने कितना ही कहा की मामाजी लिखने से कुछ नहीं होता है। यदि गुस्सा में पिता लिख भी गये हों तो आगे का व्यवहार मुझे और संजय को ही तो चलाना है। मैं अपनी सारी भूल-चूकों को मानने को तैयार था। क्षमा भी माँगने को तैयार था परन्तु क्षमा तो पिताजी से माँगी जाती, संजय से तो नहीं। संजय मेरे से तो छोटा है। मुझे छोटे भाई से क्षमा माँगना तो कोई उचित बात नहीं हुई। रिश्तेदारों को संजय पर दबाव बनाना था। वह मुझसे क्षमा माँगता। क्या सारी गलती मेरी थी। संजय की कोई गलती नहीं थी। क्या सारा अभद्र व्यवहार मैंने ही किया था। ठीक है एक बार में मान भी लेता हूँ कि मैंने पिताजी के साथ, माँ के साथ रिश्तेदारों के साथ, गाँववालों के साथ सभी के साथ बुरा बर्ताव किया, लेकिन इस बुरे बर्ताव के प्रति मेरे गुस्से को भड़काने वाले आखिर वही संजय है न, जो सबका चहेता बना फिरता है। मीठा बोलता है। नेताओं जैसे हाथ-जोड़े सबकी आवभगत करता है। होंठों पर नकली मुस्कान फैलाये रखता है। दुकान पर आने वाले ग्राहकों को बातों ही बातों में उलझा लेता है। सारे ग्राहक कहते हैं कि संजय भैया खूब रियायत देते हैं और एक मोहन है जो पैसा बोल दिया उससे कुछ कम भी नहीं करता है। अरे जब मैं किसी भी चीज के 100/- रूपये बताऊंगा तो 95/- रुपये कैसे कह सकता हूँ और वह संजय सौ रूपये के दो सौ रूपये बताता है और वह धीरे से कहता है चलो देखो आपके और हमारे पीढ़ियों के सम्बन्ध है। ये सम्बन्ध पैसों के लिये नहीं बिगाड़े जा सकते तुम एक काम करो डेढ़ सौ रूपये दे दो, सोचों वह कितना ईमानदार है। फिर भी लोग उसे ही अच्छा कहते हैं। खैर, कोई बात नहीं मेरी किस्मत में यही सब लिखा होगा। नसीब तो सबका अलग-अलग ही होता है।

मोहन अपने विगत की उधेड़बुन करते हुए पिता की चिता से उठने वाली लपटों को देख कर सोच रहा था कि अगर ये लपटें न होती तो पिता के चरणों से लिपट कर सुबकते हुए कह देता कि हमारे और आपके

संबंध बिगड़ने के लिए आप तो कहीं से भी दोषी नहीं है। अगर दोषी आप मुझे मानते हैं तो मैं आप से अपनी सारी गलतियों की क्षमा माँगता हूँ। परन्तु अब आप अंतिम समय में एक मेरी इच्छा भी पूरी कर दें कि इस प्रकरण में मोहन कितना दोषी है। आप अब अंतिम श्वास ले चुके हो। मेरी जिंदगी के निर्माता आप ही हो। आप की बदौलत ही हम आज एक अच्छे मुकाम से लगे हुए हैं। आपकी कृपा से ही अच्छा रहने को मकान, कारोबार भी अच्छा चलता है। कार, सोना-चाँदी भी है। आपकी बहू भी सुशील और सुंदर है। आपके पोता-पोती भी योग्य और सुशिक्षित हैं। मेरी जिंदगी में किसी बात की कोई भी कमी नहीं है। यदि पितृदेव और मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाते तो मैं दुनिया का सबसे बड़ा खुशनसीब इंसान होता।

मोहन को ऐसा लग रहा था जैसे सम्राट अशोक युद्धोपरान्त युद्ध भूमि पर अकेले ही खड़े-खड़े आँसू बहाता था ठीक वैसे ही पिता की चिता के समक्ष अकेले वह खड़ा-खड़ा आँसू बहा रहा है। सम्राट अशोक की तरह मैं भी अपने अपराध को स्वीकार कर रहा हूँ। मैं अपने पिता का द्रोही कुपुत्र हूँ, परन्तु कभी तो पिताजी आपने मुझे ऐसा माना होगा जैसे कोई खोटा सिक्का आड़े वक्त पर काम आ सकता था। खैर, आप पिताजी थे आपका हर फैसला मुझे शिरोधार्य होगा।

लगभग 1 घंटा तक मोहन एक ही आसन पर खड़ा रहा। वह कभी अंतरभूत होकर विचार मग्न हो जाता था तो कभी पिता की चिता देखकर उनका चित्र ही उसे दिखाई देने लगता था वही सफेद कुर्त्ता वही सफेद धोती, सिर पर टोपी भारी भरकर शरीर, हिटलर जैसी मूँछे, बुलंद गम्भीर आवाज तक उसकी एकाग्रता के कारण सुनाई देने लगी थी। जब मोहन खड़े-खड़े थक गया तो वहीं बैठ गया। एक पत्थर पर बैठकर वृक्ष के तने के सहारे टिक गया था। आँखे बन्द करके अपनी माँ के बारे में सोचने लगा। माँ ने मुझे जितना दिया, शायद किसी ने मुझे उतना प्यार दिया हो। काश ! आज मेरी माँ होती तो जरूर मुझसे यही कहती - मोहन तू अपनी जिद से खुद परेशान है। अपनी आदत से लाचार है। तूने अपनी खुदी मे इतना मस्त मत रहा कर। झगड़ा वैर-विरोध में क्या रखा है ? तू भाई से विरोध करके क्या पा लेगा ? इस मूर्खता को छोड़ अपने भाई से शत्रुता मत कर अपनी वाणी में मिठास ला।

यह सब माँ मुझे कितना समझाती थी पर मेरी समझ में एक भी बात कहाँ आई। मैं तो अपनी ममतामयी करुणामयी देवी सी माँ पर झल्लायाही तो हूँ। मेरी माँ ने मेरे और संजय के झगडे को लेकर कितने आँसू बहाये हैं। हाय मैं कितना बदनसीह हो गया था जो मेरे भाई के झगड़े को लेकर माता-पिता कितने दुखी रहे। मेरी समझ ही कुछ ऐसी थी कि मुझे हमेशा ऐसा ही लगा कि माता पिता पक्षपात करते और संजय को ही ठीक कहते थे। मेरी पत्नी अंजू भी तो मेरा ही पक्ष लेती है। वह भी तो यही कहती है कि आप गलत

नहीं है। अपने हक के लिए लड़ना कोई बुरी बात नहीं है परन्तु नीति-न्याय के लिए तो महाभारत हुआ खैर जो भी हो अब तो बस यही करना होगा कि भले ही अपने पिता के लिए मुखाग्नि नहीं दे पाया किन्तु उनकी अस्थिभस्मी तो मैं ही इलाहाबाद ले कर जाऊंगा ताकि पिता श्री गम्भीरमल सोनी की आत्मा को शांति मिलेगी कि मेरे बेटे ने भी कुछ अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया।

मोहन उठा और घर की ओर चल पड़ा। रात वह बिस्तर पर करवट बदलता रहा और उसने अपनी पूरी दिल की बात अंजू से कह दी। अंजू ने भी मोहन की योजना का पूरा समर्थन किया। योजना अनुसार मोहन लगभग चार बजे अपना बिस्तर छोड़कर सीधा श्मशान घाट पहुंचा। पिता की भस्मी और अस्थियों को चुन कर कलश में भर कर चाँचोड़ा रेलवे स्टेशन चला गया। ट्रेन बीना की पकड़कर इलाहाबाद की ओर रवाना हो गयी।

गंभीरमल सोनी के घर आठ बजे सुबह से सभी मेहमान एवं समाज जाति तथा नगर के लोग एकत्रित हो रहे थे। ठीक नौ बजे मुंडन कराकर संजय के साथ सभी श्मशान घाट की ओर समूह में चल पड़े। जब वे श्मशान घाट पहुँचे और गंभीरमल सोनी की चिता के पास पहुँचकर देखा तो वहाँ न राख थी और न अस्थियाँ। सब लोग कहने लगे आज तक ऐसा नहीं हुआ। किसी की कोई भस्मी या अस्थियाँ ले जाये। यह सब किसकी करतूत हो सकती है। अनुमान लगाया जाने लगा। आखिर संजय को शंका एकमात्र अपने भाई मोहन पर ही गई। एक मेहमान ने मोहन से मोबाईल द्वारा सम्पर्क किया तो मोहन ने कहा वहीं देखों में एक पत्र छोड़ आया हूँ। उसमें सब कुछ लिख दिया आप लोग उसे पढ़ लो मैं तो अभी बाहर हूँ और मोहन ने फोन काट दिया और स्विच ऑफ कर दिया।

सभी को यह मोहन का गलत व्यवहार लगा। सभी ने परामर्श करके सीधे पुलिस स्टेशन जाना तय किया और पिता की राख चोरी जाने की रिपोर्ट डाल दी। एफआईआर दर्ज होने के बाद जाँच आगे बढ़ी और पता लगा। एक पत्र भी मिला और मोहन ही अस्थियों और भस्मी को ले गया तब लोग कहने लगे मोहन ने तो नहले पे दहला दे दिया। पुलिस ने कहा - हम कौन सी धारा लगाये। यह समझ में नहीं आ रहा है। वह भी तो पिता की राख ले गया है। उसने क्या गलत किया ?

❍❍❍❍❍

मुमुक्षु

राजस्थान की दक्षिण सीमा पर आशापुरी नाम का एक सुन्दर सा नगर है। उस नगर के बीचोबीच तीन हवेलियों भी हैं। इन हवेलियों में नगर के श्रेष्ठिगण अपना निवास बनाये हुये हैं। इन्हीं श्रेष्ठियों में एक सौभाग्यमल नाम के भी धनी–मानी सेठ का नाम परोपकारी, सेवाभावी के रूप में सम्पूर्ण क्षेत्र में विख्यात था। ऊँचा कद, गोरा बदन, शरीर में तेज की झलक चारों और अपनी प्रभा बिखेरने वाले सौभाग्यमलजी सब ओर से सुखी थे। धन–धान्य से सम्पन्न परिवार की अनुकूलता शरीर से स्वस्थ एवं धर्म की लगन उनकी सुख–समृद्धि का आधार था। सौभाग्यमल जब अपनी उम्र के चालीस वर्ष पूरे कर चुके थे तब नगर के जन–जन में एक ही चर्चा का विषय रहा करता था की वंश कैसे चलेगा, और प्रायः महिलाओं में इस विषय को लेकर आपसी चर्चाये अवश्य हुआ करती थी। सेठ सौभाग्यमल भी कुछ दिन से इस विषय को लेकर चिंतित रहने लगे थे। वैसे तो वे अनेक देवताओं की मनोतियां करके थक चुके थे। लेकिन सफलता कहीं से कहीं तक नहीं मिल पाई थी। गण्डा–ताबीज, ओझा–पंडा सबके प्रयोग के बाद आखिरी एक उपाय और था कि किसी भी समय सम्पूर्ण तीर्थों की यात्रा की जाय और सौभाग्यमल तीर्थों पर निकल पड़े थे। तीर्थ–यात्रा करते करते गिरनार यात्रा के बाद वे सोनगढ़ भी पहुंचे। उन्होंने वहां कहा – यदि मेरे पुत्र की प्राप्ति होती है तो मैं यहां हर साल आऊंगा। साथ ही दस कमरों का निर्माण भी कराऊंगा। संयोग की बात है की कुछ किस्मत ने पलटा खाया और यात्रा के बाद उनकी सेठानी श्रीमति ने एक पुत्र को जन्म दिया पुत्र का नामकरण भी अपने श्रद्धा के केन्द्र

एक विद्वान की सलाह से मुमुक्षु निश्चित किया। मुमुक्षु अपनी बाल क्रीडाओं और मनमोहक नटखटों के आधार पर शैशवकाल में ही नगर भर का चहेता बनकर सबके दुलार का केन्द्र बन गया था। दूज के चाँद की तरह मुमुक्षु अपना विकास करने लगा था। मुमुक्षु की शिक्षा प्रारंभ हो चुकी थी। जब मुमुक्षु विद्यालय में पढ़ने जाने जाता था। तो बच्चे उसे **'छु छु'** कहके चिढ़ाया करते थे तो वह रोते–रोते अपने पिताजी से अपने नाम को बदलने की बात कहा करता था और उसके पिताजी सदैव समझा बुझा कर कहते थे कि बेटा यह नाम खराब नहीं है इसके बदलने की तू बिल्कुल भी मत सोचना और धीरे–धीरे मुमुक्षु ने अपनी अवस्था के पड़ाव पार करते हुये यौवन अवस्था पर पहुँच चुका था।

आशापुरी नगर में एक दिन अप्रत्याशित सी घटना घटी। कभी कोई सोच भी नहीं सकता था की इस नगर में कभी कोई मुनिराज भी सेठ की इच्छा के बिना आयेंगे लेकिन एक कीर्तिसागर मुनि आशापुरी में आ गये। सेठ सौभाग्यमल उन मुनि महाराज के आने से न तो खुश हुये और और न ही उत्साहित अपितु उदासीन भाव से अपने नगर की बदनामी न हो इसलिए उनके आहार आदि की व्यवस्था में लग गये थे। कीर्तिसागरजी मुनि बहुत ही प्रभावशाली थे और अध्यात्म की अद्वितीय मूर्ति थे। उनका प्रभाव नगर के सभी वर्गों पर बहुत गहरा पड़ा। नगर के सभी लोग उनके प्रवचन सुनने नियमित आने लगे थे। मुमुक्षु भी अपने पिताजी के रोकने के बाद भी कई बार उनका समागम करता था। समागम में कुछ दिन तो वह सिर्फ दर्शक बनकर बैठा रहा और अपनी छिद्रान्वेशी दृष्टि से मुनि महाराज की चर्या देखता रहा क्योंकि उसे कई वर्ष तक जयपुर के शिविर में भाग लेने का अनुभव था और वहां उसे यह पाठ पढ़ाया जाता था की पंचम काल में कोई भी भाव लिंगी मुनि नहीं होते हैं जो भी होते हैं वे सिर्फ नग्नता का प्रदर्शन करते हैं। इसलिये मुनियों के चक्कर में हमें नहीं पड़ना चाहिये। मुमुक्षु उसी विचारधारा के साथ हमेशा महाराजजी के पास आया करता था। इसलिये वह कभी कुछ न बोलते हुये अपनी संदेही आँखों से सब कुछ मात्र देखा करता था।

आज कुछ उधेड़बुन के बाद मुमुक्षु ने तय किया सचमुच में आज तो मुनि महाराजजी से कुछ चर्चा करूँगा। गुनगुनी धूप में बिछे हुये तखत पर मुनिश्री अपने स्वाध्याय की तैयारी में बैठे हुये थे की उसी समय मुमुक्षु उनके ठीक सामने बैठ गया और उसने अपना प्रश्न पूछ ही डाला।

महाराजश्री मुझे आत्मा की अनुभूति कैसे होगी ? कीर्तिसागरमुनि महाराज जी ने मनोविनोद की मुद्रा में कहा की आपको आत्मा का अनुभूति नहीं हो सकती है। मुनि महाराजजी की यह बात सुन कर कुछ उखड़ते हुये से मुमुक्षु ने कहा क्यों महाराज जी मैंने ऐसा कौन सा पाप किया है जो मुझे आत्मा की अनुभूति नहीं हो सकती है तब मुनिश्री ने बड़ी गम्भीरता से कहा कि पहले यह बताओं आत्मानुभूति किस उपयोग के साथ होती है। मुनिश्री इस प्रश्न का उत्तर देते हुये मुमुक्षु ने कहा कि आत्मा की अनुभूति जिस समय भी होती है उस

समय शुद्धोपयोग होता है। पुनः मुनिश्री ने मुमुक्षु के सामने प्रश्न रखा की वह शुद्धोपयोग कौन से गुणस्थान में होता है। मुमुक्षु ने अपनी पूर्व अवधारणाओं के अनुसार सुने हुये प्रवचनों के आधार पर कहा कि शुद्धोपयोग चतुर्थ गुणस्थान में अविरत सम्यग्दृष्टि में होता है। मुमुक्षु की बात सुनकर मुनिश्री ने किसी प्रकार विवाद न करते हुये मात्र इतना ही कहा क्या प्रवचनसार, बृहद द्रव्य संग्रह ग्रन्थ मिलेगा। मुमुक्षु ने कहा हाँ अवश्य और वह मुनिश्री के पास से उठकर थोड़ा कहीं ग़या और कुछ मिनिटों में ही लेकर आ गया उसके ह ाथ में दो–तीन ग्रन्थ थे। मुनिश्री ने प्रवचनसार ग्रंथ की नौंवी गाथा खोलकर मुमुक्षु के सामने रख दी और कहा इसे पढ़ लीजिये। मुमुक्षु ने पूरा पढ़ने के बाद कहा मुनिश्री इसमें लिखा है की पहले गुणस्थान से तीसरे गुणस्थान तक अशुभ उपयोग होता है। चौथे से छठवें तक शुभ उपयोग और शुद्ध उपयोग सातवें गुण स्थान से बारहवें तक होता है तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में शुद्ध उपयोग का फल होता है। इतना होने के बाद मुनिश्री ने और देखिये कहते हुये वृहद द्रव्य–संग्रह की पैंतीसवी गाथा खोलते हुए मुमुक्षु को धीरे से आगे बढ़ा दी। कुछ देर तक पढ़ने के बाद मुमुक्षु ने आश्चर्य के साथ कहा की मुनिश्री इसमें भी यही की यही बात है। तब मुनि कीर्तिसागरजी ने कहा – भइया असंयम की अवस्था में यदि गृहस्थ के शुद्ध उपयोग हो जाय तो गृहस्थ अवस्था में केवलज्ञान भी हो जायेगा ऐसी स्थिति में गुणस्थान मात्र पांच ही रह जायेंगे। तब मुमुक्षु ने कहा मुनिश्री यदि चौथे गुणस्थान में शुद्ध उपयोग नहीं होता है और हम मानते हैं तो निश्चित तौर पर निश्चयाभाषी हो जायेंगे और यदि शुद्धोपयोग चौथे गुणस्थान में होता है और हम नहीं मानते हैं तो व्यवहारा भाषी, मिथ्यादृष्टि हो जायेंगे तो मुनिश्री ने कहा भइया आप सच कह रहे हैं इसलिये तुम आगम के परिप्रेक्ष्य में इसका निर्णय जरुर करना लेकिन एक बात ध्यान करना जो कुछ भी निर्णय करो उसमें मूल ग्रन्थ को आधार बनाना। अनुवादों और पक्षपाती विद्वानों के प्रवचनों के आधार पर कोई निर्णय नहीं लेना एवं आचार्य प्रणीत ग्रंथों को ही आधार बनाना। मुमुक्षु ने कहा निश्चित तौर पर महाराज जी मैं इस विषय में दूध का दूध और पानी का पानी करूँगा अब मेरी आँख खुल चुकी है अभी तक आँख बन्द कर ही विद्वानों की बात विश्वास करता था। अब तत्व निर्णय आपके मार्गदर्शन में करूँगा ।

यह चर्चा जब चल रही थी और आखिरी पड़ाव पर पहुँच रही थी तब मुनिश्री ने पूछा – भइया आपका नाम क्या है तब मुमुक्षु ने कहा महाराज जी नाम तो मेरा बड़ा अपटपटा है पर अध्यात्ममय है। मेरे पिताजी ने न जाने क्यों मेरा नाम मुमुक्षु रखा। इसी बीच में मुनिश्री ने कहा – क्या आप इस मुमुक्षु का अर्थ जानते हैं ? क्या आप मुमुक्षु हैं ? तब मुमुक्षु ने बड़े ही तर्क भाषा में कहा महाराज जी जो मोक्ष की इच्छा रखें वह मुमुक्षु है। क्या आप मुमुक्षु नहीं है ? तब मुनिश्री ने कहा बेटे में मुमुक्षु तो हूं पर वो मुमुक्षु नहीं हूँ जो सम्यग्दृष्टि के भोग निर्जरा के कारण मानते हैं । जो द्रव्य के त्रिकालिक शुद्ध मानते हैं जो पर्याय को सर्वथा द्रव्य से अलग मानते हैं, निमित्त को अकिंचितकर मानते हों ऐसा मुमुक्षु मैं नहीं हूँ। बेटे में पुण्य को सर्वथा हेय मानने तथा सराग चारित्र को

बिना प्राप्त किये ही हेय मानने वाला मुमुक्षु नहीं हूँ। मैं व्यवहार का सर्वथा झूठा या असत्य मानने वाला मुमुक्षु नहीं हूँ। क्रमबद्ध पर्याय का हर स्थान पर उपयोग करने वाला मुमुक्षु नहीं हूँ। यह सच है कि मात्र मोक्ष की इच्छा करने से मोक्ष नहीं मिलता है अपितु सम्यकदर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र को जीवन में उतारने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मुमुक्षु ने महाराज जी की बात काटते हुये कहा की मुनिश्री आपकी बात में दम बहुत है पर में क्रिया काण्डक़ी अपेक्षा अध्यात्म को महत्व देता हूँ क्योंकि चारित्र ग्रहण नहीं किया जाता है अपितु अपने आप आ जाता है। मुनिश्री ने कहा – देखो, मुमुक्षु में विवाद करने में विश्वास नहीं करता हूँ और न ही आपको अध्यात्म की प्राथमिकता के लिये भी मैं मना नहीं करता हूँ किन्तु अध्यात्म की चर्चा जब तक चरणानुयोग सापेक्ष नहीं होगी तब तक वह भटकाने के लिये पर्याप्त होगी। चारित्र के बिना सम्यक्त्व अथवा अध्यात्म बोरी में बन्द बीज के समान है उन बीजों में अंकुरण तो जैसे खेत में डालने के बाद ही होता है। ठीक उसी तरह अध्यात्म और सम्यक्त्व की सार्थकता चारित्र से होती है। मुमुक्षु ने कहा – महाराजजी आपसे मुझे नई दिशा मिली है। अब मैं आज्ञा चाहता हूँ। मुमुक्षु ने मुनिश्री से विदा ली और वह अपने घर पहुँचा। नित्य कार्य करते करते कब शाम हो गई उसे मालूम नहीं चला और वह अपने बिस्तर पर पहुंच गया पर उसके आँखों में नींद नहीं आ रही थी। वह मुनिश्री की चर्चा पर ही चिंतन करता रहा। सचमुच में मुनिश्री की बातों में सच है और ठोस आधार। उसने नींद नहीं आने पर कई ग्रन्थों को उलट–पुलट कर ली उसे मिल रहा था की चौथे गुणस्थान में आत्मानुभूती होती है लेकिन मूल ग्रन्थ में नहीं या तो किसी के प्रवचनों में या अनुवाद में। इसी तरह से खोज–बीन करते–करते कई दिन–रात मुमुक्षु ने गुजार दिये। कई विद्वानों के साथ उसकी चर्चा भी हुई। लेकिन उचित आगम अनुकूल कोई भी समाधान नहीं मिला। इस बात पर मुमुक्षु ने सच्चे मुमुक्षु बनने का फैसला कर लिया। अपने जीवन को मोक्ष मार्ग से जोड़ने के लिये संतों का सच्चे हृदय से समागम करने लगा। उसकी इन सब गतिविधियों को देखकर कुछ दकियानुसी, पंथवादी विद्वानों में हड़कम्प सी मच गई और एक एक करके सभी विद्वान मुमुक्षु को समझाने के लिये आशापुरी आने लगे सबसे मुमुक्षु एक ही बात कहता की मैं मात्र मोक्ष की इच्छा करने वाला नहीं अपितु संयम और चारित्र के साथ मोक्ष मार्ग पर चल कर सही मायने में मुमुक्षु बनूंगा। एक विद्वान ने तो यहाँ तक कह दिया कि इस लड़के के ऊपर मुनिश्री ने कुछ कर दिया है यह बात सुनते ही सौभाग्यमल उन विद्वान पर बिफर पडे उन्होंने कहा जब आप लोग कहते हो कि निमित्त कुछ नहीं करता है तो फिर मुनिश्री मेरे बेटे पर कैसे कुछ कर सकेंगे ? अंततोगत्वा मुमुक्षु एक चारित्रवान सद् गृहस्थ बनकर निरन्तर मुनि बनने की भावना भाने लगा तथा आशापुरी में वह आगे होकर प्रतिवर्ष चातुर्मास कराने लगा।

❍❍❍❍❍

विमल संकल्प

ठंडी मस्त हवा चल रही थी। अत्यधिक गरमी से त्रस्त गांव का हर आदमी नींद की शरण में जा चुका था। विमलकी नयनों की नगरी में नींद का आगम नहीं हो रहा था। छत पर अपने पलंग मच्छरदानी लगाकर अकेला ही विमल करवट बदल रहा था। आज उससे कोई यह कहने वाला नहीं था कि क्यों क्या बात है अभी आप सोये नहीं ? अभी तो कोई पेशेंट भी नहीं आया फिर जागने की ऐसी कौन सी चिंता आपको सता रही है।

डॉक्टर का पेशा ही कुछ ऐसा ही होता है कि न जाने कब गाँव के कौन से व्यक्ति आ जाये घंटी की स्विच पर अंगुली रख दें अथवा जोर-जोर से चिल्लाने लगे। यह बहुत बड़ी समस्या होती है। कि लोग प्रायः दिन भर ठीक हो जायेंगे कि उम्मीद लगाकर कोई इलाज नहीं कराते जब रात को जान पर आ पड़ती है तब बस डॉक्टर की अस्पताल याद आने लगती। परन्तुड़ॉक्टर भी सोचता है कि उसे हर दुखी इंसान की सेवा करना चाहिए परन्तु उसका 4-5 घंटे नींद लेने का हक नहीं है। खैर कोई बात नहीं आज तो ऐसी कोई समस्या नहीं आई है। फिर भी नीद नहीं आ रही थी।

ए.बी रोड़ से बहुत दूर होने के बाद भी हर आवाजही करने वाले वाहन की कर्कश आवाज तथा वाहनों में चलने वाले टेप के गाने भी सुनाई देने के बाद भी विमल उन्हें नहीं सुन रहा था। उसकी तो उधेड़ बुन ही कुछ और थी। धुन के पक्के संकल्प पूरा करने की आदत से बहुत कम लोग परिचित थे। परन्तु परिवार के लोग तो बहुत अच्छे से जानते थे कि विमल जो सोच लें उसे हर हालात में पूरा करना उसकी फितरत होती है।

विमल की आँखों में 12 दिस 1986 का वह दृश्य आँखों में तैर रहा था जब आवन के हनुमान मंदिर के पास रेलवे लाइन की थोड़ी सी दूर पर पंडाल लगा हुअ था मंच पर ब्र. परशुराम बाबाजी और युवा ब्रह्मचारी सुमनजी ज्ञायक बैठे हुए थे अपनी गंभीर वाणी से कहा था कि ''धर्म की रक्षा के लिए भूमि और भूमिपति की आवश्यकता होती एवं दानपति और वाग् पति होना भी जरूरी होता है जब तक हमारे समाज को एक साथ बैठने के लिए एक सुंदर भूमि नहीं होगी तब तक समाज संगठित होना संभव नहीं होता है। धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, कार्य-अकार्य, भक्ष्य-अभक्ष्य का बोध जिनालय में आने वाले श्रावक को ही होता है।'' ब्र. सुमनजी ने भी तो अपनी ओजस्वी प्रवचन में कहा था ''मंदिर समाजीकरण का सशक्त माध्यम है। जिनालय से निजालय तक जाने का रास्ता मिलता है। जिनालय के जिनबिम्ब जीवन के दर्पण है जिनमें अपना मुँह देखकर पुण्य कितना है और और हमारे जीवन में पाप कितना है इसका पता लगता है। हमारे दामन में कितने दाग है जीवन का चेहरा कितना उजला और कितना गंदा इसका ज्ञान भी हमें मात्र जिन मंदिर की मूर्तियों से मिलता है।

ज्ञायकजी ने यह भी कहा था ''मनुष्य तीन तरह के होते हैं एक वे जो बाधाएं आने पर भी कार्य को पूरा करते हैं उन्हें मनुष्य कहा जाता है। दूसरे वे पुरुष होते हैं जो अनुकूलता के रहते कार्य पूर्ण कर देते हैं तीसरे प्रकार ऐसे भी आदमी होते हैं जो कार्य का प्रारंभ बड़े ही उत्साह से करते हैं और बस आधा अधूरा कार्य छोड़कर लापता हो जाते हैं ऐसे व्यक्ति निम्न कोटी के माने जाते हैं। बतायें कितने ऐसे व्यक्ति है जो जीवन में मधुरता, उत्साह भरपूर होकर हृदय से संकल्प लेकर कार्य करने हेतु तैय्यार हो जायेगा तो जागो उठो और सत्-संकल्प लेने तैय्यार हो जाओ।''

ब्रह्मचारी जी के इस आह्वान का किस पर क्या प्रभाव पड़ा मुझे ज्ञात है भले ही मैंने हाथ नहीं उठाया था परन्तु पूर्ण संकल्प से आँख बन्द कर प्रभु को साक्षी मान कर मंदिर निर्माण का श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न करने का संकल्प मैंने लिया था इसकी जानकारी जब आचार्य वाचस्पति जी शास्त्री को दी तो उन्होंने कहा - अब तुमने जब संकल्प ले लिया है यह बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काम हैं। इस पवित्र कार्य के संकल्प का मैं भी सहयोगी बनूं ऐसी मुझे समझ और शक्ति बनी रहे। यही प्रार्थना परम प्रभु परमात्मा से करता हूँ। वाचस्पति का आशीर्वाद मेरे साथ हमेशा रहा है। वे धर्म को धर्मात्मा में ही मानते रहे हैं।

मैं अपने कर्त्तव्य से मुख मोड़कर कभी पीछे नहीं परन्तु अब लग रहा है कि मैं अकेला क्या थक तो नहीं जाऊँगा। संकल्प तो मेरे और मैंने अकेले ही लिया था फिर सभी खोजने की बात भी मेरे लिए कमजोर करने के सिवाय और कुछ नहीं है।'' न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम, सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।''

आज मंत्रीजी के प्रस्ताव पर भी विचार करना क्या जरूरी है पूरे गाँव का विरोध उनका तर्क कि यदि जैन मंदिर बनेगा तो पूरा गाँव उजड़ जायेगा। यदि मंत्री चाहते तो गाँव की पंचायत में जबाव दे सकते थे कि जिन गाँवों में जैन मंदिर है तो क्या वे उजड़ गये । इस बात का जबाव देने की अपेक्षा मौन रहे। मेरे पास आकर उन्होंने कहा कि विमल हमें अब मंदिर बनवाने की बात छोड़ देना चाहिए। अब तो हमें जो कमरे में भगवान रखें है उन्हीं को पूजना पड़ेगा क्योंकि गाँव के लोगों को समझाना बहुत मुश्किल है हमारी आँखों के सामने भगवान को उठा ले जायेंगे तो भी हम उनसे कुछ नहीं कह पायेंगे।

उनकी इस निराशा भरी नकारात्मक विचार धारा सुन कर बहुत दुःख हुआ और सोचा कि जब भगवान को ही हमारे सामने से उठा ले जायेंगे और हम कुछ नहीं बोल पायेंगे तो फिर कोई हमारी बहू-बेटी के साथ बदतमीजी, बदसलूकी हमारे सामने करेगा तो फिर क्या हम उसका विरोध करने यदि सक्षम नहीं है तो फिर ऐसी जिंदगी जीने का मकसद क्या है ? इनको कौन समझा सकता है ? क्या करना चाहिए ?

दूसरी एक ओर घटना पर विमल का विचार केन्द्रित हुआ आज ही जब दीवानसिंह अपने घर पर पंडित वाचस्पतिजी को ले जा रहे थे तब वाचास्पति जी अड़ गये कि हम इस रास्ते से नहीं गुजरेंगे क्योंकि जिस कन्या की सगाई होकर बिना विवाह के छूट जाये और अधूरे दस्तूर रह जाये तो उस कन्या के दर्शन नहीं करना चाहिए, ठीक वैसे ही जिस मंदिर का शिलान्यास हो जाये उसे और मंदिर निर्माण में बाधा आ जाये उसे नहीं देखना चाहिए। अतः मैं इस रास्ते से नहीं चल सकता हूँ। तब दीवानसिंह ने कहा था गुरुजी अजय की बात मैं नहीं समझ पा रहा हूँ तब वाचस्पति जी ने कहा - तुम गाँव के लोग कान खोलकर सुन लो यदि इस जैन मंदिर का निर्माण संकल्पित समय की अवधि के भीतर नहीं हुआ तो पूरे गाँव पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा।'' वाचस्पति के इस कथन को दीवानसिंह राजनैतिक और कूटनीतिक का मामला समझते हुआ कहा था - वो एक डॉ. विमल है उसने आपके कान भर दिये । आपको उसकी बातों में नहीं आना । वह पूरे गाँव का वातावरण बिगाड़ रहा है उसने ही गाँव के में आगे होकर जैन मंदिर का शिलान्यास करवाकर हमारे गाँव में आफत का डेरा डलवा दिया है। यह मसला गले की हड्डी बना हुआ है। आप कह रहे यदि जैन मंदिर का निर्माण रूका रहेगा तो गाँव पर विपत्ति का पहाड़ टूटेगा और यदि जैन मंदिर बन जाता है तो जानकारों का कहना है कि गांव उजड़ जायेगा। यह सुनते ही वाचस्पतिजी भड़क उठे और उन्होंने कहा - मेरे सामने मूर्खों जैसी बातें करने से थोड़े तो बाज आओ। अब कभी मेरे सामने ऐसी बातें करके मेरी मानसिकता को अस्थिर और उत्तेजित करने की कोशिश नहीं करना समझें।

वाचस्पतिजी ने मेरे लिए सदैव एक ही जबाव दिया डॉक्टर साहब अपने संकल्प से कभी पीछे नहीं हटना। यदि आपका नाम विमल है तो आपका संकल्प भी विमल ही है। पवित्र साध्य सिद्ध करने के लिए पवित्र धमकी भी जरूरी होती है। गलत साधनों से काम सिद्ध करने वाले सफल जरूर हो जाते हैं पर उनके अंतिम परिणाम गलत ही होते हैं।

विमल को थोड़ी देर के लिए नींद लगती वह सपना देखता है कि आवन में उसी शिलान्यास स्थल पर एक मंदिर बन गया और उसकी वेदी प्रतिष्ठा भी हो गई अपार जन समूह के बीच वह स्वयं भगवान की पूजा कर रहा वह स्वप्न में ही देखता है कि वाचस्पतिजी कहते हैं यह सब तुम्हारे विमल संकल्प का परिणाम है। अचानक विमल की नींद टूटती वह स्वप्न की स्मृति करके सोचने लगता है कि प्रायः सोते हुए स्वप्न तो हर व्यक्ति देख लेता है स्वप्न साकार करने के लिए सोना ही छोड़ देने वाला व्यक्ति महान होता है। स्वप्न के बाद विमल ने खुली आँख से स्वप्न देखना शुरु कर दिया।

कुछ दिन की प्रतिक्षा करके वातावरण की अनुकूलता देखकर मंदिर निर्माण का कार्य शुरु कर दिया। कुछ परिजन हितचिंतकों ने विमल से कहा कि आप अकेले ही क्यों इतने बड़े काम को अपने हाथ में ले रहे हो अरे भाई जिसको मंदिर बनवाना हो वो आगे आये। आप ही पूरे गाँव से विरोध क्यों लेना चाहते हैं इन परिजनों का जबाव वह एक बात कहकर देते थे। हमें आप सहयोग देकर एक संदेश क्यों नहीं देते। मंदिर तो मेरी जिंदगी और मौत का सवाल बन चुका है। मैं तन-मन-धन सब कुछ लगा कर जैन मंदिर को भव्य रूप अवश्य दूंगा।

विमल के संकल्प की तेज हवाओं से विरोध के बादल न जाने आवन से कब छंट गये पता ही नहीं चला। देखते ही देखते जैन मंदिर आकार लेने लगा। दान देने वालों के पैसे अपने आप आने लगे। विरोधियों की ताकत अपने आप कम होने लगी। वे मुँह छिपाकर कहीं जाकर बैठ गये और एक दिन ऐसा आया कि विमल का उस रात का स्वप्न साकार हुआ और संकल्प पूरा हुआ। जिनने कभी पत्थर फेंके थे वे फूल की माला विमल के गलें में डालकर स्वागत सम्मान को आतुर हुए।

❍❍❍❍❍

अडिग पूजा

फरवरी माह का प्रथम सप्ताह बीता ही था और दूसरे सप्ताह का प्रारंभ था आसमान में अचानक काले बादल उमड़ घुमड़ रहे थे। मौसम की थोड़ी ठंडक कम जरूर हुई थी किन्तु मावठा गिरना शुरु हो गया था। कृष्णा अपने अध खुले नयनों से खिड़की से बाहर देख रही थी। रजाई को लपेटे बिस्तर से पड़ी पड़ी सोच रही थी कि ठंड और बरसात में दोनों बढ़ रही है थोड़ी ही देर में ओले भी गिरने लगते हैं। अचानक साईकिल की घंटी बजती है तो कृष्णा समझ जाती है कि पूजा आ गई है। पूजा के आते ही कृष्णा ने एक मुस्कुराहट से पूजा का स्वागत किया और यह बताने की कोशिश कर रही थी कि मेरी तकलीफ कुछ कम हुई है।

''मम्मी ये ये बर्तन किसने साफ कर दिये। पूजा थोड़ी जोर से बोली।''

कृष्णा ने कहा - ''बेटा थोड़ी सी तबीयत अच्छी लग रही थी तो मैंने सोचा कि मक्खी भिनक रही हैं तो मैं साफ कर दूं।''

''मम्मी देखो आपकी यह बहुत गलत बात है न जब आपको डॉक्टर ने मना कर दिया तो फिर आप क्यों काम करती हैं। आपकी दो आदतें बहुत खराब हैं एक तो आप चुपचाप आराम नहीं कर सकती हैं दूसरे कि आप चिंता टेंशन करना बंद नहीं कर पाती हैं। अरे मम्मी अपने को अपनी तबीयत ठीक करना है न, फिर आप मानती क्यों नहीं ?''

''अरे बेटा, तू कहती है चिंता मत कर अब देख ये ओले पड़ गये। पूरी फसल खड़ी है खाद डाला है, बीज खरीदा, पानी दिया, कितना पैसा लगा। कर्ज रोज बढ़ रहा है। बैंक का

ब्याज भी अपने आप बढ़ता जा रहा है और तेरे पापा जो है हर किसी से उधार पैसे उठाकर जुआ खेलते हैं और शराब पीते हैं। जब कोई उन्हें उधार नहीं देता है जमीन बेचने की बात करते क्या तू नहीं देखती ? दादाजी से कितने लड़ते हैं और बस यही कहते हैं जो मेरे हिस्से की जमीन है वह मेरे नाम कर दो नहीं तो तेरा खेल खत्म कर दूँगा। आज उनके पास पैसा नहीं इसलिये वो मेरे से कह रहे थे - ''कृष्णा मुझे 100 रू. देना। मैंने पूछा - क्यों ? बोले -मोटर साईकिल में पेट्रोल डलवाना है जब वो इधर उधर गये तो मैंने बाइक को देखा तो पेट्रोल तो पूरा भरा था। अब मैं समझ चुकी हूँ। आज उनके पास पैसा नहीं है। और कोई उन्हें उधार नहीं दे रहा होगा क्योंकि सबसे तो उधार ले चुके हैं। अब बस उनको तो झगड़ा करना है।''

मम्मी आज पूरा पैसा मुझको दे दे,मैं उनको पैसे नहीं दूंगी, चाहे कुछ भी हो जाये। कैसे पापा है समझ में नहीं आता ? मम्मी इतनी बीमार है, और दवाई के लिए तो पैसे जुटाना मुश्किल पड़ता है उन्हें तो बस शराब पीने की पड़ी रहती है। ऐसी कैसी शराब की लत है ? मुझे गुस्सा तो ऐसा आता डंडा उठाकर शराब की दुकान पर बैठने वाले, बेचने वाले को इतना मारू कि वह अरन्यकलाँ तो ठीक पूरे शाजापुर जिले में भी न दिखे।

स्कूल में रोटरी क्लब और गायत्री परिवार के लोग परसों आये थे। मालूम है मम्मी उन्होंने नशा मुक्ति अभियान चला रखा है वे बताते हैं कि आदमी एक ढक्कन से शराब पीना शुरु करता है इसकी प्यास इतनी बढ़ती है कि वह बोतलों की बोतलें पी जाता है तो भी उसकी तृष्णा कम नहीं होती। **शराब पीने से लीवर की बीमारी हो जाती है। खून की उल्टी होने लगती है। मस्तिष्क की कोशिकाएं नष्ट हो जाती है। मदमत्ता छाती जाती है। अभिमान और घमंड बढ़ता जाता है। किडनी फेल होने का पूरा खतरा रहता है। अल्कोहल की मात्रा खून में अधिक बढ़ जाने से मधुमेह की बीमारी हो जाती है। लगभग शरीर पूरा खोखला हो जाता है** और उन्होंने यह भी एक पता नोट कराया था तथा मोबाइल नं. भी सबको लिखवाया था । वे कोटा के बहुत बड़े डॉक्टर आर. के. गुप्ता थे। कोटा में नशा मुक्ति केन्द्र चलाते हैं ।

मम्मी आप ठीक हो जाये तो, फिर हम सब पापा जी को कोटा ले चलेंगे। वहीं उनका इलाज करायेंगे और गारन्टी से उनकी शराब पीने की आदत छूट जायेगी । ऐसा डॉक्टर ने बताया था। हाँ, लेकिन एक बात जरूर उन्होंने कही थी कि दवा के साथ पक्का संकल्प जरूरी है।

बस बेटा, मुश्किल तो यही है। कि जब अपन ने भागवत कथा करायी थी तब गुरुजी के सामने जल हाथ में लेकर संकल्प लिया था कि मैं आज से शराब नहीं पिऊंगा और एक माह तक तो नहीं पी। फिर बस गाँव के शराबी लोगों के साथ एक दिन बारात में गये तो गाँव के दोस्त अजबसिंह ने कहा - अगर तुम मेरा पीने में

साथ नहीं दोगे तो तुम्हारी-हमारी दोस्ती खत्म। बस उसी दिन से फिर शुरु हो गई। अब मैं क्या करूं ? समझा कर, कसमें चढ़ाकर थक गई। जब मेरी शादी हुई तब तो तेरे पापा बीड़ी भी नहीं प़ीते थे। मेरी किस्मत को ही दोष दूंगी जिस कारण मुझे ये दिन देखना पड़ रहे हैं। कितनी जायदाद बिक चुकी बेटा पूजा तुझे नहीं मालूम, मैं जानती हूँ। मुझे मार-मार कर इस हालात तक पहुँचा दिया, बस अब मैं तो भगवान से प्रार्थना करती हूँ मेरी सुन ले इससे ज्यादा बुरे दिन मत दिखाना।

माँ-बेटी अपनी बात कर रही थी कि दरवाजे पर खटखटाने की आवाज आई। पूजा ने जब दरवाजा खोला तो मुरारी खड़ा था। पूजा अपना शिर झुकाये अपने कमरे में चली गई और मुरारी कृष्णा के पास गया।

मुरारी ने कृष्णा से कहा मुझे सौ रूपये दो। कृष्णा कुछ देर चुप रही और अपनी रजाई छुपा कर रोने लगी। तब मुरारी ने रौबदार भाषा में कहा- 'रोने धोने का नाटक तो तू कर मत, सीधे-सीधे सौ रूपये दे दे। रूपये तेरे बाप के नहीं है।'

कृष्णा ने कहा - रूपये मेरे पास नहीं है, सब रूपये पूजा के पास है। उसी से माँगों , मेरे से कोई बात मत करो।

मुरारी पूजा की तरफ लपका और उसने कहा - पूजा रुपये कहाँ है ? जल्दी दे दो नहीं तो, समझ लेना तू हाथ पैर तोड़ कर रख दूँगा। मुरारी ने पूरे घर को सिर पर उठा लिया था।

पूजा ने अपनी अडिगता का परिचय देते हुए कहा - पापा जी आप को थोड़ी भी शरम आती है कि नहीं, मम्मी इतनी बीमार रोज दवाई का खर्च कहाँ से उठाया जाये ? आपने कभी यह सोचा भी है कि नहीं ? आप को यह भी सोचना चाहिए चार छोटे छोटे बच्चे उनका भविष्य क्या होगा ?

लगता है पूजा, तू बहुत बड़ी हो गई है। भाषण अच्छा देने लगी है। परन्तु मुझे तेरा भाषण नहीं सुनना है। तू देर मत कर बस सीधे सीधे रूपया निकाल दे, नहीं तो बेवजह में मार अलग खायेगी और पैसा देना ही पड़ेंगे। अब तू सोच ले मार खाना है या नहीं।

पापाजी, ''आज तुम्हें जितना मारना हो उतना मार लो, परन्तु मैं रूपये नहीं दूंगी। आप को अब यह फैसला करना है कि आपको शराब कब छोड़ना है ? अब आपको शराब पीना तो छोड़ना ही होगा। मेरे पास कोटा के एक डॉक्टर आर.के. गुप्ता का पता और मोबाइल नम्बर भी है। अब आपका इलाज कोटा में करवाऊंगी, मैं आपकी शराब की आदत छुड़वा कर रहूँगी।''

देख पूजा तू अब मान जा बस मुझे सौ रूपये दे दे मुझे अपना काम करने दे, तू अपना काम कर। बस पापा बहुत हो चुका। अब मैं आपको शराब के नाम पर एक पैसा नहीं देने वाली हूँ।

ठीक है पूजा, तू ऐसे नहीं मानेगी। देख अब भी मौका है, नहीं तो मेरा गुस्सा बहुत खराब है। क्या आपका गुस्सा खराब है मैं आपकी ही बेटी हूँ। मेरा भी गुस्सा कम नहीं हाथ लगा कर देखना फिर मैं कैसा मजा चखाती हूँ कि आप हाथ उठाना भूल जायेंगे। जैसे ही मुरारी ने पूजा का हाथ पकड़ना चाहा, पूजा ने डंडा उठा लिया। बस क्या मुरारी घर से बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद के घासलेट की केन हाथ में लेकर आया। पूजा अपनी पुस्तक लेकर होमवर्क करने बैठी थी। मुरारी चुपके से आया और उसने पूरी 5 लीटर की भरी केरोसिन की केन उड़ेल दी और माचिस की काड़ी भी बिना किसी सोचे व देर किये बिना पूजा के ऊपर फेंक दी।

पूजा बचाओ, बचाओं चिल्लाने लगी। आग के गुब्बारे लपटे धुआं छूटने लगे। मुरारी घर के बाहर निकल कर भाग रहा था। तभी मोहल्ले के सभी लोग इकट्ठे हो कर आग बुझा कर पूजा को बचाने में लग गये। जैसे तैसे आग पर काबू पाया पूजा की सांस धीरे-धीरे चल रही थी कम्बल में लपेट कर अस्पताल ले गये, लेकिन डॉक्टरों ने भोपाल हम्मीदिया हॉस्पिटल रेफर कर दिया। पुलिस आ गई। पुलिस ने मुरारी को खोजने गई। मुरारी को एक खेत में छुपा हुआ पकड़ा। बीमार कृष्णा के हाल बहुत खराब हो गई थी। वह सिर्फ आँसू बहा रही थी। सदमें में आ चुकी थी। मोहल्ले, गांव और रिश्तेदार सब इकट्ठे हो गये थे।

आखिर भोपाल से खबर आ चुकी थी कि पूजा आखिरी लड़ाई जिंदगी से हार चुकी है। जैसे ही अरन्याकलाँ में पूजा की मौत का समाचार नगर में पहुंचा। नगर के सारे स्कूल बंद हो गये थे। विद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने नगर से शराब दुकाने हटाने के लिए पुलिस चौकी का घेराव किया। गुस्साये युवकों ने मिलकर शराब की दुकान को आग के हवाले कर दिया।

मुरारी को अदालत ने पेश किया। पुलिस ने रिमांड मांगा। मुरारी अपना अपराध स्वीकार कर लिया। लानत के मारे किसी को अपना चेहरा दिखा नहीं पा रहा था। जेल के सींखचों के पीछे मुरारी को भेज दिया गया। पश्चाताप की आग में हर दिन मुरारी जलने लगा। छोटे से पल की गलती वर्षों तक रूलाने के लिये काफी होती है। रह रहकर मुरारी पूजा की अडिगता को याद करता और आँसू बहाता रहता था। कभी कृष्णा की याद में पूरा दिन गुजर जाता था। जेल में एक एक दिन एक-एक साल जैसा लगता था। जिस शराब के लिए अपनी पूजा को जलाया वो अब कहाँ ?

❍❍❍❍❍

विजय की हार

सारणी रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की चहल पहल आवा-जावी लगी हुई थी। यात्री अपने सामान समेटकर प्लेटफार्म की ओर बढ़ रहे थे। भोपाल की ओर जाने वाली गाड़ी का सिग्नल हो चुका था। सब यात्री अपने आप में ज़ल्दी में थे। क्रासिंग पर खामपुर से आने वाले विद्यार्थी अपने-अपने बेग टांगे परीक्षा के लिए स्कूल की ओर जा रहे थे जिनमें विजय भी अपनी दिशा स्कूल की ओर बना रहा था।

विजय दौड़ने में खेल-कूद में विशेष रूचि रखता था। विजय अपने आप में स्मार्ट लुक में ही रहता था। गोरा रंग का क्लीन शेव फेस के कारण हैंडसम दिखने वाला विजय हर क्षेत्र में अपना कीर्तिमान बनाने का प्रयास करता था। ऊंचा पूरा कद छरहरा बदन सबको आकर्षित करता रहता था।

विजय की पढ़ाई में थोड़ा मन कम ही लगता था। फिर भी वह किसी भी तरह से द्वितीय श्रेणी में पास हो जाता था जब कि उसका बौद्धिक स्तर बहुत अच्छा था किन्तु समय के अनुसार उसके अंदर की आधुनिक बनने की इच्छा प्रबल बनी रहती थी। प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा में अपनी रूचि रखने वाला विजय कभी हार नहीं मानता था परन्तु पढ़ने में बहुत जल्दी हिम्मत हार जाता था।

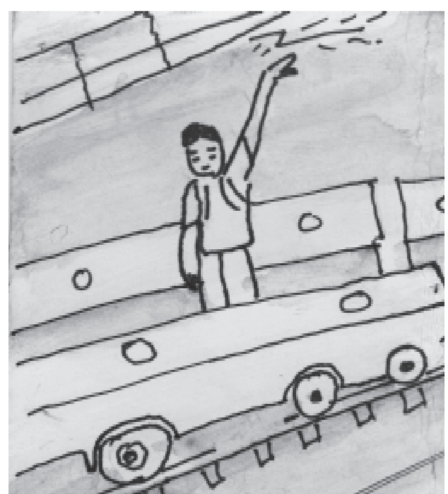

विजय गाँव के समृद्ध व्यापारी का पुत्र होने से उसके बहुत से मित्र उसके चारों तरफ घूमते रहते थे। व्यवहार-कुशल होने से विजय से मिल-कर सभीउससे दोस्ती करने को तैय्यार हो जाते थे।

आज विजय जब रेल्वे पटरी को पार करने जा रहा था तब उसके सभी दोस्त माल गाड़ी के नीचे से निकल रहे थे तभी विजय

ने झिड़की देते हुए कहा - सुनों रे डरपोकों, मैं कभी सिर झुका कर नहीं जिया हूँ जो अपने सिर और कमर को झुकाऊँ और मालगाड़ी के नीचे से निकलूं यदि पटरी पार करना है तो टैंकर ऊपर चढ़कर फिर उस पार होंगे। इसमें क्या मजा कि जानवर जैसे झुककर अपनी औकात दिखाना।

विजय की यह बात सुनकर उसके कई मित्र टैंकर की बोगी पर चढ़कर पटरी पार करने को तैय्यार हो गये। तभी उनका मित्र योगेन्द्र शर्मा बोला - देखो ऐसा है अगर हम टैंकर के ऊपर चढ़कर भी पटरी पार करते हैं तो भी हमें झुकना तो पड़ेगा ही क्योंकि ऊपर से विद्युत लाइन जा रही है उसका भी तो बहुत बड़ा खतरा है यदि विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र में आ गये तो समझ लो हमें करंट खींच लेगा और हम जिंदा नहीं बचेंगे। योगेन्द्र अपनी बात पूरी कर पाता इसी बीच अनिल सोनी बोल उठा कि - अरे इस योगेन्द्र की बात पर ध्यान नहीं देना। ये जन्म से ही डरपोक है मैं तो इसे बहुत छोटे से जानता हूँ। जब यह मेरे साथ 6 वीं क्लास पढ़ता था और ट्यूशन जाता था और छुट्टी होने पर जब लौटते थे तो अपने घर की गली में अंधेरा होने से इतना डरता था कि वहीं गली से आवाज लगाता था बुआ बाहर निकल कर लालटेन दिखाओ। जब इसकी सरोज बुआ आती थी और लालटेन दिखाती तब तक वहीं बैठा रहता था।

पवन चौरसिया ने भी अनिल सोनी का समर्थन करते हुए कहा - एक बार ये योगेन्द्र भैय्या ट्यूशन से लौट रहे थे तभी मैं और बबलू कोरी दोनों ने छुप कर एक किक मारी कि ये ऐसा लौट के भागा कि जाकर सीधा अपने घर में घुसा। बीच में कहीं रुका ही नहीं था। इतना डरपोक व्यक्ति और मैंने कहीं देखा ही नहीं।

अच्छा, अब तो मान लो योगेन्द्र कि तुम डरपोक हो, नहीं तो अभी और तेरे संस्मरण सुनाने वाले मिल जायेंगे। तू अभी चिढ़ जायेगा मुझे मालूम है कि तू कितनी जल्दी भिनकता है। यह बात जब अनिल सोनी कह रहा था तभी योगेन्द्र शर्मा बोला - ठीक है भैय्या मैं डरपोक सही तुम सब वीर, बहादुर बनो, परन्तु मेरा तो इतना ही कहना है कि यह बिजली का करंट वाला मामला है जब नरेश साहू की शोक सभा स्कूल में हुई थी बघेले सर ने क्या कहा - प्रकृति किसी को नहीं छोड़ती है हमें अ़ग्नि, पानी और बिजली से कभी मजाक नहीं करना चाहिए, न हमें कभी इनके सामने दुस्साहस दिखाना चाहिए। क्योंकि ये कभी किसी को माफ नहीं करते हैं यदि तैरना नहीं जानते हैं तो झरना, जलप्रपात आदि देखने जायें तो अनजानी जगह पर हमें तैरने का मजा लूटने की कोशिश नहीं करना चाहिए। आतिश चलाते समय बहुत सावधानी रखनी चाहिए और बिजली का कोई भी काम करो तो पूरी सुरक्षा के साथ करो। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि कटे, पिटे तारों से दूर रहना चाहिए। योगेन्द्र की बात में दम तो है यार यह कहते हुए अनिल सोनी ने कहा- चलो हम सब मालगाड़ी से निकलेंगे। यह कहते हुए अनिल सोनी के साथ सभी मित्र पटरी

के उस पर पहुँच कर आगे बढ़ने ही वाले थे कि उन्होंने देखा कि विजय नहीं है। अनिल सोनी ने आवाज दी - विजय भाई क्या कर रहे हो ? जल्दी आ जाओ सब लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। क्या कर रहे हो ? आ जाओ तुम भी हम जैसे। आदमी की जगह थोड़ी देर के लिये जानवर बन जाओ, कोई कुछ नहीं कहेगा। हम लोग तुम्हारी तरफ देखेंगे नहीं।

विजय ने जोर देकर कहा तुम सब योगेन्द्र शर्मा की बातों में लग गये और गाय के बछड़ों ज़ैसे, कुत्ते के पिल्लों जैसे निकल गये। मैं निकलूँगा तो टैंकर के ऊपर से ही नहीं तो नहीं। अनिल सोनी - देख भाई टैंकर के नीचे से ही निकल जा, ज्यादा हेकड़ी मत बता, अगर कुछ हो गया तो कोई हाथ नहीं लगा लेगा।

''दुनिया में वही होता है जो भगवान को मंजूर होता और जीना दुनिया की रसम है मौत आये तो आयेगी एक दिन, जान जाना है तो जायेगी एक दिन। ऐसी बातो से क्या घबराना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना''

इस गीत को बड़ी ही लय में गाया। सब लोग विजय का गीत बड़ी ही लीनता के साथ सुनने लगे और अनिल सोनी एक बार फिर आवाज दी - विजय अब तू अपनी होशियारी ज्यादा मत बता दिखा। सीधा मालगाड़ी के नीचे से आ जा नहीं तो मैं चला अब तू जान और तेरा काम जाने।

विजय के कान में अनिल सोनी की आवाज तो पड़ रही थी परन्तु विजय की आँखों में चमक तब आ गयी जब उसकी नजर गाँव की उन सहपाठी लड़कियों पर पड़ी। जिनकों वह अपनी जीत का करिश्मा हर समय दिखाता रहता था। उसकी एक लड़की तो बड़ी फैन रहती थी, जो विजय की तारीफ करने से कभी नहीं अघाती थी। आज यदि मैं नीचे से निकूलंगा तो ये सब लड़किया मेरा मजाक बनायेगी और कहेंग़ी - क्यों विजय भैय्या आप तो हमेशा कहते हो कि मैं तो वही काम करता हूँ जो कि चुनौती से भरे होते हैं। बस इतना सोचने के बाद, एक के बाद एक हाथ मार कर विजय ऊपर टैंकर पर पहुंचा कि उसने कहा - योगेन्द्र देख मुझे मैं कहाँ खड़ा हूँ। योगेन्द्र तू कहा रहा था कि टैंकर पर भी झुक कर निकलना पड़ता है और देख मैं खड़े खड़े ही निकल रहा हूँ। तू अपनी बहुत बड़ी सीख दे रहा था, सयाना बन रहा था। अब देख इधर देख उधर कहाँ देख रहा है।

जब विजय अपनी जीत का अहसास योगेन्द्र शर्मा को करा रहा था तभी कविता नामदेव ने जोर से आवाज लगाई , विजय भैय्या, विजय का ध्यान कविता की ओर गया उसने देखा सब लड़कियाँ मेरी इस कामयाबी पर आश्चर्य व्यक्त कर रही है तभी विजय ने हाथ ऊपर की ओर खींचा और नेताओं की तरह दोनों अंगुलियों से व्ही का आकार बना कर कविता से कहा, हैलो।

जब विजय कविता की तरफ हैलो कर रहा था कि अचानक स्पार्किंग हुई तथा आग जैसे स्फुलिंगे चारों ओर बिखरने लगे। अचानक हुये इस परिवर्तन को कोई समझ नहीं पाया और विजय ऊपर की तरफ खींचा मात्र कुछ सैकंडों में धड़ से नीचे गिर गया। कला,संगीता जोर से चिल्लाई - विजय भैय्या को क्या हो गया, कोई देखो तो सही।

तभी सभी दोस्त लौटकर वापिस मालगाड़ी की तरफ आये और विजय को उन्होंने देखा। थोड़ी देर तड़पने के बाद बिल्कुल निश्चेष्ट हो गया। चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई। भीड़ इकट्ठा हो गई। आर.पी.एफ. के जवान और अधिकारी आ गये उन्होंने भीड़ को अलग किया देखा और तुरंत डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर रघुवंशी ने बिना छुए ही देखकर कह दिया - सर कुछ नहीं बचा। गया ये आदमी। इसका क्या नाम था। तभी अनिल सोनी ने टीआई से कहा - सर, विजय। जिसके जवाब में टीआई ने कहा - बस विजय की हार हो चुकी है। यह बच्चा मौत से हार चुका है।

❍❍❍❍❍

घासलेट

झारखंड प्रदेश का डालटनगंज अपनी अंग्रेजियत के लिए हुए आज भी अंग्रेजों के अस्तित्व को सूचित कर रहा है, अंग्रेजों की अंग्रेजियत भले ही भारत से चली गई हो, किन्तु ये नगर उनके गुलामी के चिन्ह अपने नाम में समेटे हुए हैं, डाल्टनगंज के झोपड़ मोहल्ले में एक राजेन्द्रबाबू भी रहा करते थे उनके छः लड़के और चार लड़किया थी यों भी कहा जा सकता है शायत वे हर वर्ष एक नया कैलेण्डर छाप देते थे, उनकी पत्नी कुसुम से जब कोई इस बारे में चर्चा करता था तो वे एक बात कहा करती थी -भैंस के सींग कभी भैंस को भारी नहीं पड़ते।

ऊंचे कद के राजेन्द्र बाबू हमेशा एक कुर्ता और पायजामा में सबको दिख जाते थे, सिर पर उलझे-सुलझे काले सफेद बाल और खिचड़ी दाढ़ी उनकी पहचान थी वे हमेशा टूटी चप्पल पहनकर ही घूमा करते थे हुनर उनके हाथों में था। हुनर के आगे आदमी सब कुछ भूल जाता था, गणेश उत्सव की झांकी सजाते समय वे किसी की दखलअंदाजी पसंद नहीं करते थे और जब झांकी सजकर तैयार हो जाती थी तो लोग उनकी झांकी निहारते ही रहते थे। थर्माकोल की आकर्षक कटिंग और उसमें भी बारीकी मनमोहक लगने वाली लगती थी। एक नई कृति उनकी हर वर्ष लोगों के लिए बरबस खीं च लेती थी। हर गणेश उत्सव समिति वाले उन्हें अपनी समिति का संरक्षक बनाने में गौरव का अनुभव करते थे। राजेन्द्र बाबू के मित्रगण उनकी आर्थिक स्थिति देखकर सदा ही चिंतित रहते थे, वे कह दिया करते थे राजेन्द्र बाबू आप इतने अच्छे कलाकार है, परन्तु आप अपनी जिंदगी में पैसे से परेशान क्यों रहते हैं ? तब उनका जवाब बड़ा नपा तुला रहता था। अरे भाई, ये तो सब मुकद्दर का खेल है किसी की किस्मत में राजसिंहासन होता है, तो किसी की किस्मत में कांटों का ताज होता है। इस किस्मत के लेख को कौन बदल पाया है ? किस्मत यहाँ नहीं लिखी जाती है,

किस्मत तो वहां से लिखी आती है, उनके मित्रों के बीच में कभी-कभी दार्शनिक बहस भी छिड़ जाती थी और वे एक ही बात कहा करते थे तुम कितनी भी बहस कर लो किन्तु इस भाग्य के आगे किसी का भी उपाय नहीं चलता है, भगवान रामचंद्रजी का राज्याभिषेक बिल्कुल निश्चित हो गया था परन्तु बताओ ऐसी कौन सी बात हो गई जिससे उन्हें वनवास में जाना पड़ा और पूरे सूर्यवंश में खलबली मच गई। परन्तु उनके मित्र भी चुप नहीं रहते थे वे कहते थे ये सच है कि किस्मत सबकी जुदा-जुदा होती है। किसी की झोली में फूल होते हैं किसी की झोली में कांटे होते है, परन्तु भाग्य के भरोसे बैठे रहना कोई बुद्धिमानी नहीं है। उल्टे काम करना जानबूझ कर समय बर्बाद करना अपने परिवार का ध्यान न देकर छोटी सी वाहवाही के लिए अपना काम छोड़कर समाज के काम में लग जाना कहाँ तक उचित है ? पुरुषार्थ से व्यक्ति अपनी जिंदगी को बेहतर बना लेता है। भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले मात्र अकर्मण्य ही हो सकते हैं। अपने मित्रों की इन सब तर्कपूर्ण बातों को अनसुना करते है राजेन्द्र बाबू एक ही बात आखिरी में कह देते थे अरे भाई, मैं ज्यादा तनाव नहीं लेना चाहता हूँ, मुझे तो भगवान कहीं-न-कहीं से व्यवस्था कर ही देता है, मेरी चिंता करने वाले तो दुनिया में कोई हो या न हो परन्तु भगवान को मेरी चिंता जरूर है, और अपने को तो कहीं न कहीं से कुछ न कुछ तो जरूर मिल जाता है, क्या करना, यार अपन को पेट भरने के लिए चार रोटी चाहिए, और पेटी भरने के लिए तो दुनिया की हर जायदाद कम पड़ जाएगी।

राजेन्द्र बाबू का घर में समय कम बीतता था और वे सचमुच में घर में रहना ही नहीं चाहते थे, वे कहते थे घर में आए नहीं कि कुसुम महारानी के कोई न कोई कमी के उलाहने सुनने पड़ते हैं, घर में पैर रखते ही खर्चे की शुरुआत हो जाती है, कभी तेल नहीं घर में, कभी लकड़ी नहीं घर में, तो कभी गेहूँ नहीं हैं, तो कभी चावल नहीं है, कभी दूध नहीं आया तो चाय नहीं बन पायी। इन सब झंझटों से बचने के लिए राजेन्द्रबाबू होटल में ही नाश्ता पानी भोजन आदि कर लिया करते थे। वे एक कपड़े की दुकान पर काम किया करते थे काम करने की जो भी तनख्वाह होती थी ईमानदारी से पूरी तनख्वाह कुसुम के हाथ में दे दिया करते थे और अपने खर्च के लिए वो कहीं न कहीं से रोज की जुगाड़ कर लिया करते थे। वैसे भी राजेन्द्र बाबू का खर्च कोई ज्यादा नहीं था सुबह से नाश्ता एक-दो चाय, दोपहर को फिर कुछ न कुछ लंच और एकाध बीड़ी का बंडल, इतनी ही बातों का जो खर्च होता था वही उनका खर्च था। उनके बच्चे सबसे ज्यादा फटेहाल मोहल्ले में घूमा करते थे, क्योंकि राजेन्द्रबाबू की तनख्वाह एक हजार रूपए महीने से ज्यादा नहीं थी उतने में ही इतनी महंगाई में बच्चों को कपड़े, भोजन और अगर बीमार हो जाए तो उनकी दवाई आदि के लिए पैसे लगते ही थे। बेचारी कुसुम जैसे तैसे खर्च को निपटाती थी और कभी कुछ पैसे बच भी जाते थे तो उसका बड़ा बेटा संजू इधर-उधर कर देता था, संजू की उमर पंद्रह-सोलह वर्ष हो गयी थी कुसुम ने उसे एक प्रिंटिंग प्रेस पर काम के लिए भेजना शुरु कर दिया था। संजू भी बहुत अच्छा काम करता था जबसे संजू ने काम करना शुरु किया तब से कुसुम के लिए थोड़ी राहत जरूर मिली किन्तु ये राहत ज्यादा बड़ी नहीं थी।

सावन का दिन था रक्षाबंधन के पर्व के लिए कुसुम को कुछ पकवान भी बनाने थे और बार-बार बिजली गोल हो जाने से लालटेन और भवका में कुछ घासलेट ज्यादा ही जलने लगा था कुसुम ने घासलेट की केन देखी तो उसमें घासलेट बिल्कुल नहीं था सामने कोई नहीं दिखा मात्र राजेन्द्रबाबू पलंग पर लेटे-लेटे रेडियों पर गाना सुन रहे थे उस समय गाना चल रहा था, एक तारा बोले, तुन-तुन-तुन बड़ी मस्ती के साथ राजेन्द्र बाबू बोलने लगे देखा कुसुम कैसा गाना चल रहा है। इसमें कह रहा है, कुछ ऐसे लोग भी होते हैं , जो अपनी गलती पर रोते हैं, खुद का तो पेट नहीं भरता पर दस-दस बच्चे होते हैं लगता है इस रेडियो वाले ने अपनी कहानी सुन ली है, दस-दस क्यों कह रहा है, कहना था इसको तो और कुछ भी कह सकता है कुसुम ने कहा - ये सब बाते छोड़ों तुम तो पहले उठो और आज घासलेट नहीं हैं, पहले तुम जाओ, घासलेट लेके आओ।

अरे भाग्यवान, पानी बरसते में कहा घासलेट जाऊँ, और वैसे ही लाइन में लगे-लगे पूरा दिन बीत जायेगा तो भी वह खूसट अपना कार्ड ही नहीं निकालेगा। दिन भर पानी में भीगूंगा तो बीमार पड़ जाऊंगा जितने का घासलेट नहीं मिलेगा उससे ज्यादा पैसे दवा में लग जायेंगे, कुसुम ने कहा - तुम्हें कुछ शर्म आती भी है या नहीं, एक बूंद घासलेट घर में नहीं है और रक्षाबंधन जैसा पर्व खाने के लिये पूरा घर आ जायेगा और घासलेट लाने के लिए कोई नहीं, आप तो उठ जाओ और सीधे घासलेट लेने चले जाओ बस ! मैं इतनी ही आरजू करती हूँ। कुसुम ने हाथ में पचास का नोट राजेन्द्र बाबू को थमाया और सिर को सहारा देते हुए उठाकर खड़ा कर दिया। राजेन्द्र बाबू ने पचास का नोट जेब में रखा। घासलेट की केन हाथ में ली और अनमने मन से घर से बाहर निकल पड़े। जब वो घर से जा रहे थे तब घड़ी में दो बज रहे है और उनका मुँह लगा प्रिंटिंग प्रेस मालिक का बड़ा लड़का पिंटू मिला जो एसटीडी चलाता था साथ ही धंधा कम लाटरी में रूचि ज्यादा रखता था। आया और बोला - बाबूजी कहा जा रहे हो, इस पर राजेन्द्र बाबू ने कहा - भाई तुम कहाँ जा रहे हों ? पिंटू ने कहा - राजेन्द्र बाबू आज जुगाड़ है, मैं तो लाटरी का टिकट लेने जा रहा हूँ एक ज्योतिषी ने बताया है कि आज आठ नंबर तो पक्के में आना है और मैं तो 500 रू. लगा रहा हूँ अगर आ गया तो अभी ढाई बज रहा है और 4 बजे तक रिजल्ट आ जायेगा नंबर आया कि बस, पचास हजार रूपये अपने चित्त। राजेन्द्र बाबू ने पिंटू की बात सुनते ही गहराई से ले ली और सोचा कि अगर वाकई में ज्योतिषी ने बताया तो गलत नहीं बताया होगा। लाटरी का रिजल्ट तो चार बजे तक आ ही जायेगा और घासलेट छः बजे से पहले तो मिलेगा ही नहीं, अच्छी जुगाड़ है, चलो अपन भी क्यों नहीं लगा दे नंबर, पिंटू की बात गलत नहीं हो सकती है, वैसे है तो लफंगा पर, कहीं न कहीं अच्छी बात होगी तभी तो वह कह रहा है।

राजेन्द्र बाबू ने घासलेट की दुकान पर जाना उतना उचित नहीं समझा जितना की लाटरी की दुकान पर जाना उन्हें अच्छा लगा और रेंकते-रेंकते वे लॉटरी की दुकान पर पहुंच ही गए। 8 नंबर के टिकट उन्होंने पचास रूपए के खरीद लिये और बस वे घड़ी देखने लगे। 1 घंटे तक उन्होंने होटल पर बैठकर जमकर नाश्ता किया तथा आने जाने वाले सभी दोस्तों को भी करवा दिया। इसी बीच राजेन्द्रबाबू के तीन चार लड़के भी

आये उन्हें भी नाश्ता करा दिया क्योंकि राजेन्द्रबाबू को मालूम था कि चार बजे 8 नंबर खुलेगा और पचास रुपए के पाँच सौ रुपए मिलेंगे, सौ रूपये नाश्ते के चुकाएंगे, पचास का टिकट खरीदेंगे और साढ़े तीन सौ रूपये जेब में डालकर कुसुम को दे देंगे, और कहेंगे ले आ अच्छी वाली साड़ी, और मजे में खूब ठप्पे से रह होटल वाला पूरी नजर राजेन्द्र बाबू पर रखे हुआ था। क्योंकि इतनी दिलेरी के साथ उन्होंने कभी न तो नाश्ता किया था न कराया था उसे तो अपने दो सौ रूपए लेने की पड़ी थी। घड़ी में देखते-देखते चार बज गए। चार बजते ही राजेन्द्र बाबू ने पता लगाया तो लाटरी का नंबर चार आया।

राजेन्द्र बाबू के चेहरे की हवाई उड़ गई। लाटरी का रिजल्ट सुनते ही अब उनको डेढ़ सौ रूपये की जुगाड़ करनी थी क्योंकि सौ रूपए तो उन्हें प्रकाश हलवाई के चुकाना थे और पचास रुपए घासलेट के लिए चाहिए थे और अब क्या होगा ? प्रकाश बार-बार कहता राजेन्द्र बाबू आपका बिल सौ रुपये का बना है। राजेन्द्र बाबू कहते हैं, भाई तू जान क्यों खा रहा है। डायरी में लिख ले, मैं गांव छोड़कर थोड़ी भाग रहा हूँ तेरे पैसे चुकाऊंगा। इस पर तुनककर प्रकाश बोला - बाबूजी आज कौन सी खुशी में इतने सब लोगों को नाश्ता कराया है, क्या आपका आज जन्मदिन है या फिर भाभीजी ने ज्यादा पैसे दे दिए। बैंच पर बैठे-बैठे राजेन्द्रबाबू कहते हैं, नहीं यार प्रकाश में उलझ गया हूँ पिंटू ने मुझे बताया था कि आठ नंबर आने वाला है, उसको कोई ज्योतिषी ने बताया था मैंने पचास रूपए लगाये सोचा पाँच सौ रुपये आयेंगे तेरा हिसाब कर दूंगा और वो लोचा हो गया।

प्रकाश ने कहा - बाबूजी त्यौहार का दिन है, पैसा तो हमें आज ही चाहिए, आज उधार नहीं करूंगा। राजेन्द्र बाबू ने कहा -हाँ यार देंगे तेरे पैसे आज ही देंगे तू क्यों मरा जा रहा है ? आज नहीं तो आठ दिन में दे दूंगा अभी गणेश चतुर्थी आ रही है, दो चार बैनर बनाऊंगा और तेरे पैसे पटा दूंगा। प्रकाश भी मान गया। परन्तु अब सबसे बड़ा टेंशन कुसुम को मनाने का था। कुसुम को मनाना और हिमालय पर चढ़ना एक जैसा था क्योंकि घासलेट लेकर अगर घर नहीं पहुंचा तो बवाल खड़ा हो जायेगा। ये सब सोचते-सोचते रात के नौ बज गए डाल्टनगंज की सभी दुकाने लगभग बंद हो गयी थी आखिर राजेन्द्रबाबू को एक ही बात सूझी। अब तो कुएँ में कूदकर अपनी इज्जत बचाओ। कुएँ में कूदने के लिए चल पड़ा जब छलांग लगाने वाला ही था कि उसी समय कहीं से पिंटू पहुंच गया और उसने राजेन्द्र बाबू का हाथ पकड़ा और कहा बाबूजी क्या करते हो, तब राजेन्द्र बाबू ने अपनी पूरी समस्या एक सांस में कह दी। पिंटू ने तुरंत डेढ़ सौ रूपे निकालकर हाथ में रखते हुए कहा -बाबूजी कोई भी निर्णय बिना सोचे-समझे न लिया करे। आपकी जिंदगी इतनी सस्ती नहीं है, और मैं घासलेट भी अपने घर से भर देता हूँ पर आप इतने भावुक न हुआ करें पिंटू ने अपने दोस्त से कहा जा, ये केन घासलेट से भर ला। पिंटू का दोस्त राजेश गया और घासलेट लेकर घर से आ गया और राजेन्द्र बाबू को दे दिया और उनको घर तक छोड़ दिया।

❍❍❍❍❍

चेलम्मा

बरसात घनघोर होकर रूक गयी थी, ठंडी फिजाओं ने अपनी गिरफ्त में पूरी धरती को ले लिया था, समुद्र तटीय केरल का जिला आमवा झुझा और वहीं का छोटा सा कस्बा का सौंदर्य खूब बढ़ चुका था। सूरज की सुनहरी किरण ने जरा सा ही झांका था कि थोड़ी देर फिजाओं ने फिर करवट लिया और देखते ही देखते पूरी धरती आसमान गहरे कोहरे से भर गया, दिन होने के बाद भी एक आदमी दूसरे को बहुत ही निकट आने के बाद देख पा रहा था।

बकरी चराने के लिए चराने वाला बीमार पड़ जाता था और रसिया खान को खुद बकरी लेकर जाना पड़ा। रेल की पटरी-पटरी जाने के बाद अपने फार्म हाऊस तक जाती थी। रसिया के 45 वर्ष संघर्ष में गुजरे थे। रसिया का लोहा सब मानते थे, पढ़ी लिखी होने के साथ मुस्लिम समाज में शिक्षा के लिए सदैव संघर्ष करने वाली रसिया अपने गांव की पहली बार सरपंच बनी थी 5 फिट 6 इंच की दबंग रसिया से कोई बहस में तो जीत ही नहीं सकता था, हर तरफ से समाज के ठेकेदारों ने रसिया को प्रताड़ित किया, किन्तु रसिया ने अपनी कोम के लिए तालीम की छेड़ी मुहिम को नहीं छोड़ा। वह कहती थी की लड़किया घर की चार दीवारी में क़ैद होने के लिए भेड़ बकरिया नहीं हैं, जब भेड़ बकरियों को भी चरने के लिए स्वतंत्र छोड़ा जाता है, सिर्फ उन पर नजर रखी जाती है, तो लड़कियों क़े लिए पढ़ने की आजादी क्यों नहीं दी जाए, उन पर नजर रखी जाए तो मैं जरूर मानती हूँ पर इतना कसाब न हो कि वह अपनी जिंदगी को तबाह कर बैठे। रसिया खान के इन ख्यालातों से कई लोग खफा रहते थे। कौम के ठेकेदार तो यह तक कहते थे कि रसिया खान पूरी कौम को बर्बाद करके रख देगी। कई तथाकथित धर्म के नुमाइंदों ने रसिया खान को जान से खत्म करने का भी सोच लिया था, लेकिन वे कामयाब नहीं हुए, रसिया अकेली निकलती थी, तो वे अपने साथ कुछ न कुछ हथियार रखती थी ओर अंधेरे आदि में हमेशा चौकन्ना रहती थी। आज जब रेल पटरी के किनारे रसिया खान चली जा रही थी और चारों तरफ कोहरा छाया हुआ था दूर से आदमी पहचान नहीं पा रहा था, तभी कोई कथरी और लकड़ी टेक-टेक कर रसिया खान को पास आता हुआ दिखा। रसिया कुछ सहमी, उसने देखा सामने से कौन आ रहा है, कुछ देर के लिए संभल गयी परन्तु उसने देखा वाकई कोई बूढ़ी महिला है और

लगता है कि वह भटक गयी है उसने पास जाकर वृद्धा से पूछा - क्या आप रास्ता भटक गयी हैं , तो मैं आपको रास्ता बता सकती हूँ।

वृद्धा की चेहरे की झूर्रियों पर आंसू सुखे हुए थे रसिया खान को समझते देर नहीं लगी कि ये कोई बेचारी, दुखयारी है, रसिया ने थोड़ी देर रोककर पूछा - अम्मा तुम यहां कहां भटक रही हो ? तुम्हारी तकलीफ क्या है ? अम्मा कुछ नहीं बोली थोड़ी देर में धड़धड़ाती ट्रेन आ रही थी, रसिया ने अम्मा का हाथ पकड़ा और पुलिया पर बैठ गयी। रेल निकल रही थी तभी अम्मा झटका देकर हाथ छुड़ाना चाह रही थी, रसिया खान को समझते देर नहीं लगी कि ये वृद्धा रेल के सामने कूदकर अपनी जिंदगी खत्म करना चाहती है। रसिया खान ने कहा अम्मा क्या बात है ? तू क्या करने जा रही है ? ऐसे हिम्मत क्यों हार गई ? तब वृद्धा ने अपने चेहरे को दोनों हाथों से छिपाते हुए कहा - मैं किसके लिए जियूं मेरा कोई तो नहीं हैं, मेरे लड़कों ने मुझे घर से बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया। एक तो ब्राह्मण कुल में जन्मी प्रभु की भक्ति करते-करते अपना समय गुजारती तो भी ये दुनिया के लोग मुझे अपना गुजर-बसर नहीं करने देते। कोई कुछ कहता, कोई कुछ कहता। मैं तो इस जिंदगी से तंग आ गयी हूँ और बस अब एक ही बात सोची है, कि भगवान के पास कैसे जल्दी चली जाऊं। रसिया खान ने कहा - तुम्हें जो कुछ करना है तुम कर लेना, पर सामने मेरा फार्म है, वहां तक चलो मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती हूँ। रसिया खान हाथ पकड़कर कृषि फार्म ले जाना चाहती थी, अम्मा ने हाथ को हल्का झटका देते हुए कहा - बेटा मुझे मत पकड़ों मैं तेरे बिना सहारे ही चल सकती हूँ। लगभग सौ मीटर की दूरी पर रसिया खान के फार्म हाऊस तक वह वृद्धा गयी।

रसिया ने पूछा - कि अम्मा क्या ऐसे जिंदगी तबाह करने से तुम कुछ हासिल कर सकती हो, यदि नहीं कर सकती हो तो 'मरो तो शान से मरो' अब तुम्हारी उम्र है कितनी ही ? तुम जब तक जियो शान से जियो, मेरे पास रहो मैं हर बात तुम्हारे माफिक करूंगी ये इतना बड़ा कृषि फार्म है। तुम जिस चाहे कमरे में अपना सामान रख लो, जैसा चाहे वैसा अपना खाना बनाओ, भगवान का भजन करो, और रहो खर्चे की सब जिम्मेदारी मेरी रहेगी।

रसिया खान की बात सुनकर वृद्धा बड़े धीरे से बोली - बेटा दो चार दिन या एक दो महीने तक तो सब कर देते हैं फिर आदमी का बोलचाल और व्यवहार बदल जाता है, और फिर वही अपमान तिरस्कार मिलने लगता है। जिस चीज के लिए मैं सहन नहीं कर पाती हूं वही जब मिलने लगता है, फिर मुझे दूसरा रास्ता कुछ भी नहीं दिखता है, मैंने पूरी दुनिया इस उमर तक देखी है, बातें सब लोग कर लेते हैं। बातों का क्या, अब मुझे दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा है मैंने कितने लोगों का भरोसा किया, आखिर में सबने मुझे झिड़किया ही तो दी है गहरी सांस लेकर वृद्धा अपनी लकड़ी पकड़ कर उठने लगी और बोली -तो अब मैं चलूं।

रसिया ने अम्मा को अपने सीने से लगाकर कहा - अम्मा तूने जग पर भरोसा किया है तो एक मेरे ऊपर भी भरोसा करना पड़ेगा पर मैं एक बात तेरे से जरूर कह रही हूँ कि मैं जिंदगी मैं कभी तेरे लिए धोखा नहीं दूंगी तू मेरे ऊपर विश्वास कर। रसिया के इस आग्रह के सामने वृद्धा ने अपने घुटने टेक दिए और सामान रखकर एक चबूतरे पर बैठ

गयी। रसिया ने अम्मा से पूछा - आप क्या खाएंगी जो भी खाना हो रोज का मुझे बताओ। सब कुछ तुझे यही पर मिलेगा मैं जानती हूँ कि अम्मा तू ब्राह्मण है और मैं मुसलमान हूँ। पर अम्मा यकीन करना कि तुम्हारे और हमारे बीच में धर्म आड़े नहीं आएगा। तुम जैसे चाहों वैसे अपने भगवान कि पूजा-अर्चना करों। मैं कभी तुम्हें रोकूंगी नहीं। जो तुझे खाना पीना हो, जैसे भी खाना-पीना हो, वैसे ही खाओ-पिओ तेरे लिए मैं बिल्कुल नए बर्तन लाकर दूंगी। आज शाम को सब बर्तनों की व्यवस्था कर दूंगी। कभी कोई तकलीफ नहीं होगी।

वृद्धा रसिया खान के फार्म हाऊस में बहुत खुशी के साथ अपने दिन गुजारने लगी। अपने धर्म के सभी अनुष्ठान रोज करने लगी। रसिया खान तहेदिल से वृद्धा की सेवा करने लगी। दिन और रात एक-एक करके गुजरने लगे एक साल जैसे ही पूरा हुआ कि रसिया खान के पास अंजुमन सोसायटी का फरमान आ गया। उसमें लिखा था रसिया खान तुम बहुत समझदार महिला हो, पर तुम एक काफिर डोकरी को अपने घर में पनाह दिए हुए हो लगभग एक वर्ष बीत चुका है तुम्हें चाहिए कि उस बूढ़ी अम्मा को इस्लाम कबूल करवा कर उसकी जिंदगी को खुदा के हवाले कर दो ताकि मालिक उसकी कयामत में जिंदगी सुधार सके यदि वह बूढ़ी अम्मा इस्लाम को कबूल करने में आनाकानी करती है तो तुम्हें उसे अपने घर में नहीं रखना चाहिए तुरंत आप उन्हें अपने घर या फार्म हाऊस से उसे बाहर निकाल दें यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो इसका अंजाम तुम्हें भुगतना पड़ेगा।

रसिया ने इन फरमानों और फतबों की परवाह न करते हुए एक ही बात तय की जिसको मैंने शरण दी है और रिश्ता जोड़ा है, उसे न तो मैं ताजिंदगी छोड़ सकती हूँ और न ही उससे इस्लाम कबूल करने की बात कहूंगी, क्योंकि मजहब और धर्म किसी दबाव या लोभ-लालच में नहीं बदला जा सकता है। मजहब तो दिली-यकीन की बात है और आज जिसकी उम्र 76 साल की हो उससे मजहब बदलने की बात कैसे कही जा सकती है, फिरका परस्ती करने वाले मनहूश लोग कभी क्या इंसानियत की कीमत को समझ पायेंगे ? मुझे तो लगता है कि ये सब इंसान नहीं हैवान लोग खुदा के बंदे बनने का दावा करते हैं। जब सारी दुनिया को मालिक ने बनाया है तो दूसरे मजहब के लोगों को भी तो मालिक ने बनाया होगा। रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं परन्तुं पहुँचना तो सबको एक ही जगह है। न मैं इस्लाम को छोड़ सकती हूँ और न ही अम्मा को इस्लाम कबूल करने की बात कह सकती हूँ।

रसिया के एक कारिन्दा ने वृद्धा से मजहब बदलने की बात कह डाली और कहा - अम्मा एक फरमान आया है उसमें लिखा है कि रसिया खान जो तुम्हारे घर पर बूढ़ी अम्मा रह रही है उसे या तो तुम बाहर निकालो या फिर उसे इस्लाम धर्म कबूल कराओ नहीं तो इसका अंजाम तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। अम्मा को यह बात सुनकर पूरी रात नींद नहीं आयी, सुबह उसने अपनी जरूरत का सामान समेटकर पोटरी बांध ली और गेट खोलकर अलसुबह जाने लगी, कि उसी समय रसिया खान रोज की तरह देर से न पहुंचकर आज जल्दी ही पहुंची जैसे ही उसने वृद्धा अम्मा को पोटली बांधे हुए बाहर निकलते देखा। रसिया की आंखे फटी की फटी रह गई उसे समझते देर नहीं लगी कि अम्मा को किसी ने ये बात जरूर बता दी है, जो मैं नहीं बताना चाहती थी, ये स्वाभिमानी अम्मा भला कैसे सहन करती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति आ जाए और वह यहां रहती रहे, लेकिन रसिया खान ने अम्मा का हाथ पकड़ा

और कहा - कहां जाती हो तब अम्मा ने बढ़े धीरे से कहा - मेरे रहते अगर तुम्हारी जान पर आए तो मेरे लिए ऐसी जगह रहना ठीक नहीं है। रसिया खान ने कहा - मैं दुनिया की परवाह नहीं करती हूँ। तुम्हें भी दुनिया की परवाह नहीं करनी चाहिए, आप शीघ्र ही भीतर चले। कभी भी अपना कदम बाहर निकालने की कोशिश न करना मैं कोई गलत नहीं कर रही हूँ। दुनिया में जिंदगी सबको एक बार मिलती तो मौत भी एक ही बार मिलनी है, पर मैं इन मजहबी परस्ती लोगों को मजा चखाना मुझे भी आता है। मैं इनकी परवाह नहीं करती हूँ। आप रोज की तरह अपनी जिंदगी खुशी से जियें, बाकी सब बाते न तो तुम्हें सुनना है और न मैं तुमसे ये पूछना चाहती हूँ कि ये बात तुमसे किसने कही और मैं समझती हूँ जब कहीं धुआं निकलता है, तो आग पहले होती है।

अम्मा बिना किसी जिद किए धीरे से गेट के भीतर हो गई और अपने कमरे मे चली गई नहाया, धोया और घंटी उठाकर अपने ठाकुर जी की पूजा करने लगी। अम्मा के माथे पर वही टीका और बगिया के वही सुंदर-सुंदर फूल अक्षत, चंदन और सभी कुछ वैसा रोज की तरह अम्मा ने भगवान पद्मनाथ की पूजा की। रसिया खान ने ये मालूम किया कि आखिर अम्मा को ये बात किसने बताई। उसे मालूम चला कि अम्मा को ये सब बात बताने वाला रसूल है। रसिया ने रसूल को बुलाया और पूछा कि रसूल ये बात बताओ कि तुमसे ये किसने कहा था कि ये सब बात अम्मा को बताओ ? तब रसूल ने कहा कि मेरे से अम्मा ने खुद पूछा और हमेशा वह मेरे से पूछती रहती थी कि मेरे बारे में कोई चर्चा तो नहीं हो रही है, रसूल को अच्छी तरह से समझाइश देने के बाद एक दिन अम्मा से भी कह दिया कि तुम नाहक ही शंका किया करे और न किसी से पूछा करे कि कौन तुम्हारे बारे में क्या कह रहा है, एक दिन रात के तीन बज रहे थे कि रसिया खान के फार्म हाऊस के बाहर अल्लाह हो अकबर कहते हुए भीड़ आ गई और कहने लगी, कि उस बूढ़ी को बाहर निकालो, रसिया खान ने हर आदमी को माकूल जवाब दिया और सबको लौटा दिया।

परन्तु अम्मा को अचानक क्या हुआ किसी को पता नहीं चला सुबह देखा तो अम्मा का दरवाजा दस बजे तक नहीं खुला। रसिया की फिक्र हु ई उसने अम्मा का दरवाजा खटखटाया जब अम्मा का दरवाजा नहीं खुला तो वह किसी भी अनिष्ट की शंका से घिर गई तब रसिया ने कब्जा उखाड़कर दरवाजे को खोला और भीतर जाकर देखा तो अम्मा पलंग पर पड़ी थी और वह अपने जीवन की आखिरी सांस ले चुकी थी। ये खबर फैलते ही गांव में देर नहीं लगी। दूसरे दिन अखबारों में खबर छपी की चेलम्मा गुजर गई, पर वृद्धा का नाम सुर्खियों में छपा और रसिया खान की तारीफ में कई अखबारों ने अलग से बाक्स कालम बनाया और लिखा सचमुच में आदमी को हमेशा मजहबी नहीं रहना चाहिए। जिस तरह से चेलम्मा की सेवा परस्त रसिया खान ने की उसी तरह से वृद्धों का सम्मान रखते हुए उनकी सेवा करनी चाहिए, रसिया खान ने हिन्दू रीति-रिवाज से चेलम्मा का अंतिम संस्कार किया, वह चेलम्मा की याद में हर वक्त आंसू बहा लेती है।

μμμμμ

बकरी की गवाही

खंडवा जिले की पहाड़ियों के बीच ऊंचे हरे-सुखे सभी वृक्षों के बीच छोटे-छोटे घास के मैदान और उन घास के मैदानों में छोटे-बड़े टापरे खूब जंगलो के भीतर और चार बकरी, तीन मुर्गे और तीन तीतर पालने वाले कुछ परिवार रहते थे। गाँव में कभी टपरों के बीच आपस में एक दूसरे के प्रति पहले बहुत विश्वास था, किन्तु गाँव में जैसे ही बिजली पहुँची और टी.वी. की डिस्क लगने लगी, वैसे ही तलबड़िया गाँव के टापरों में रहने वाले आदिवासी समूह के युवा-युवतियों में पंख लगना शुरु हो गये, जरूरत की वस्तु गुटखा आदि बन चुकी थी।

इस गाँव के बुजुर्ग आपस में बैठकर कहा करते हैं, कि आजकल के छोरा-छोरी अब तो खूब बिगड़ गए हैं,, उनके लिए रोज तो नए-नए गाने की कैसेट चाहिए और टापरे के ऊपर डिब्बा रखकर खूब तेज बजाते हैं। अब तो छोरा-छोरियों की जेबों में मोबाइल रहने लगे हैं। ऐलशा नाम के बुजुर्ग ने कहा मेरा पोता तो बकरी चराने जाता है, उसके गले में घंटी की जगह मोबाइल लटका है, आराम से झाड़ पर सोता है और बकरी का पता लगाना पड़ता है, तो बटन दबाता है, और बकरी के गले की घंटी बजने लगती है और वहीं पहुंच जाता है, और पकड़ लाता है, बकरी का काम। और दूसरे बुजुर्ग मेमशा ने कहा - भईया ये तो सब ठीक है, हमारे तलवड़िया में सब खूब मजे से रहते थे। अब तो ये छोरा-छोरी किसी की सुनते ही नहीं है, अब इतना पैसा लायेंगे कैसे ? रोज तो चार-छः गुटखा चाहिए। जो सितमा है, वह तो भाईया टिकिट पीने लगा है उसे टिकिट न मिले तो पागल सा हो जाता है, ऐसा लगता है जैसे मर जाएगा, जब उसके पास पैसे नहीं होते हैं, तो बस खंडवा चला जाता है और उठाईगिरि करता है, कही का सामान लाकर किसी को बेचता है, पैसे आते हैं तो टिकिट पीता है, रेलसा ने मेमशा की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा- भाई अब इस औलाद का क्या करें, रोज के इतने खर्चे कहाँ से पूरे करेंगे और उतने पर भी कहीं अगर नोतरा और हो जाए तो बस कर्ज उठाओ,

अब न तो अपनी चली आ रही ईमानदारी चल रही है, न एक दूसरे का भरोसा है, जब रेलसा और मेमशा अपनी चर्चा कर ही रहे थे कि इतने में भुजाराम उनके पास आकर बैठ गया। मेमशा ने तंबाकू मलते-मलते रेलसा को दी और फिर भुजाराम की तरफ बड़ा दी। भुजाराम तलवड़िया में शिक्षाकर्मी के रूप में कार्यरत था। भुजाराम की गाँव में अच्छी साख थी और भुजाराम गांव के बिगड़े युवकों को सुधारने का काम करता था। भुजाराम का संपर्क नशामुक्ति के कार्यकर्ताओं से था। भुजाराम उनके पंपलेट लाकर टापरों की दीवारों पर चिपकाता था और गाँव के लोगों के बीच कभी-कभी साधु-संतों को लाकर उनके प्रवचन भी करवाता था, गाँव के युवक भुजाराम को फालतू आदमी कहा करते थे, मंजीराम तो यह तक कहा करता था कि भुजाराम अपने तलवड़िया गांव की इज्जत खराब करवाता है, साधु-संतों को गाँव में लाकर उनसे गांव के आदमियों की बुराई करवाता है। अच्छी सीख के नाम पर सिर्फ कहीं से शराब पीता है, जुआँ खेलता है, टिकिट पीता है, दूसरों की बुराई करवाता रहता है, मंजीराम, जगराज दोनों ने एक दिन भुजाराम को घेरकर मारने की सोची थी। परन्तु भुजाराम की दबंगी के सामने उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाता था। भुजाराम अपनी धुन का पक्का और रोज कुछ न कुछ नए कार्यक्रम लाकर व्यसन मुक्ति के लिए और अच्छे संस्कार निर्माण के लिए कुछ न कुछ करता रहता था।

रेलसा ने मेमशा से कहा - अरे भाई, इसको तम्बाकू क्यों दे रहो हो, ये तम्बाकू थोड़ी खाएगा, ये तो तम्बाकू का विरोध करता है, सबको समझाता है, मास्टर है ना, ये सब बच्चों को भी सिखाता है, बेटा तम्बाकू नहीं खाना। गुटखा नहीं खाना। रेलसा की बात सुनकर भुजाराम ने कहा - काका बिल्कुल सही कह रहे हो, मैं खुद भी नहीं खाऊंगा , दूसरों को भी नहीं खिलाऊँगा , काका तुम देख रहे हो, इस गाँव के लड़कें कितने बिगड़ गए, पहले कहाँ जाते थे, जेल-कचहरियों के चक्कर लगाने के लिये रेलसा ने कहा - हाँ, मास्टर ये बात तो तू बिल्कुल सही कह रहा है, पहले ये सब बिल्कुल नहीं होता था, अरे वो जगराज का क्या हुआ ? उनका बकरा चोरी चला गया था, भुजाराम ने कहा - अरे काका, उसकी तो कहानी दूसरी है।

भुजाराम बता तो वो कहानी है क्या ? अरे काका, वो जगराज पर विनोद ने चोरी का इल्जाम लगाया, और खंडवा जाकर रिपोर्ट लिखा दी, रिपोर्ट में लिखाया कि मेरा बकरा चोरी करके जगराज सिंह ने खंडवा के अकबर मुंशी को बेचा है, पुलिस वालों ने और थानेदार ने विनोद पूनमसिंह को बहुत समझाया, कि भईया पहले इधर उधर बकरा को ढूंढ लो, फिर इसके बाद रिपोर्ट लिखाना, परन्तु विनोद अपने धुन और नशे में था और उसकी कुछ नेतागिरी भी चलती ही है। मैडम से उसने फोन करवा दिया। बेचारे पुलिस वाले रिपोर्ट लिखने के लिए मजबूर हो गए और उन्होंने जगराज और अकबर मुंशी को थाने बुलवाया। जगराज मुंशी ने कहा कि मैंने कोई बकरा नहीं चुराया है, जो बकरा मैंने बेचा है, वह बकरा तो मेरा ही है। थानेदार पर ऊपर से बहुद दबाव था। मैडम और आदिवासी अयोग्य और अनुसूचित जनजाति आयोग का भी दबाव था, बकरा चोरी के मामले में थानेदार संजय शर्मा ने अकबर और जगराज को लॉक-अप में डाल दिया। सुबह अदालत में पेश किया गया। आदिवासी

होने के कारण जगराज और अकबर दोनों को रिमांड पर लिया गया। रिमांड पर लेने के तीन दिन बाद जगराज और अकबर मुंशी की जमानत हो गई। भुजाराम ने अपने बैग में से एक अखबार निकाला और कहा - देखो काका, ये अखबार में भी छपा है। रेलसा और मेमशा ने कहा - भईया मैं तो इतना पढ़ा लिखा नहीं हूँ जो कुछ लिखा है तुम्हीं ही पढ़कर सुना दो, कि अपने गाँव के जगराज और विनोद दोनों खूब अच्छे दोस्त थे, साथ में ही रहते थे, जुआं भी खेलते थे । साथ-साथ और पीते भी साथ-साथ थे। जुगराज तो इतने पैसे वाला है वो बकरे को क्यों चुरायेगा ? भुजाराम ने कहा - काका बस ये ही तो समस्या है, जिसे न तो आप लोग समझना चाहते है, न इस गाँव के नादान लोग समझना चाहते हैं । भई एक दूसरे से पैसा उधार लेते हैं, जुआँ खेलते हैं, साथ-साथ बैठकर पीते-पिलाते हैं और रात भर लड़ते हैं, न खुद सोते हैं न पड़ौसियों को सोने देते हैं। पैसा खत्म हो जाता है, तो बस एक ही बात पर दिमाग लगाते रहते हैं कि पैसा कहाँ से आएगा, विनोद ने जगराज से कहा था कि पाँच हजार रूपए दे दो हम केस वापस ले लेंगे और तुम्हें जेल में नहीं जाने देंगे, पर जगराज ने कहा, क्या पैसा मुफ्त में आता है, पांच हजार किस बात के दे दें, जेल में चले जाए तो चले जाए। छूट भी जाएंगे, जब हमने चोरी नहीं की है तो पाँच हजार किस बात के दें, और जब 5 हजार विनोद तुझे देंगे तो 10 हजार पुलिस वालें को भी देने पड़ेंगे। विनोद ने कहा - मेरी पूरी चलती है थाने में। एक फोन मैडम से करवाऊंगा और पुलिस वाले के बाप को केस वापस लेना पड़ेगा। भुजाराम की बात को सुनकर मेमशा बोला - ऐसा नहीं होता है। एक बार कायमी हो जाए तो फिर तो केस चलता ही चलता है। ये बात अलग कि बयान बदल दे तो बात अलग है।

भुजाराम ने कहा - बस काका साहब हुआ तो यही है, जगराज ने पैसा नहीं दिया क्योंकि वह जानता था जब एफआईआर कट चुकी है तो मामला अदालत में तो जाएगा, विनोद राजनीतिज्ञ नेता आदमी है पैसा लेने के बाद भी बदल गया तो इसका क्या कर लेंगे, जब मैंने बकरे की चोरी की ही नहीं है, तो अब कहीं न कहीं तो भगवान मेरी सांची बात को सुनेगा और मेरी फरियाद सुनकर मुझे इंसाफ जरूर दिलवाएगा। और देखों काका साहब, जगराज की बात कहीं न कहीं सुनी जरुर गई और उसे भी एक नेता गोविंद शर्मा नाम का मिल गया। उसने जगराज के पूरे दुःखड़े को सुना। पीठ के और हाथ पैर के जख्मों को देखा कि बुरी तरह से बेचारा थाने में पिटा था, गोविंद शर्मा नेता होने के साथ-साथ एक अखबार का पत्रकार भी था, उसने जगराज की पूरी-पूरी मदद की। उसने अच्छे वकील दिलीप खण्डेलवाल से जगराज की मुलाकात करवाई और कहा - वकील साहब पैसा इससे नहीं लेना, पूरा पैसा मैं दूँगा।

दिलीप खण्डेलवाल ने जगराज से पूरी बकरा चोरी की कहानी सुनी और अकबर मुंशी से भी अच्छी तरह बात समझी। 25 अप्रैल को पेशी पर जब दिलीप खण्डेलवाल गया तो उसने जज महोदय से कहा कि मिलॉर्ड, ये बात सच हो सकती है कि जगराज ने अकबर को बकरा बेचा। बकरे को पुलिस बरामद कर चुकी है। अब ये बात पता लगाना कि जो बकरा बरामद हुआ है वह किस बकरी का है। इसके लिए कोई न कोई उपाय खोजना

चाहिए। मजिस्ट्रेट गंगाचरण दुबे का माथा घूमा और उन्होंने कहा - वकील साहब तुम्हीं बताओं कि ये बात कैसे पता लगाई जा सकती है कि बकरा किस बकरी का है, तब दिलीप खण्डेलवाल ने जज साहब को अपना सुझाव देते हुए कहा कि दोनों के घर से पुलिस के द्वारा बकरी बुलवायी जाए क्योंकि दोनों ये बात कह रहे हैं कि जिस बकरी का बकरा है, वह बकरी हमारे घर में हैं, जब हम बकरी को बुलवा लेंगे और दोनों बकरियों पर चिन्हें बना देंगे और अलग-अलग दूरी पर बांध देंगें। फिर पुलिस ने जिस बकरों को बरामद किया उसे भी अदालत में बुला लिया जाए और उसकी उपस्थिति में बकरे को छोड़ दिया जाए जिस बकरी केपास बकरा जाकर दूध पीने लगेगा, उसी बकरी का बकरा होगा। मजिस्ट्रेट ने विनोदसिंह के सरकारी वकील से पूछा - क्यों वकील साहब क्या ऐसा करना आपको मंजूर है, सरकारी वकील शैलेन्द्र राव ने कहा - जी सर, ये कुदरती फैसला होगा और इसे सभी को मानने में कोई दिक्कत नहीं हैं, दोनों पार्टियों की सहमति के आधार पर मजिस्ट्रेट गंगाचरण दुबे ने बकरी को सरकारी गवाह बना दिया।

3 मई शुक्रवार 2013 को अदालत खचाखच भर गई थी। गांव के और खंडवा के शहरवासी इस अनोखी घटना का सच्चा रूप देखना चाहते थे। जगराज अपनी बकरी को लेकर गया और विनोद सिंह भी एक बकरी को लेकर अदालत में पेश हुआ। मजिस्ट्रेट अपनी कुर्सी पर जैसे ही बैठे और उन्होंने आर्डर-आर्डर कहते जैसे ही कहा। जगगराज की बकरी को एक खूंटे से बांधा जाए, और विनोद सिंह की बकरी को एक खूटे से बांधा जाए। पुलिस के सिपाहियों को आदेश दिया गया कि बरामद बकरे को यहां लाया जाए । जैसे ही पुलिस वाले बकरे को लेकर मजिस्ट्रेट के सामने पहुंचे कि उसी के साथ ही जगराज की बकरी में-में करने लगी। बरामद बकरे को जैसे ही छोड़ा कि वह बकरा जगराज की बकरी का दूध पीने लगा। मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला सुनाते हुआ कहा - कि जगराज और अकबर मुंशी बइज्जत बरी किए जाते हैं, क्योंकि बकरा जगराज ने नहीं चुराया, बकरी की गवाही ने ये बात सिद्ध कर दी है।

भुजाराम की बात सुनकर रेलसा कहने लगा - बात बिल्कुल सही है। दुनिया में देर हो सकती है पर अंधेर नहीं हो सकती है। सुना, मेमशा अपने गांव में कैसी -कैसी बातें हो रही हैं। हाँ, भाई रेलसा भुजाराम ने जो बात सुनाई है, बात तो खूब गजब कि है, अगर वो जगराज की बकरी अदालत नहीं जाती और उसकी गवाही नहीं होती तो जगराज को तो जेल ही जाना था, भुजाराम ने कहा बिल्कुल सही बात कह रहे हो काका साहब, जगराज को बचाया अगर किसी नेहै तो उसकी बकरी की गवाही ने। भुजाराम, रेलसा व मेमशा अंधेरा ज्यादा हो जाने पर बात खत्म करते हुए अपने-अपने घर चल दिए।

❍❍❍❍❍

हत्यारा समधि

3 मई को जब सूर्य अपनी पूरी तपन से आग उगल रहा था, जेल की ऊँची-ऊँची दीवारें हवा की गरम लपटों से टकरा रही थी और वे भी गर्म हो रही थी। दोपहरी में चहल-पहल बंद थी। अगर कहीं आवाज आ रही थी तो झाड़ों पर बैठी चिड़िया की। कोयल की कहीं से एक मरी सी कूक सुनाई देती थी, जेल के बीचों बीच मैदान में चबूतरा था जिसके तने से पीठ टिकाकर दोनों घुटनों के बीच हाथ और हाथ पर सिर रखकर के शांतिलाल सकलेचा नाम का आदमी बैठा था। कभी वह आसमान को देख लेता तो कभी तोलिया में अपना मुँह छिपाकर बैठ जाता, जेल कर्मचारी उसके पास नहीं जा रहे थे, वे आपस में कह रहे थे हत्यारा है, प्रायश्चित की आग में जल रहा है, गुस्से में आकर आदमी कुछ कर गुजरता है, फिर पछताता है। एक दूसरा पुलिसकर्मी कहता है, नहीं भाई इसने गुस्से में हत्या नहीं की है, गुस्सा और रंजिश में हत्या करने वाला व्यक्ति उतना क्रूर नहीं होता है, जितना क्रूर लालच में आकर हत्या करने वाला होता है । मुकंदसिंह पण्डया जेल का मुख्य आरक्षक था। उसके मन में जिज्ञासा थी पता लगाये इसने आखिरकार ये सब कुकृत्य किस कारण से किया। मुकंदसिहं को हमेशा नए आमद के कैदियों से कुछ हमदर्दी भी रहती थी और

वह मनोविज्ञान में बहुत रूचि रखता था। मनोविज्ञान की किताबें पढ़-पढ़कर के वह भले ही डिग्री प्राप्त मनोवैज्ञानिक तो नहीं था, किन्तु व्यावारिक जीवन में बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक था, मुकंद सिंह के बारे में लोग चर्चा किया करते थे, कि मुकंद सिंह चेहरे को देखकर बता देता है कि कौन व्यक्ति कैसे व्यक्तित्व का है। और वह कैदियों के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से ही व्यवहार करता है, परन्तु नए कैदियों से जब वह बात

करता है तो उसे अकेले में ले जाता पहले तो वह उसकी तकलीफ को पूछता, और वचन देता कि कोई भी तकलीफ हो तो मुझे बताना, मैं भरसक कोशिश तुम्हारी मदद जरूर करूंगा मुकंद सिंह नए कैदी शांतिलाल सकलेचा के पास पहुंचा।

मुकंद सिंह सबसे पहले शांतिलाल का परिचय पूछता है। शातिलाल बताता है कि में राऊ का रहने वाला हूँ। चेहरे से मुकंद सिंह ये बात पहले ही तय कर लेता है कि ये शांत नहीं हैं, शांत बनने का नाटक कर रहा है। बहुत चतुर-चालक आदमी है। इसकी जिंदगी बहुत उलझी हुई है। मुकंद सिंह पाण्डया ने शांतिलाल सकलेचा से पूछा - कैसे आना हुआ जेल में आपका ? शांतिलाल ने कहा - भाई मुझे शांति से बैठने दे, मैं अपने आप में बहुत गमभरा इंसान हूँ। मेरा दुनिया में अब कोई नजर नहीं आ रहा है। पुलिस वाले कब किसको पकड़कर जेल में डाल दें इतना कुछ भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि जब कोई भी घटना होती है, और उस पर जनता का या फिर राजनेताओं का दबाव पड़ता है, तो वह किसी न किसी को मुलजिम बनाकर गिरफ्तार कर लेती है।

मुकंद सिंह ने शांतिलाल की बात से सहमत होते हुए कहा भाई तुम ये बात बिल्कुल सही कह रहे हो। हमारे इस जेल में 75 प्रतिशत अपराधी लोग कैदी बनकर आते हैं , जिनका कोई कसूर नहीं होता है, बेगुनाह लोगों को पुलिस पकड़ लाती है, मुझे लगता है कि शायद तुम भी उन्हीं में से एक होंगे, वैसे भी मैं अपराध से घृणा करता हूँ। अपराधी से नहीं। तुमने अगर वाकई में कोई गुनाह नहीं किया है, फिर भी तुम्हें जेल में डाला गया है तो मैं तुम्हारे इस आपत्ति में मददगार बनना चाहता हूँ पर एक बात तुमसे जरूर कहूंगा कि तुम मुझसे क्या मदद चाहते हों ? वह मुझे बताओं।

शांतिलाल मुकंद सिंह की बातों पर कुछ ऐसा महसूस करने लगा कि जैसे किसी समुद्र में भटके हुए पंछी के लिए जहाज का मस्तूल सहारा बन जाता है, ठीक उसी प्रकार शांतिलाल को मुकंद सिंह का सहारा नजर आया। शांतिलाल ने कहा साहब में सिर्फ एक ही मदद आपसे चाहता हूँ मुझे कैसे भी इस जेल से बाहर निकाल दो, मुझे तीन दिन हो गए न तो मैं यहां का पानी पी रहा हूँ क्योंकि न जाने यहां का पानी कैसे लगता है और न तो भोजन कर पा रहा हूँ।

मुकंद सिंह ने शांतिलाल की बात सुनकर कहा कि देखों भाई जेल से तो अब तुम्हें कोई मजिस्ट्रेट ही बाहर निकाल सकता है, रहा सवाल भोजन और पानी का, तो आज मैं तुम्हें भोजन और पानी शाम तक लाकर देता हूँ। फिर हम दोनों बैठेगें और तुम्हारी पूरी कहानी सुनकर मेरे एक खास वकील है जो पूरी तरह से तुम्हारी मदद करके मजिस्ट्रेट से सेटिंग करा सकते हैं और तुम्हें बचा सकते हैं, अभी तो मैं चलता हूँ और थोड़ा सा घर होकर तुम्हारे भोजन पानी की व्यवस्था करके लाता हूँ।

मुकंद सिंह के चले जाने के बाद शांतिलाल सोचता है वाकई में ये आदमी है कैसा समझना पड़ेगा,

कहींमैं इसको सारी बात बता दूँ और ये मुझे फंसा दे तो दिक्कत हो जाएगी क्योंकि अभी तो हम ये बात कह सकते हैं कि पुलिस वालों ने क्या लिखा क्या नहीं लिखा मुझे पता नहीं। मैंने तो पुलिस की मार की डर से इकबालिया बयान कर सिग्नेचर कर दिए थे,

पर सचमुच में हकीकत छुपेगी कैसे ? गलतियों पर गलतियां करना आखिरकार गलतियों सही परिणाम का कैसे हो पायेगा। जिस समय में कमोडिटी वायदा बाजार में लग रहा था उस समय में सब दोस्तों ने रिश्तेदारों ने रोका था पर किसी की भी बात गले नहीं उतर पाती थी। चस्का ऐसा लगता था कि सोते जगते आँखों के सामने और कानों के अंदर सिर्फ कम्प्यूटर और वायदा बाजार के होने वाले भावों का ही एक मात्र प्रभाव छाया रहता था। अच्छी खासी चलती हुई दुकान पर बैठना बंद कर दिया और बस वापस बाजार के डब्बा पर बैठने लगा, पत्नी ने भी कितना समझाया था। पर उसके लिए मूर्ख कहके, सिर्फ झिड़कियां ही दी थी। सोचता था अब के महीने की क्लोजिंग क्लाज में भाव सही मिल जाएगा और कर्जा पूरा चुक जाएगा। हारे हुए जुआरी की तरह दूने से खेलता रहा, जब 70–80 लाख रुपये कर्ज हो गए और कर्ज लेने के लिए लोग दबिश देने लगे। उनसे बचने के लिए में मुँह छुपाने लगा था। घर से बाहर निकलना प्रायः बंद सा हो गया था। कभी भी घर मैं नहीं रहने वाले इंसान को घर में देख सब आश्चर्य करने लगे थे। सभी पूछने लगे थे शांति भाई साहब ''आप घर में ही कैद क्यों हो रहे हैं ? इतने मिलनसार व्यक्ति को क्या हो गया ? मैं किसको क या जवाब दूँ ? यह समझ में नहीं आता था कि झूठ कितना बोलूँ , सच तो यह भी था कि एक झूठ को छिपाने के लिए हजार झूठ भी तो बोलना पड़ता है।

उपाय कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। चारों ओर खाई ही खाई नजर आ रही थी ऐसा लग रहा था कि एक रेत के टापू पर खड़ा हूँ और चारों तरफ से तेज पानी के थपेड़े टीले को खिसका रहे है। रेत का क्षरण इतनी तेजी से हो रहा कि रेत का टापू कब पानी में डूब जायेगा इसे कहना संभव नहीं था।

एक बार गलत रास्ता पकड़ने वाला कभी सही रास्ता नहीं पकड़ सकता। एक गलत कार्य को सही करने के लिए गलत कार्य करने ही पड़ते हैं जिस प्रकार उल्टे घड़े पर कभी सीधा घड़ा टिक़ता नहीं उसी तरह लाख सोचने के बाद सही काम होता नहीं हैं। सफलता के लिए शार्ट कट मेरे लिये गले की हड्डी बन गया था। सोच रहा था मृग मरीचिका की तरह कि बस सफलता वो तो रही किन्तु जब पास में जाता तो कुछ नहीं बस निराशा ही हाथ लगती थी।

सफलता के लिए एक और शार्टकट के चक्कर में आज यहां तक आ गया हूँ। अपनी बीती सच किसी को शेयर भी नहीं कर सकता क्योंकि आखिर पुलिस ने भी सबूत जुटा कर मुझे जेल भेजा है। मैं कब तक कहता रहूँगा कि मुझे झूठा फँसाया जा रहा है पुलिस अपना गला छुड़ाने के लिए मुझे फँसा रही है। टोल टैक्स नाका के फुटेज मेरे लिए सबसे बड़ी मुसीबत खड़ी कर रहे हैं कहा किससे जाये। हकीकत को कब तक झुठला

सकता हूँ। कैसे मेरे दिमाग में यह योजना आई कि समधि साहब को निशाना बनाया जाये। अगर मुझे गाड़ी में बैठाने से मना कर देते तो, शायद यह पाप नहीं होता।

मैंने भी कितनी चतुराई और हाथ की सफाई से कोल्ड्रिंक में नींद की गोली डाली। वे आगे की सीट पर बैठे रहे और नींद की गोली घोलकर मैंने कितने प्यार से और आग्रह करके ड्रा यवर को भी कोल्डड्रिंक में मिलाया था। एक बार की जगह दो बार गोली डालनी पड़ी। तब कहीं ज़ाकर वह संतोष पाटीदार नींद के आगोश में पहुंचकर लटक गया था। बीच जंगल में गाड़ी ले जाकर कितनी ताकत से गला दबाना पड़ा था।

समधि साहब को तो देर ही नहीं लगी। मुश्किल से 2 मिनट में ही ढेर हो गये। लेकिन पाटीदार का गला तो 5 मिनट तक दबाकर रखना पड़ा, फिर कहीं जाकर वह ढेर हुआ। अब इतना सबकरना तो मुझे सरल काम लगा था।

पाप को कितना ही छुपाने की कोशिश करें परन्तु वह लाख छुपाने के बाद भी जगजाहिर हो जाता है। सबसे कठिन काम तो उन दो लाशों को ठिकाने लगाने का था। झाड़ियों के बीच रात के अंधेरे में फेंकना कितनी मेहनत का काम था। पसीना-पसीना हो गया था। कितनी ही सफाई से काम किया पर कोई सफाई काम नहीं आई। जब गाड़ी में रखा सोना-चाँदी ठिकाने लगाने की जुगाड़ में था कि उसी समय पुलिस के हत्थे चढ़ गया। फिर क्या था ? गाड़ी की तलाशी हुई। सघन पूछताछ में सबसे पहली बात तो यह थी गाड़ी का मालिक कौन ? इसे ठीक से जवाब देना मुश्किल पड़ गया। फिर दूसरा प्रश्न खड़ा हो गया इतना सोना-चाँदी जिसकी बिल कहाँ हैं ? इस बात का उत्तर मैं कहाँ से देता ? बस मैं मौन हो गया। सब कुछ उजागर सा होने वाला था। पुलिस इंटेलीजेंसी ने अपना नेटवर्क इस तरह जोड़ा की दोनों लाशे भी मिल गई। मनावर और राऊ दोनों जगह से सम्पर्क कर लिया गया। प्रकाश काकरोचा मेरे समधी की लाश मिलते ही मेरी बेटी, कुंवर साहब तक आ गये। ये अच्छा रहा पुलिस ने उनसे मुझे नहीं मिलने दिया नहीं तो वो मेरे साथ क्या सलूक करते ? ये कुछ नहीं कहा जा सकता था। पूरी जनता तो यही माँग कर रही थी कि अपराधी हमें सौंपे सजा हम देंगे। रिश्तेदार सब मुझ पापी हत्यारे को ढूँढ रहे थे। पंकज जी तो फिर भी ठीक थे पर पाटीदार समाज तो शायद ही मुझे जिंदा छोड़ता।

जब जेल में शांतिलाल सकलेचा यह सब सोच रहा था तभी मुकुंद पाण्डया आया और अखबार शांतिलाल के सामने रखा जिसमें लिखा था गिरफ्तार हुआ समधी का हत्यारा शांतिलाल हत्या और डकैती का मामला दर्ज हुआ।

❍❍❍❍❍

पीलिया

प्रवीण एक आकर्षक युवक है। अपनी बात सुव्यवस्थित रूप से रखने में उसका नाम, सभी मित्रगणों में चर्चित रहता है। दिल खोल कर मित्रों के बीच में खर्च करना उसकी सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है। प्रवीण जिस कार्य में भी हाथ डालता उसमें वह सफलता अवश्य ही प्राप्त करता था । वह अपनी सफलता का श्रेय अपने नसीब को देता है किन्तु उसके मित्र उसके प्रबंध करने की कुशलता को ही सफलता का आधार मानते हैं । प्रवीण को प्राथमिकता तय करना खूब अच्छी तरह आता है और किससे क्या काम लेना और काम के प्रति लगनशील बने रहना उसकी अपनी खूबी है। प्रवीण का शिक्षण उच्च स्तर का रहा है। इसका कारण उसके पिता का शिक्षक होना था। प्रवीण का परिवार छोटा और व्यवस्थित था। प्रवीण को अपने परिवार के प्रति बहुत समर्पण था। कार्य और व्यवस्था को लेकर प्रवीण का मतभेद सदैव चलता रहता था। प्रवीण अपने व्यवसाय को भगवान की पूजा से कम नहीं मानता था। एक तो अपनी दूकान पर पूरी बैठक देना, ग्राहकों से अच्छा व्यवहार करना, ग्राहकों को अपने विश्वास में लेना और उनके सम्मान का ध्यान रखना। प्रवीण की अपनी विशेषता थी। ग्राहक को अधिक से अधिक लाभ कैसे मिले और उसी लाभ से अपने लिए लाभ कैसे प्राप्त करें इसके लिए वह सदैव विचारशील रहता था। वह प्रायः कहा करता था कि एक ग्राहक के साथ दुर्व्यवहार करने पर दस ग्राहक हमारी दुकान से छूट जाते हैं । वे गलत व्यापारी मानकर दुकान पर नहीं आना चाहते हैं। एक बार एक महिला और उसके पति दोनों प्रवीण की दुकान पर आते हैं। सारा सामान खरीदने के बाद ग्राहक की पत्नी ने एक प्लास्टिक का आईटम चोरी छुपे रूप से अपने बैग में डाल लिया। प्रवीण ने

अपनी आँखों से देख लिया उसने सोचा यदि में इस पर चोरी का इल्जाम लगाऊंगा तो यह आईटम वापस तो मिल जाएगा परन्तु यह ग्राहक हमेशा के लिए दुकान से चला जाएगा। वर्ष में 40–50 हजार रूपये की खरीदी करने वाला आदमी हमारे हाथों से निकल जाएगा। प्रवीण ने कुछ नहीं बोला। ग्राहक के जाने के बाद प्रवीण के छोटे भाई ने कहा - भाई साहब आप तो बहुत होशियार बनते हो, क्या आपको यह मालूम है कि वह ग्राहक की पत्नी ने कौन आईटम चोरी छुपे अपने बैग में डाल लिया और आपने नजर अंदाज कर दिया उससे कुछ भी नहीं कहा इसका राज क्या है ?

प्रवीण ने कहा - पंकज भाई तुम नहीं समझते हो। हर लाभ प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि रखना जरूरी होता है।जितने का आईटम वह ले गई हमने वह सब पैसा एडजस्ट कर लिया और आगे भी वह जब अपनी दुकान पर आएगी तो उस महिला से पूरी सतर्कता रखी जाएगी। परन्तु उसे चोरी का इल्जाम लगा के उसे चोर सिद्ध करके हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते थे और ना कर सकेगे । वह रोती, झूमा-झटकी होती, झगड़ा होता तो हो सकता पुलिस थाने तक बात पहुंचती, लेकिन नतीजे में अपनी ही हानि होती। चोर को समझना चाहिए, चोर सिद्ध करने की बात उसके प्रति होना चाहिए जिससे हमें व्यवहार नहीं रखना हो। पंकज ने कहा - भाई साहब इसका मतलब तो यह हुआ कि हम चोर या चोरी के अपराध को प्रकारन्तर से हम प्रोत्साहन दे रहे है। प्रवीण ने कहा - यह व्यवहार का मामला है और इसमें बहुत सुझबूझ की जरूरत होती है व्यवहार कुशलता वह कहलाती है जहां कभी कठोर बनना पड़ता है और कभी कोमल। कई चीजों को अनदेखा करना पड़ता है और कई चीजों को बारीकी से देखना पड़ता है और इस बात को नहीं समझने वाला व्यक्ति व्यवहार कुशल नहीं होता है। व्यवहार कुशल वही होता है जो सहनशील होता है। हर छोटी छोटी बात में टोका-टाकी नहीं करता है जो टोका-टाकी करता है उसका व्यवहार हमेशा बिगड़ज़ाता है हमें व्यवहार कुशल बनना चाहिये अक्खड़ नहीं पर अपने निर्णय के प्रति पूर्ण दृढ़ होना चाहिए।

बहुत दिनों तक प्रवीण अपने व्यापार में उन्नति के शिखर को छूने का प्रयास करता रहा। इसी क्रम में प्रवीण का खान-पान अनियमित होता रहा। मौसम और पानी के दूष्प्रभाव से प्रवीण का स्वास्थ्य बिल्कुल बिगड़ गया, फिर भी प्रवीण की रूचि व्यवसाय में अधिक होने से और समय का अभाव होने से वह अपने मन से कोई ना कोई दवाई लेता रहा। लेकिन ज्यों-ज्यो उसने दवाई ली, त्यों-त्यों उसका मर्ज बढ़ता गया। एक दिन स्थिति यह बनी की प्रवीण को तेज चक्कर आया साथ में बहुत तेज उल्टी भी हुई। आखिर स्थिति बिगड़ते हुए देखकर उसके परिवार और मित्रों ने मिलकर डॉक्टर राजीव जैन उर्फ बन्टी को दिखाया। डॉ. बन्टी ने सामान्य जाँच करने के बाद यह कह दिया की प्रवीण भाई तुम्हारे पूरे लक्षण पीलिया के दिख रहे है और खून की जाँच करवानी पड़ेगी। मन मार के प्रवीण ने खून की जाँच करवाई। एक दिन बाद रिपोर्ट आई तब उसमें प्रवीण का पीलिया पॉजीटिव निकला प्रवीण अपने घर आया और दवाई भी लेता रहा। लेकिन उसके मित्रों

को बहुत चिन्ता हो गई। उन्होंने बताया प्रवीण भाई अपने शहर से तीन किलोमीटर दूर एक टूका गांव है उस गाँव में हरीराम पंडा रहता है वो बहुत पहुंचा हुआ पंडा है। सिर्फ दो बार झाड़ा देता है पीलिया बिल्कुल ठीक हो जाता है। अपने ही सामने पानी में हाथ डालता है और पूरा पानी पीला हो जाता है। प्रवीण ने अपने मित्र संदीप से कहा देखो - अगर झाड़ा फूंकी से ही रोग ठीक हो जाए तो सब डॉक्टर भूखे मरने लगेगे और मेडिकल स्टोर पर कौन दवाईयां खरीदेगा ? आज का युग वैज्ञानिक युग है। इस टोना टोटका और रहस्यवाद में मेरा विश्वास नहीं है। संदीप ने कहा - तुम्हें कुछ नहीं करना है मेरी सीट पर पीछे बैठना है जैसा मैं कहता हूँ वैसा करना है। अब तुम्हारी नहीं चलेगी अब मेरी चेलगी। संदीप की मोटर साइकिल पर प्रवीण पीछे बैठ गया। मोटर-साईकिल नगर के मुख्य मार्ग से होकर कस्टम चौराहे से मुड़ गई दो तीन किलोमीटर जाने के बाद एक टापरे के सामने खड़ी हो गई थी। प्रवीण देखता है कि टापरे के एक कोने में लाल झंडा लगा हुआ है। गाँव के बाहर अकेला टापरा चारों तरफ हरे भरे खेत और बड़ी धीमी गति से टापरे के दूसरे तरफ से बहता हुआ नाला स्थल की सुंदरता को बड़ा रहा था। शांत वातावरण में कभी-कभी एक कराहने जैसी आवाज आ जाती थी। संदीप ने टापरे में आवाज लगाई - बाबाजी, ओ बाबाजी ! भीतर से एक कराह के साथ आवाज आई - कौन है ? भैया भीतर आ जाओ। संदीप और प्रवीण दोनों भीतर पहुंच जाते हैं। वे देखते हैं एक चबूतरा टापरे के भीतर बना है। उसके ऊपर एक त्रिशूल गढ़ा हुआ है अगरबत्तियों का धुआं असहनीय गंध फैला रहा है। प्रवीण ने संदीप से कहा - यार, मैं थोड़ा बाहर जाऊंगा। संदीप ने कहा -क्यों? प्रवीण ने कहा - ये धुआं मेरे लिए सिरदर्द कर देगा। मैं बाहर खड़ा हूं जब बाबा झाड़ने को तैयार हो जाए। तब मुझे बुला लेना। संदीप से हरीराम बाबा ने कहा - क्यों बेटा कैसे आएं ? संदीप ने कहा - अरे बाबाजी,मेरा एक दोस्त है। उसे पीलिया हो गया है। उसे झड़वाना है तो आप दया करके उसे झाड़ दे। हरीराम बाबा ने कहा - अरे भाई, मुझे आज तो कुछ बुखार सा आ रहा है। कल आ जाओ तो झाड़ दूंगा। संदीप ने कहा - आज तो वह आदमी बड़ी मुश्किल से आया है। कल वह आने वाला नहीं है। आज ही उसको झाड़ना पड़ेगा। हरीराम बोले - ठीक है, बेटा तुम जिद पकड़ रहे हो तो झाड़ ही देता हूँ।संदीप ने प्रवीण को आवाज दी और टापरे के भीतर बुलाया। बाबा ने एक कांसे की थाली में सफेद चूना पानी में घोल दिया और प्रवीण के हाथ को पानी में डूबो दिया और एक लकड़ी लेकर हरीराम ने जमीन पर पटकना शुरु कर दिया अपने हाथों से प्रवीण नाखूनों को मलने लगा देखते ही देखने पानी पीला होने लगा। पूरी प्रक्रिया 15–20 मिनिट बाद समाप्त हो गई। हरीराम ने कह दिया - बस पीलिया ठीक हो गया। बस एक बार और झड़वा जाना।

संदीप और प्रवीण दोनों ग़र आ जाते हैं दो दिन बाद प्रवीण अकेला ही झड़वाने पहुंच जाता है। पहली बार के झड़वाने के 51 रूपये, दूसरी बार के 21 रुपये बाबा को दे आता है। परन्तु एक सप्ताह गुजर जाने के बाद प्रवीण के स्वास्थ्य में कोई खास अन्तर नहीं आता है। प्रवीण फिर बन्टी डॉक्टर के पास जाता है और

चैक-अप करवाता है। बन्टी डॉक्टर कह देता है अभी तो पीलिया है प्रवीण अपनी अक्ल लगाकर लैब टेस्ट भी कराता है। उसमें जब लैब की रिपोर्ट आती है तो पीलिया पॉजीटिव आता है।

रिपोर्ट लेकर प्रवीण को यह सोच बनती है कि संदीप ने बाबा से झाड़ा तो करवा दिया और बाबा ने दवाई बन्द करवा दी और कहा कि पीलिया नहीं है। अब समाप्त हो गया है और 72 रूपये भी ले लिए या तो यह बाबा समझ नहीं पाता है या फिर इसके झाड़े में कोई कमी रह गई है। यदि कोई कमी रह गई है तो इससे फिर से झाड़ा करवाएंगे। यहि सोचकर प्रवीण दूसरे दिन सुबह फिर हरीराम बाबा के टापरे पर दस्तक दे देता है टापरे की साकल खटखटाता है बाबा बाहर निकलते हैं और आओ कहके प्रवीण को भीतर ले जाते हैं। प्रवीण कहता है बाबा अभी मेरा पीलिया ठीक नहीं हुआ है। आप एक बार और झाड़ा देकर ठीक कर दे। मैं बहुत परेशान हो रहा हूँ। बाबा कहता है - बेटा तुम्हारा पीलिया ठीक हो गया है। तुम्हें किसने कहा कि पीलिया ठीक नहीं हुआ है। प्रवीण ने कहा - हमसे एक पढ़े लिखे होशियार डॉक्टर ने कहा है। हरीराम ने कहा - बेटा, ये डॉक्टर लोग कुछ नहीं समझते। तुम्हारे पीलिया ठीक हो गया है। दो बार से ज्यादा झाड़ा नहीं दिया जाता है। अन्यथा देवता नाराज हो जाते हैं। प्रवीण ने अपने जेब में से लैब रिपोर्ट बाबा के सामने रख दी और कहा - देखो आप इसे, इसमें स्पष्ट लिखा है कि अभी पीलिया ठीक नहीं हुआ है। हरीराम ने झिड़की देते हुए कहा - ठीक नहीं हुआ तो मैं क्या करूं ? क्या तुम्हें ही झाड़ता रहूंगा। अपने घर जाओ। प्रवीण ने कहा - ठीक है। मैं अपने घर जाऊंगा। लेकिन आप 72 रूपये वापिस कर दे हमने आपको पैसा पीलिया ठीक करने के लिए दिया था। और आपने पीलिया ठीक नहीं किया। इसलिए पैसे वापिस करें। हरीराम बाबा थोड़े तैश में आया और कहा -क्या मैं पैसे का भूखा हूँ ?क्या मैं पैसे के लिए झाड़ता हूँ ? मैं तो इन पैसों को गरीबों का काम चलाता हूँ। उनकी मदद करता हूँ। मैं अपने पास नहीं रखता हूँ। प्रवीण ने कहा - ठीक है मैं भी इसमें 100 रुपये मिलाऊंगा और अस्पताल में जाकरकिसी गरीब को दे दूंगा पर आपसे पैसे जरूर वापिस लूंगा। जब यह बातचीत चल रही थी इसी दौरान 10–20 व्यक्ति वहां इकट्ठा हो गये। उनमें से एक व्यक्ति बोला - बेटा, दान के पैसे वापिस नहीं लेना चाहिए।। तब प्रवीण ने कहा - यह सच है कि दान के पैसे वापस नहीं लेना चाहिए, पर मैंने पैसा दान नहीं दिया, मैंने तो पीलिया ठीक करने के पैसे दिये, पीलिया ठीक नहीं हुआ तो मेरा पैसा मुझे वापिस चाहिए। आखिरकार जिद के बाद हरीराम ने 72 रूपये वापिस कर दिये और कहा - दिया हुआ पैसा वापिस ले जा रहे हैं इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। सोच लो, अभी भी मौका है। प्रवीण ने कहा - जो होगा उसे भुगतेंगे, परन्तु ऐसा अपना पैसा नहीं देंगे। यदि पीलिया ठीक हो जाता तो 720 रुपये देते जब नहीं हुआ ठीक पीलिया तो काहे को पैसा।

❍❍❍❍❍

गाड़ी छूट गई

हबीबगंज रेलवे स्टेशन पर गर्मी का प्रभाव काफी गहराया हुआ था । लोग पसीना-पसीना हो रहे थे। अनिल बेताब हो रहा था की कब गाड़ी आए और उस पर बैठ कर गर्मी से भी बचा जायेगा एवं समय पर घर पहुँच सकेंगे । रेवांचल एक्सप्रेस आने की सूचना दो बार हो चुकी थी । होने वाले आखिरी सूचना के बाद रेवांचल एक्सप्रेस प्लेटफार्म नं. 3 पर धीरे-धीरे थमती जा रही थी परन्तु अनिल का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। लाख समझाने के बाद पदमा नहीं मानी और वह हबीबगंज मन्दिर चली ही गई। उसे ऑटो से जाने को कहा तो भी वह नहीं मानी। इसलिए तो कहते हैं की औरतों की अक्ल चोटी में होती है। अनिल दो बार स्टेशन के बाहर देख चुका था पर पद्मा कहीं नजर नहीं आई। अनिल ने आखिरी बार फिर रोड़ की तरफ देखा और पद्मा के न आने के कारण उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़कर धीरे से सूटकेस गाड़ी से नीचे उतार लिया।

गर्मी के साथ अनिल की भी गर्मी बढ़ चुकी थी। थर्मामीटर का पारा ऊपर की ओर चढ़ रहा था। साथ ही अनिल के गुस्से का पारा भी ऊपर की ओर ही चढ़ता जा रहा था। गाड़ी ने आखिरी हार्न दे मारा और गार्ड के सिग्नल मिलते ही गाड़ी ने रेंगना शुरु कर दिया। वह रेंगती-रेंगती अपनी गति बढ़ाने लगी और आखिरी डिब्बा जब स्टेशन के करीब आया उसी समय पद्मा अनिल के पास आकर खड़ी हो गई। अनिल ने कहा - अब पछताने से क्या होता है गाड़ी तो चूक गई और मेरी किस्मत फूट गई। पद्मा ने मुस्कुराते हुये कहा - वैसे तो

आपकी किस्मत तभी फूट गई थी जब आपने मेरे साथ सात फेरे लिये थे। अनिल का गुस्सा कुछ थमा तो वह बोला - अब बोलो, हम अब क्या करेंगे। पद्मा ने कहा - हम दोनों प्रतीक्षालय में बैठेंगे, गाड़ी छूटने से किस्मत नहीं फूटती। जब जो जैसा होना होता है, वही होता है। आप चिन्ता न करें हम घर जरूर पहुंचेंगे। आप आशावादी सोच रखें। अनिल ने कहा तेरे आशावादी सोच और होनहार से तो मैं बिल्कुल परेशान हो गया हूँ। क्या पता तेरी होनहार दुनिया मे अंदर भैस पैदा हो गई। अपनी हर कमजोरी छुपाने के लिये होनहार या भाग्य की बात करना मेरी समझ में तो नहीं आता है। यदि किस्मत से ही सबकुछ हो तो फिर हम ऐसा क्यों न करें कि सोते रहे और थाली हमारे पास आ जाये। पर थाली पास आने पर भी तो खायेंगे तो उठकर ही खायेंगे न। पद्मा ने कहा - मुकद्दर से ज्यादा और वक्त से पहले न किसी को कुछ मिला है और न मिलेगा। मेरा तो पक्का विश्वास है कि कर्म के आगे किसी चतुराई नहीं चलती है। किस्मत आदमी को कहाँ ले जाये और कहाँ रोक दे यह कहना बड़ा मुश्किल है। आप तो जैन-धर्म मानते हैं न, और आपका पूरा विश्वास भी है फिर आप क्यों भूल जाते हैं मैना सुन्दरी की कहानी को। मैना सुन्दरी के पिता पहुपाल ने मैना सुन्दरी के भाग्य की ही तो परीक्षा ली थी। और यह भी कहा था 'देखता हूँ तेरा भाग्य।' इस चुनौती को मौन रूप से स्वीकार करते हुये मैना सुन्दरी ने पिता की दी हुई हर सौगात को स्वीकार किया और पहुपाल ने भी अपनी बुद्धि के अनुसार सबसे निम्न कोटि का पति जो कोढ़ी था उसे ही तो दिया था। मैना सुन्दरी ने पिता के द्वारा दिये हुये पति को सहर्ष स्वीकार किया और अपनी किस्मत की कहानी को खुद लिखना शुरु किया।

किस्मत की कहानी में मोड़ आया। सूखी हुई जिंदगी हरिया गई और श्रीपाल की काया कोढ़ रहित होकर स्वर्ण जैसी चमचमाती हुई बन गई। क्या आप इन सब बातों को सच नहीं मानते हैं। अनिल ने कहा - मैं सच तो मानता हूँ। पर एक सीमा तक। अगर किस्मत की बात ही पूरी तरह मान ली जाये तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर किस्मत में लिखी होगी तो ही गाड़ी मिलेगी न, यदि तुम कहती हो हाँ तो, स्टेशन आने की क्या जरूरत थी। स्टेशन आये बिना गाड़ी नहीं मिलती। यदि स्टेशन आने पर ही गाड़ी मिलती है तो किस्मत की बात पूर्णतः नहीं कही जा सकती है। इसलिये की जैन-धर्म की एक ही बात को पूर्णतः सच नहीं मानता है। वह उसके दूसरे पक्ष को भी सामने रखकर विचार करता है। सभी को किसी अपेक्षा से उचित और किसी उपेक्षा से अनुचित भी मानता है। जब अनिल और पद्मा आपस में बैंच पर बैठे दोनों चर्चाएं कर रहे थे तभी एक सरदार जी आकर बोले - आप लोग बहुत देर से दोनो फिलॉस्पी से पीएचडी कर रहे हैं। अनिल ने मुस्कुरा ते हुए कहा - नहीं सरदार जी हम लोग पीएचडी नहीं कर रहे हम तो गाड़ी चूकने के बाद उलझ-सुलझ रहे हैं। अब थोड़ी बहुत चर्चा तो होती रहती है। खैर कोई बात नहीं अनिल ने पद्मा से कहा - हम लोग इन सब बातों को भूल

जायें। चलों जो हुआ उसे छोड़ें। अनिल दूसरी गाड़ी की तलाश में सम्पर्क करने लगे। जानकारियां लेने पर पता लगा की तत्काल रिजर्वेशन दूसरी गाड़ी में मिल सकता है। अवध एक्सप्रेस में तत्काल रिजर्वेशन लेकर अनिल ने पद्मा को बताया। श्रीमतीजी आपकी मेहरबानी से 600 रुपये की चपत और लग गई है। बड़ी लापरवाही से पदमा ने कहा - तो क्या हुआ इतना तो चलता है। अनिल ने बड़े रौबदार शब्दों में कहा - तुम्हारे पिताजी तो ये 600 रुपये देंगे नहीं, भुगतना तो हमें ही पड़ेंगे। पद्मा ने कहा - सब कुछ तो पिताजी ने दे दिया यहाँ तक की मुझे भी दे दिया और क्या चाहते हो ? अनिल ने पूछा - अच्छा बताओ अभी तक तुम्हारे पिताजी ने शादी में कितना खर्च किया है। इसी पर पदमा ने पलट जवाब देते हुये कहा कि - अच्छा बताओ आपके पिताजी ने शादी में कितना खर्च किया। अनिल ने कहा - मैं ये तो नहीं कह सकता पर इतना तो जरूर कह सकता हूँ की तुम्हारे साथ शादी का कर्ज मैं अभी तक चुका रहा हूँ।

जब अनिल और पदमा दोनों की ये चर्चा हो रही थी तो उसी समय वही सरदारजी आये और बोले-अभी तक तो आप लोग बड़ी दार्शनिक चर्चाऐं कर रहे थे और अब आप लोग आपस में उलझने लगे। अरे भाई, जब शादी कर ही ली है तो अब उलझने से क्या मतलब है ? और अब अपनी जिन्दगी की गाड़ी को बड़े प्रेम से खींचों। इस पर अनिल ने बड़े मजाक में बोले - अरे सरदारजी, आप भी गजब करते हो, अगर गाड़ी का एक पहिया साइकल और दूसरा पहिया ट्रैक्टर का हो तो आप ही बताओं वो गाड़ी कैसे चलेगी।

जब यह मनोविनोद का दौर चल रहा था की तभी एक खबर स्टेशन पर फैलने लगी की रेवांचल एक्सप्रेस जो अभी-अभी गई थी उसका हादसा हो गया और बहुत लोग हताहत हुये। तभी अनिल ने बड़े जोश से कहा - चलो, अच्छा हुआ गाड़ी छूट गई। यदि हम उस गाड़ी में बैठे होते तो न जाने क्या होता ? पद्मा ने एक बार फिर कहा - देखो न मेरी बात सच निकली जो कुछ होता है, सब अच्छे के लिये होता है। अनिल ने भी कहा - सचमुच में तेरी बात बिल्कुल सही निकली। मैं आज मान गया अगर गाड़ी नहीं चूकती तो हम जिन्दगी से चूक जाते। सचमुच में कई बातें ऐसी होती हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता होती है उनमें एक बात यही भी है कि किस्मत से आगे जिन्होंने भी अपनी अक्ल लगाई है वे बेअक्ल ही साबित हुये हैं ।

इनकी बातचीत के साथ ही अवध एक्सप्रेस की घंटी हो गई और उद्घोषिका ने कहा - प्लेटफार्म नं. 3 पर अवध एक्सप्रेस आने वाली है। यात्री सावधान रहे। अवध एक्सप्रेस के आते ही अनिल और पदमा ट्रेन पर सवार हो गये। गाड़ी बढ़ने वाली ही थी कि अनिल बोला - पद्मा सचमुच में तेरी बात में दम है। आज हम लोग बच गये, इस बात को मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।

❍❍❍❍❍

दो चौपाई

बारना नदी के किनारे रेत की कगार के ऊपर बारन डैम से लगे हुये एक टीले पर घास-फूस की एक झोंपड़ी बनी थी। झोंपड़ी के आस-पास चारों तरफ झण्डे और झण्डियां फहरा रहे थे। वहाँ एक अज्ञात पहुँये हुये संत ने अपना डेरा डाला था। गाँव के लोग संत के पास अपनी-अपनी समस्या लेकर जा रहे थे। संत को लोग दिव्य शक्ति का अवतार कह रहे थे। चौड़ा भाल सफेद दाड़ी और वस्त्रों के नाम पर एक छोटी सी लंगोटी बस कुछ नहीं भक्तों को देते थे दुआ, साथ ही वे अपने भक्तों को समझाते थे की व्यसनों से मुक्त हों तो तुम्हारी जिंदगी बहुत अच्छी बन जायेगी। हर व्यक्ति उनसे एक नियम लेकर जाता था।संत का हाथ जिसके सिर पर रख जाता था वह सारी अलाय-बलाय आदि विपदाओं से मुक्ति पा लेता था। संत की कुटिया में सारी चीजें बहुत व्यवस्थित थी। महिलाओं को एकान्त में मिलने की कोई व्यवस्था नहीं थी। महिलाएं भी एक निश्चित दूरी पर बैठकर संत को अपनी समस्या बताती थी। संत जी कहा करते थे कि में डोरा-डंडा नहीं करता, न कोई ताबीज देता हूँ, न ही कोई झाड़ा फूंकी करता हूँ। मैं तो सिर्फ परमात्मा का भक्त हूँ। अन्तर्मन से सभी के भले की बात सोचता हूँ। सब सुखी हों सब निरोग हों सभी का कल्याण हो और सब मानवता को प्रति समर्पित हों।

जब कोई संतजी के पास जाकर अपने लिये झाड़ने-फूंकने की बात करता तो संत कहते झाड़ने-फूंकने की

कोई जरूरत नहीं होती है। ये सारे लोग आपको मूर्ख बनाते हैं। मंत्र झाड़ने-फूंकने के लिये नहीं अपितु मंत्र तो जाप करके अपने मन को पवित्र करने के लिये होते हैं । जब तक हम पवित्र मन से किसी के प्रति सद्‌भावना उत्पन्न करते हैं तो उसका भला स्वतः ही हो जाया करता है। सब लोग संत की बात ध्यान से सुनकर अपनी एक-एक बुराई छोड़कर कोई न कोई प्रतिज्ञा अवश्य लेते थे। कोई शराब छोड़ता था तो कोई माँस खाना कोई बीड़ी-सिगरेट तो कोई सट्टा भी छोड़ देता था। कोई पक्षियों को दाने डालने और गर्मियों में पानी रखने का नियम लेता तो कोई रोज पशुओं को चारा डालने का, पहली रोटी गाय के लिये दान करने का नियम लेता था। सबसे बड़ी विशेषता यह थी की संत किसी को नियम नहीं देते थे। साधक व्यक्ति खुद ही नियम लेते थे।

गाँव के सभी लोग संत से अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार नियम ले चुके थे। गाँव वालों ने यह भी पता किया कि ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिसने न तो संत के दर्शन किये हो, न संत की सेवा की हो। गाँव के सरपंच कमलसिंह किरार ने एक आदमी का नाम ऐसा प्राप्त किया जो अभी तक संत के पास नहीं गया था वह था रामसिंह पाल। कमलसिंह खुद रामसिंह से मिलने का प्रयास कर रहा था। एक दिन जब कमल सिंह खुद नहाकर घाट पर चढ़ रहे थे कि उसी समय भेड़े चराते हुये रामसिंह पर सरपंच कमल सिंह की दृष्टि पड़ी। कमल सिंह ने जोर से आवाज लगाई - अरे ओ, रामसिंह भईया- क्या कर रहा है ?''

कुछ नहीं सरपंच साहब भेड़े चरा रहा हूँ।

''क़्यों रामसिंह तुम्हें ये मालूम है कि नहीं, अपने यहाँ एक संत जी आये हैं।''

''हाँ, सरपंच साहब सारे लोगों को वहाँ आते-जाते देखता हूँ मैं भी सोचता हूँ क्या हो रहा है ? पर मैं समझ नहीं पाया सरपंच साहब। मैंने सोचा अपने लिये इन बातों से क्या लेना-देना। अपने को तो भेड़े चराने से मतलब है। क्योंकि कोई खाने को तो देगा नहीं अपने को। अपने को फुरसत भी कहाँ है ? आप तो सब जानते हैं और अपनी धरम-वरम में ज्यादा लगन नहीं है। जो भी हो, ऊपर वाले की मर्जी है।

राम सिंह धरम के बिना तो काम चलता नहीं है। संत जी कहते हैं कि हम कल्पवृक्ष के पास चले भी जायें और उससे जब तक कुछ नहीं माँगे तब तक हमें कुछ नहीं मिलेगा और चिन्तामणी रत्न भी हमें मिल जाये परन्तु उसके सामने भी हमें चिन्तन करना पड़ेगा। तभी हमें कुछ मिलेगा लेकिन धरम ही ऐसा है जिसके सामने बिना माँगे और बिना चिन्तन किये सब कुछ मिलता है। धरम से व्यक्ति बहुत बड़ा बन जाता है। रामसिंह और संतों क़ी दुआ से हर चीज मिल जाती है। जाओ, किसी दिन संत की दुआ ले लो।

हाँ, सरपंच साहब आप कह रहे हो तो, कल-वल आ जायेंगे। जरूर आ जायेंगे, जरूर आ जायेंगे आप चिन्ता मत करो।

सरपंच कमल सिंह रामसिंह को समझाकर आगे बढ़ गये। रामसिंह ने भी सोच लिया की संत के पास जाकर अपने को कुछ तो मिलेगा। वह सोचने लगा नहीं हुआ तो आज शाम को ही चला जाये। रामसिंह को ऐसी लगन लगी की रामसिंह संतजी के पास आखिरकार पहुंच ही गये। संतजी के पास जाकर उसने प्रणाम किया। संतजी ने पूछा - 'क्या नाम है भाई ?'

रामसिंह - हजूर , रामसिंह।

संत - क्या करते हो ?

रामसिंह - हजूर, कुछ नहीं भेड़े चराता हूँ। आप दुआ दे दो। तो हम भी मस्त हो जायें और भेड़े भी मस्त हो जायें। अभी साहब सौ-दो सौ भेड़े हैं आपकी दुआ से चार-पाँच सौ हो जायें, ऐसी दुआ दे दो।

संत ने कहा - तुम एक नियम ले लो।

रामसिंह बोला - गुरुजी आप ही बता दो, हम क्या नियम लें।

संत ने कहा - 'कहाँ तक पढ़े हो ? पुस्तक वगैरह पढ़ लेते हो या नहीं ?'

रामसिंह - हजूर, रामायण पढ़ लेते हैं इससे ज्यादा कुछ नहीं पर रोज नहीं पढ़ पाते हैं।

संत - कोई बात नहीं, 'सुंदर काण्ड' रोज पढ़ने का नियम ले लो।

रामसिंह ने बड़ी विनय से हाथ जोड़कर कहा - संतजी, मैं अकेला आदमी हूँ, बच्चे पास में रहते नहीं हैं। मेरे पास इतना समय कहाँ है कि मैं पूरा सुंदर काण्ड पढ़ सकूँ।

संत ने कहा - 'ठीक है, पूरा सुन्दर-काण्ड तुम यदि नहीं पढ़ सकते हो तो दो-चौपाई जरूर रोज पढ़ो, और यदि यह नियम लिया है तो तोड़ना नहीं।'

रामसिंह ने पक्की कसम खा के दो-चौपाई पढ़ने का नियम ले लिया। घर आने के बाद रामसिंह ने रोज दो-चौपाई पढ़ना शुरु किया। ठीक आठ दिन के बाद ना जाने ऐसी कौन सी बीमारी फैली की रामसिंह दो-चौपाई पढ़े की आठ-दस भेड़े रोज मर जाया करतीथी। भेड़े मरने का क्रम लगातार आठ-दस दिन से चल रहा था। रामसिंह के मन में यह बात बैठ गई की चौपाई पढ़ने से ही भेड़े मर रही है। फिर भी रामसिंह ने दो-चौपाई पढ़ना बन्द नहीं किया।

एक दिन रामसिंह नहा-धोकर पूजा-पाठ करके दो-चौपाई पढ़ने को बैठा की उसी समय एक मेमना आकर उचलकूद करने लगा। मेमने की उछलकूद से बार-बार रामायण बन्द होने लगी और रामसिंह भी बार-बार रामायण बन्द होने से भीतर ही भीतर चिढ़ने लगा। रामसिंह को यह तो विश्वास था की सारी भेड़े चौपाई पढ़ने से ही मर रही है। जब मेमने की उछलकूद से एक बार फिर रामायण बन्द हुई तो रामसिंह बोला - 'ऐ रे, मेमने तू उछलकूद बन्द कर रहा है। या नहीं। आधी चौपाई में तो तेरा काम तमाम हो जायेगा।' रामसिंह के गुस्से का मेमने पर कोई असर नहीं पड़ा वह तो उछलकूद करता ही रहा और बार-बार पैर से टकराकर रामायण को बन्द कर देता था। उसी समय सरपंच कमल सिंह आ गया। कमल सिंह बोला - 'क्यों रामसिंह आधी चौपाई में किसका काम तमाम कर रहा है।'

अरे, किसी का नहीं सरपंच साहब ये मेमना बार-बार उचक रहा है। दो चौपाई में तो अच्छे-अच्छे मेमने ढेर हो जाते हैं आधी चौपाई में तो ये कैसे बचेगा ?

कमल सिंह ने कहा - 'चौपाई से तो कोई मरता नहीं हैं ? ये किसने तुझे बता दिया ?'

अरे साहब कोई बताये या न बताये सरपंच साहब मेरे आँखों के देखते-देखते दो-चौपाई पढ़ने में दस-दस भेड़े तक मर गई।

सरपंच कमल सिंह ने कहा - 'आज मरी क्या ?'

रामसिंह -'हाँ, साहब कल की वे पड़ी है।'

सरपंच कमल सिंह ने तुरंत फोन लगाया और डॉक्टर को बुलवाया। डॉक्टर विनोद जैन ने भेड़ों क़ी जाँच करके कहा - 'ये सब फेफड़े की बीमारी के कारण मरी है। इन सबकी मौत दम घुटने से हुई है।'

तब कमल सिंह ने कहा - 'सुन ले रामसिंह, भेड़े बीमारी से मरी है।' तभी रामसिंह ने कहा - 'सचमुच मेंसरपंच साहब आपने मेरी आँखें खोल दी और सच को दिखा दिया। मैं तो यही समझ रहा था की दो-चौपाई पढ़ने से ही मेरी ये भेड़े मर रही हैं। बस मेरा अंध-विश्वास आज खत्म हो गया।'

❍❍❍❍❍

कहाँ खो गई ममता

भिण्ड का जिला और जेल में महिला बैरक मे ममता अकेली ही बैठी थी। वह भिण्ड जिले की एक ग्रामीण महिला जरूर थी परन्तु दिखने में हमेशा स्मार्ट ही रही है । आधुनिक फैशन से प्रतिस्पर्धा करने मे कभी पीछे नहीं रही फिर भी अपने को सभ्य और मासूम दिखाने की उसमें बहुत बड़ी कला थी। ममता की शिक्षा मिडिल से ज्यादा नहीं थी फिर भी उसकी चाल, ढाल, आँखों पर रंगीन चश्मा देखकर सहज ही लोग यह समझते थे की वो कम से कम स्नातक तो होगी ही होगी। जेल मे प्रवेश करते ही बैरक की अन्य कैदी महिलायें उसे देख कर यह अनुमान कर रही थी कि यह कोई स्कूली मैडम होगी जिसने बच्चों को मारा होगा और धोखे से किसी बच्चे के मर्म स्थान पर लग गया होगा और वह मर गया होगा। इसलिये इसे हत्या के जुर्म में जेल के भीतर आना पड़ा। महिलायें कहाँ इतनी क्रूर होती हैं जो किसी को मारे। एक महिला कैदी तो यह कह रही थी कि महिलायें तो हमेशा पिटती आई हैं पीटने कब से लगी। अगर इस बाई ने किसी को मारा है तो मैं इस पर नाज करूंगी। क्योकि महिलाओं को तो कोई तंदूर में झोंक देता है तो कोई उनके टुकड़े-टुकड़े करके फ्रिज में रख देता है तो कोई महिलाओं को कूड़ा कर्कट समझ कर उनकी हत्या करके सड़क किनारे फेंक देता है तो कोई महिलाओं को तेल डालकर ऐसे जला देता है जैसे भूसे की गाज को जला दिया जाता है।

दूसरी महिला कैदी पहली महिला कैदी की बात से सहमति जताती हुई कहने लगती है। बाई तुम, बिल्कुल सच कहती हो आजकल औरतों में कहाँ इतना दम है कि वो किसी पर हाथ उठायें। सच बात तो यह है कि महिला से कभी इत्फाकन कोई मर जाता है पर वह मारती तो किसी को भी नहीं है। पर इस बाई के साथ क्या हुआ अपन इससे पूछेंगे। पहली महिला कैदी बोली - अभी अभी तो आई है और वैसे ही वो थोड़ा तनाव में होगी। उसे थोड़ा बैठ लेने दो। यहाँ का माहौल देख लेने दो, शाम वाम को फुरसत में उससे थोड़ा पूछेंगे।

हाँ सही कह रही हो, बाई अभी तो वह आई है। अदालत के चक्कर लगाये होंगे। पुलिस ने रिमाण्ड खींचा होगा कई जगह झूठे सच्चे दस्तखत कराये होंगे। उसे थोड़ा बैठ लेने दो फिर थोड़ी शांति से बात करेंगे।

ममता ने अपनी नजर जेल के चारों तरफ घुमाई अजनबी-अजनबी सी महिलायें उसे नजर आई। ममता भी सोचने लगी क्या पता कौन अभागी महिला ने क्या किया होगा जो जेल के भीतर आई है।

वार्डन प्रहरी रेखा ने आकर अपना रौब जमाते हुये कहा - यहाँ बैठी-बैठी क्या कर रही है चल उठा वो डब्बा और थाली, वहाँ चली जा और खाना खा ले। खा-पी ले और थोड़ा सा सो-सा ले।

ममता ने गहरी सास लेकर कहा - मैडम मुझे बिल्कुल भूख नहीं लगी है। मैं अभी खाना नही चाहती।

नहीं खाएगी, यह तो तेरा कोई घर नहीं है। पूरा खाना खत्म हो जायेगा तो फिर क्या तेरे बाप यहा आयेंगे तुझे खिलाने के लिये। यहाँ कोई मनाने वाला नहीं है। तू अगर कह भी दे मैं नहीं खाऊँगी तो दूसरे बैठे है यहाँ खाने को। अभी तो मैं कह भी रही हूँ, कल से तुझे कोई कहने वाला भी नही मिलेगा। इस जेल में सब स्वार्थी रहते हैं। यहाँ सब भुखमरे हैं भोजन देखते ही टूट पड़ते हैं। भोजन के पीछे खून के प्यासे बन जाते हैं ।

मैं क्या करूँ, यह तय नहीं कर पा रही हूँ।

मैं जो कुछ कह रही हूँ वही करो इसी में तुम्हारी भलाई है।

रेखा मैडम के कहने पर ममता भोजन लेने चली जाती है और खाने भी बैठ जाती है। परन्तु वह विचार करती है कि मैंने अपने पति को छोड़कर प्रेमसिंह से नाता जोड़ा ही क्यों था और मेरे बेटे को जब मैं छोड़कर आई थी तभी मन भीतर से कह रहा था कि ममता तू जो कुछ करने जा रही है देख थोड़ी देर रुक जा अच्छे-बुरा कुछ सोच ले। ऐसा न हो कि फिर अपने किये पर पछताना पड़े। पर क्या करूँ उस प्रेमसिंह ने कुछ जाल ही ऐसा फेंका था कि मैं मछली जैसी कुछ खुद उसके जाल में सरकती गई न आगे देखा न पीछे सोचा। बस जो जी में आया अंधा बन कर करती गई। अब बस, जेल की सलाखों के बीच बैठकर सोच रही हूँ। अब सोचने से क्या होने वाला है ? ममता अपनी स्मृति रेखाओं से बने हुए अतीत के चित्र को आँखों में देखने लगी पूरी डूब गई। उसे यह भी सुध-बुध नहीं रही कि मैं कहाँ हूँ और किस रूप में हूँ।

अरे वो दोपहर कितनी मनहूस थी जब बस में मेरा बेटा सुनील एक ही बात बार-बार पूछ रहा था कि मम्मी घर कब चलोगी ? तब मैंने उससे कितनी निष्ठुरता के साथ कह दिया था, तू अगर अपना भला चाहता है तो तू गाड़ी से जल्दी उतर जा। बस, और यह समझ ले अब मैं तेरे बाप की और तेरी कुछ भी नहीं हूँ।

सुनील का वह मासूमियत भरा सवाल था कि मम्मी आपका झगड़ा या अनबन तो पापा से है मेरे से तो नहीं। तुम मुझे किसके हवाले करके जा रही हो। मैं तुम्हारे कलेजे का टुकड़ा हूँ।

जब मैंने सुनील से कहा कि - 'जा तू अपने पापा से पूछ कर आ क्या वो मुझे पहले जैसा रख पायेगा।' तब सुनील ने कितने भोलेपन से कहा - 'तू मेरी माँ कैसी भी हो ? मैं तुम्हें एक ही वचन देता हूँ कि आखिरी साँस तक तेरी परवाह करूंगा । तू मेरा चेहरा तो देख, मुझे रोते बिलखते देखकर क्यों और कहाँ जा रही है ?'

प्रेमसिंह के पाप के साथ मैं भी हो गई और बस से उतर गई। सुनील भी मेरे साथ उतर गया था। पैदल-पैदल हम प्रेमसिंह के खेत के झोपड़े तक गये।

सुनील थका-माँदा खेत की दूसरी ओर लगे आम के झाड़ के नीचे सो गया था। उसे मेरी बात पर पूरा भरोसा हो गया था कि सुबह मैं उसके साथ चलूँगी। निर्विकार सोते हुए सुनील के चेहरे को देखने के बाद भी शायद मेरी ममता मर गई थी या कहीं खो गई थी कि मैंने तोलिया से सुनील के गले में फंदा डालकर तुरंत एक झटके से खींच दिया उसके मुँह से एक ही पुकार या चीख निकली थी। वह थी 'ओ माँ !' परन्तु मैं बहरी-अंधी-पगली को कुछ नहीं सूझ रहा था।

जब पापी प्रेमसिंह ने आकर मुझे उल्टा ही डाँटा और कहा - 'पापिन खा गयी नागिन बन कर तू अपने फूल जैसे बच्चे को चल अब क्या देख रही है खड़ी-खड़ी ? इसकी लाश को ठिकाने लगा देने दे।'

प्रेमसिंह एक बोरे में सुनील की लाश को भरा और अपनी पीठ पर रखकर उसे नाले के किनारे खूब दूर गाँव के बाहर फेंक दी।

जब लौटकर आया तो मेरे साथ रोज जैसा व्यवहार करने लगा उसे ऐसा नहीं लगा कि जैसे कि बड़ा पाप हो गया और मुझे भी अफसोस नहीं हुआ। रोज सी जिंदगी चलने लगी।

कुत्तों ने कब बोरो को फाड़ दिया और कब गाँव के चरवाहों ने सुनील की लाश को देख लिया और किसने पुलिस को सूचना दी ? यह सब बात मुझे कतई मालूम नहीं चली। पुलिस आई और सुनील की लाश को ले गई और उसकी चीर फाड़ के पहले ही उसकी पहचान हो गई की यह लाश सुनील की है। उसकी पहचान तो उसके पिता ने ही तो की थी क्योंकि उसने सुनील के गुमने की रिपोर्ट दो दिन पहले थाने में की थी।

शाम को जब खेत पर आम की कच्ची कैरी बीन कर मैं टोकनी में रख रही थी गाय का बछड़ा अपनी माँ के आने पर कूदने लगा और गाय भी अपनी जीभ से चांट कर प्यार जता रही थी उसे देखकर मुझे अपने किये पर पछतावा होने लगा कि मैं पशु से भी गयी बीती हूँ कि मैंने अपने झूठे प्रेम के लिए अपनी कोख के लाल को मौत के घाट उतार दिया।

वहीं प्रेमसिंह मुझे पापिन नागिन कह रहा था जिसने मुझे सुनील को रास्ते से हटाने के लिए उकसाया था वह ऐसा साफ निकलना चाहता था जैसे वह दूध का धुला हो खैर कोई बात नहीं। सब खता मेरी ही तो है जो मैंने छोटी सी खुशी के लिए सब कुछ किया। एक हवस ने मुझे ऐसा बेहोश कर दिया कि मैं पागल हो गई। जब मैं गाय-बछड़े का लाड़ दुलार देख रही थी तभी एक आवाज - 'तू कौन ममता ?' मैंने पलट कर देखा तो खेत की बागड़ के पास पुलिस खड़ी थी मैं वहाँ कुछ भी बिना बोले सीधी अपनी झोपड़ी आ गई। दरवाजा बंद कर लिया थोड़ी देर में दो महिला पुलिस वाली और मुझसे पूछने लगी -'क्या सुनील तुम्हारा ही बेटा था ?' बस, क्या था मेरे पास रोने के सिवाय और कुछ नहीं बचा था। बस रोती ही रही।

तभी एक महिला पुलिस ने मेरे चेहरे को ऊपर उठाते हुए कहा - 'अब बस रहने दे नाटक बहुत हो गया सीधी खड़ी हो जा और गाड़ी में बैठ जा नहीं तो हम दो ही काफी है तीसरे की जरूरत नहीं पड़ेगी।' पर मैं तो वहीं बैठी रही उन्होंने मुझे कब उठा गाड़ी में बिठा दिया मुझे थोड़ा भी पता नहीं चला।

बड़े-बड़े साहब कुर्सी लगा कर बैठे और बीच में मुझे खड़ा कर लिया और मुझसे पूछना शुरु कर दिया। झूठी बात एक भी मुँह से नहीं निकली, बस जो कुछ हुआ वह कुछ ही समय में पूरी मुँह से उगल दी क्योंकि मैं क्या करूं, झूठ मैं बोल ही नहीं पाती हूँ।

बस पुलिस के साहबों ने मुझे 1 घंटे बाद लॉकअप में डाल दिया और दूसरे दिन अदालत में जज के सामने खड़ा कर दिया तो मैं सोचती रही कि अब सजा भोगने के लिए मैं अकेली ही बची। मैं मात्र पापिन और वो प्रेमसिंह भला आदमी बन गया। देखो तो दुनिया कैसी अजीब है ? मेरी सारी दुनिया उजड़ गयी और मरने-जीने, धक्का खाने और अब जेल की हवा खाने में अकेली कोई भी मेरा साथी नहीं। अब मुझे जेल से बाहर निकालने वाला कौन है ? खैर, कोई बात नहीं, मुझे मेरे किये की सजा जरूर मिलना चाहिए। कम-से-कम मेरा उदाहरण लेकर कोई भी ऐसा गलत काम तो नहीं करेगा।

एक हाथ में रोटी लिए बहुत देर तक गुमसुम बैठी देख रेखा प्रहरी ने आवाज दी - 'ममता कहाँ खो गई ? भोजन कर ले। सब बातें रात में याद करना और सोते सोते खूब पछताना।'

❍❍❍❍❍